औरंगज़ेब कालीन मराठा अमीर-वर्ग की भूमिका

(1658-1707 ई०)

शोध-प्रबन्ध

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि के लिए प्रस्तुत)

प्रस्तुतकर्त्ता

श्रीराम तिवारी

निर्देशक

श्री योगेश्वर तिवारी

(वरिष्ठ प्रवक्ता)

मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

१९९२-९३

स्वर्गीया माँ श्रीमती जानकी देवी की स्मृति में

पूज्य पिता श्रीयुत् भीमसेन तिवारी को

सादर समर्पित

प्राक्कथन

मुग़ल अमीर-वर्ग के अनेक जातीय-तत्वों पर पिछले कई दशकों में महत्वपूर्ण शोधकार्य हुए हैं। मुगल अमीर-वर्ग स्वय ही महत्वपूर्ण शोध का विषय रहा। डॉ० पी० के० अग्राल, ने 'बाबर व हुमायूँ के अन्तर्गत मुगल अमीर-वर्ग, श्रीमती चन्द्रप्रभा ने 'अकबर के अन्तर्गत मुगल अमीर-वर्ग तथा डॉ० एम० अतहर अली ने औरगज़ेब कालीन मुगल अमीर-वर्ग पर शोधकार्य किया। इसी प्रकार से मुगल अमीर-वर्ग में 'ईरानी अमीरों के राजनीतिक एव सास्कृतिक योगदान' पर श्रीमती इदु श्रीवास्तव ने शोधकार्य किया। डॉ० ओंकारनाथ उपाध्याय ने 'अकबर तथा जहाँगीर के अन्तर्गत हिन्दू अमीर-वर्ग', डॉ० कु० मजुला श्रीवास्तव ने मुगल कालीन अमीर-वर्ग मे तूरानी अमीर-वर्ग तथा डॉ० पन्नालाल विश्वकर्मा ने 'शाहजहाँ के अन्तर्गत हिन्दू अमीर-वर्ग' पर शोधकार्य किया। अपने विश्वविद्यालय में भी मुगल अमीर-वर्ग के विभिन्न जातीय-तत्वों पर या तो शोध-लेख लिखे गये या शोध-ग्रथो की रचना की गयी। शोध-ग्रथो की श्रेणी में डॉ० श्रीमती रीता जोशी का 'मुगलों के अन्तर्गत अफगान अमीर-वर्ग' व अन्य उपरोक्त शोध ग्रथो की भाँति महत्वपूर्ण शोधकार्य है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की भाँति उत्तरी भारत के अन्य विश्वविद्यालयों मे भी मुगल कालीन अमीर-वर्ग के विभिन्न जातीय-तत्वो के महत्वपूर्ण एव सुप्रसिद्ध नायको जैसे कि- मुनीम ख़ाँ खानखाना, राजा मान सिह, मिर्जा राजा जयसिह, टोडरमल, आदि पर शोधकार्य हुए हैं और शोधार्थियो मे विभिन्न जातीय-तत्वो पर स्फुट शोध-लेख प्रस्तुत किये

गये। अतएव अधिकाशत शोधार्थियों का ध्यान उत्तरी भारत के विभिन्न जातीय- तत्वो, जिनका मुगल अमीर-वर्ग में उपयुक्त स्थान था, पर केन्द्रित रहा। शोधार्थियों का ध्यान अभी तक मुगल अमीर-वर्ग में दक्खनी अमीरो तथा मराठा सरदारो की ओर कदापि न गया। अत मेरी इच्छा हुई कि मैं विशेषत औरगजेब के शासनकाल में 'मुगल अमीर-वर्ग के अन्तर्गत मराठा सरदारो की राजनीतिक भूमिका, विषय पर शोधकार्य करूँ।

औरगजेब के शासनकाल (1658-1707) में मुगल-मराठा सघर्ष चरमोत्कर्ष पर पहुँचा और इसी काल के अत मे मुगल तथा मराठा साम्राज्य पतन की ओर उन्मुख हुए। अभी तक अधिकाश इतिहासकारों मे यह अवधारणा रही है कि मुगल-मराठा संघर्ष में मराठों ने मुगलों का साथ कदापि नही दिया और प्रारम्भ से लेकर 1707 ई0 के अत तक मुगलो को राजपूतो तथा मुगल अमीर-वर्ग के अन्य जातीय-तत्वों की सहायता से ही मराठों से निरन्तर सघर्ष करना पड़ा। परन्तु ये अवधारणा पूर्णरुपेण सही नही है। इस अवधारणा की सम्पुष्टि हेतु मुझे पूर्व औरगजेब के काल मे मराठों का अभ्युदय, शनै -शनै मुगल काल मे उनकी स्थिति तथा मुगल-मराठा सरदारों के मध्य सामान्य सबधों को दृष्टिपात करना पडा है। बिना इस पृष्ठिभूमि के 'औरगजेब के अन्तर्गत मराठा अमीर वर्ग की भूमिका' का विश्लेषण करना अत्यन्त दुष्कर कार्य सिद्ध होता। इसलिए शोध-विषय की गम्भीरता और उसकी सीमाओ को देखते हुए मैंने पूर्व-औरगजेब के काल मे मराठो की स्थिति का ही निरुपण नही किया है। वरन् मुगल अमीर-वर्ग मे मराठो की स्थिति

स्पष्ट करते हुए यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि औरगज़ेब मराठा विरोधी नही था और उसका उद्‌देश्य केवल विद्रोही मराठों की सतत् सैनिक कार्यवाहियों, लूट-मार व आतक को रोकना था।

प्रस्तुत शोध-ग्रथ फारसी तथा मराठी भाषा मे उपलब्ध ग्रथों के प्रमाणिक अनुवादों तथा अँग्रेजी व हिन्दी में उपलब्ध ग्रथो पर आधारित है। यद्यपि औरगजेब के शासनकाल से सम्बधित फारसी में अनेक ग्रथ मूल मे अथवा अनुवाद के रुप मे उपलब्ध हैं। जैसा कि - मो0 काजिम शिराजी की कृति - आलमगीरनामा, आकिल खा राजी की कृति - वाकयात् - ए - आलमगीरी, साकी मुस्तैद खॉ की कृति - मासीर-ए-आलमगीरी, ईश्वरदास नागर की कृति- फुतुहात-ए-आलमगीरी, भीमसेन की कृति - तारीख-ए-दिलकुशा तथा ख्वाफी खाँ की कृति - मुन्तखब-उल-लुबाब इत्यादि। परन्तु मराठी में केवल कुछ ही रचनाए मूल अथवा अनुवाद के रुप में उपलब्ध हैं।

कृष्णाजी अनन्त सभासद की कृति - 'सभासद बाखर', 91 कलमी बाखर, पेशवादफ्तर, चिटनिस बाखर कृत - रामराव चिटनिस, राजवाडे इत्यादि मूल मराठी में ही उपलब्ध हैं और शेष का अनुवाद अभी तक नहीं हुआ है। मैने शोध-कार्य काल मे जिन ग्रथों का उपयोग किया है उनका उल्लेख संदर्भ-ग्रथो की सूची मे किया गया है। अत यहाँ उनकी पुनरावृत्ति करने की आवश्यकता नही है।

प्रथम अध्याय मे भूमिका के रुप मे मैने महाराष्ट्र की सीमाए उसकी भौगोलिक दशा और महाराष्ट्र में होने वाले सामाजिक एव

धार्मिक आन्दोलनों, महाराष्ट्र धर्म तथा उनका मराठों पर प्रभाव की चर्चा करते हुए मराठा कृषकों, जमींदारों तथा जागीरदारों ने शनै -शनै. उत्पन्न राजनीतिक जागरुकता पर प्रकाश डालते हुए बहमनी तथा उसके उत्तराधिकारी राज्यों में उनके अस्तित्व एव राजनीतिक स्थिति तथा राजनीति में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है।

द्वितीय अध्याय में मैंने, 1600-1601 ई0 मे जब खानदेश से लेकर बरार तथा अहमदनगर का दुर्ग मुगलों ने मुग़ल-साम्राज्य में अधिग्रहण कर लिया और उसके पश्चात दिनोदिन साम्राज्यवादी मुगलों का दबाव दक्षिण पर पडने लगा। उस समय मराठों की स्थिति का निरुपण करते हुए मुगल-निजामशाही संघर्ष में निजामशाही वकील एव पेशवा मलिक अम्बर के नेतृत्व में उनकी भूमिका का अवलोकन किया है। मैंने ये बताने की चेष्टा की है कि किस प्रकार मुगलों के बढते हुए प्रभाव के कारण मराठों के व्यक्तिगत हितों पर अतिक्रमण हुआ और किन परिस्थितियों में कुछ मराठा सरदारों ने अपनी देश की स्वतत्रता के बिना चिन्ता किये हुए मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित होना श्रेयस्कर समझा। इसी समय मराठों मे अबसरवादी एव पलायनवादी प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है जो कि शाहजहाँ के राज्यकाल में चरमोत्कर्ष पर पहुँची।

तृतीय अध्याय में, मैंने शाहजहाँ के शासनकाल मे मुगल अमीर-वर्ग में मराठा सरदारों की स्थिति का निरूपण करते हुए इस तथ्य पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है कि महान मुगल सम्राट शाहजहाँ ने मराठा सरदारो के प्रति सहृदयता की नीति अपनाते हुए उन्होने दक्षिण मे मुगल प्रभाव के प्रसार हेतु बडी सख्या मे न केवल मराठा सरदारो को मुगल अमीर-वर्ग मे सम्मिलित किया वरन् न केवल मुग़ल अमीर-वर्ग के अन्य

जातीय-तत्वों की भाति उन्होंने उन्हें जागीरें, उपाधियाँ, सम्मानसूचक-चिन्ह इत्यादि ही प्रदान किये तथा उनकी सैनिक सेवाओं का उपयोग पूर्णत दक्षिण मे मराठा विद्रोहियों तथा बीजापुर व गोलकुण्डा के विरुद्ध असफल अभियानों में भी किया। शाहजहाँ के शासनकाल के अत तक इस प्रकार से मुगल अमीर-वर्ग मे मराठा सरदारों की सख्या पूर्वकालो की अपेक्षा अत्यधिक बढ गई थी।

चतुर्थ अध्याय में, शाहजहाँ के रोगग्रस्त होने के कारण उत्तराधिकार के युद्ध में दाराशिकोह व औरगजेब की ओर से मराठा सरदारों की भूमिकाओं का विवरण दिया गया है। इस समय भी शाहजहाँ कालीन मुगल अमीर-वर्ग मे मराठा सरदारों का दृष्टिकोण पलायनवादी एव अवसरवादी था परन्तु राजकुमार औरगजेब के नेतृत्व में जो मराठा सरदार थे, उन्होंने स्वामिभक्ति का परिचय देते हुए उसे बिजयी बनाने में तनिक भी कसर न उठा रखी।

पचम् अध्याय में, विवादग्रस्त सम्राट औरंगजेब के शासनकाल के दो चरणों (1658-1678) व (1679-1707) में मुगल अमीर-वर्ग मे मराठा सरदारों की 1000 व उससे ऊपर के विभिन्न श्रेणियों में सख्या इगित करायी गयी है। अधिकाश इतिहासकारों की यह अवधारणा है कि औरंगजेब, मराठों तथा साधारणत. हिन्दुओं के विरुद्ध था। और दक्षिण में उसकी नीति मराठा विरोधी थी। डॉ0 अतहर अली का यह निष्कर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि राज्यकाल के प्रथमचरणो में 1000 व उससे ऊपर की कुल श्रेणियों मे 486 मनसबदारों की कुल सख्या मे 5 5 प्रतिशत मराठा मनसबदार थे। राज्यकाल के द्वितीय चरण (1679-1707) मे, शिवाजी के मृत्योपरान्त (मृत्यु 1680) जब

मुगल-मराठा सघर्ष चरमोत्कर्ष पर पहुँचा तो मुगल अमीर-वर्ग में 1000 व उससे ऊपर की श्रेणियो मे मनसबदारों की कुल सख्या 575 में 16 7 प्रतिशत मराठा मनसबदार थे। दोनों ही आँकडों से यह सिद्ध होता है कि औरगजेब ने अनेक मराठा सरदारों को मुगल अमीर वर्ग में सम्मिलित किया और विद्रोही मराठा सरदारों के विरुद्ध उनकी सैन्य क्षमता का प्रयोग किया। इसी अध्याय में, मराठा सरदारों की मुगल अमीर-वर्ग में स्थिति निरूपित करने के उपरान्त मराठा सरदारों की दी गई जागीरों व सम्मान-सूचक-चिन्ह का विवरण देने के उपरान्त मैंने 1658 से लेकर 1678 तक मराठा सरदारों की राजनीति में भूमिका का सविस्तार उल्लेख किया है और पुनरावृत्ति से बचने हेतु केवल महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए ही मराठा सरदारों की भूमिका का विश्लेषण किया है।

छठा अध्याय में, उन सभी ऐतिहासिक घटनाओ पर केन्द्रित है जो कि औरगजेब के शासनकाल के द्वितीय चरण (1679-1707) के मध्य दक्षिण में घटित हुई। 1680-81 से 1707 तक सम्राट औरगजेब का ध्यान मुख्यतः विद्रोही मराठों, बीजापुर व गोलकुण्डा के विरुद्ध ही केन्द्रित रहा। यह वह काल था जबकि दक्षिण में घटना-चक्र बडी तीव्र गति से घूम रहा था। विद्रोही मराठा सरदारो का दमन करने हेतु औरंगजेब अपना सबकुछ दाँव पर लगाने के लिए अधीर था। प्रारम्भ में शम्भा जी व राजाराम के मध्य गृहयुद्ध ने मराठा सरदारो को विभक्त कर दिया था जिसका लाभ औरगजेब ने उठाते हुए अनेक मराठा सरदारो को मुगल अमीर-वर्ग मे लिया। शम्भा जी के बध के पश्चात विद्रोही मराठो की ही नही वरन् अनेक शातिप्रिय मराठा सरदारो की

मुग़लों के प्रति मनोवृत्ति ही बदल गई। राजाराम का राजनीतिक क्षितिज से विलुप्त होना, शिवाजी द्वितीय का सिंहासनारुढ होना और ताराबाई के नेतृत्व में मराठा शक्ति का पुन उदीयमान होना, औरगजेब के दृढ निश्चय एव सकल्प को बदल न सके। पूर्व की अपेक्षा सघर्ष की गति तीव्र हो गई तथा औरगजेब को बडी सख्या में मराठा सरदारों को अमीर-वर्ग में सम्मिलित करना पडा और उनकी सैनिक सेवाए प्राप्त करनी पडीं। इन सभी तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए मैंने मराठा सरदारो की भूमिका पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है।

अत में 'उपसहार' के रुप में मैनें उपरोक्त छ (6) अध्यायों में दिये गये विवरण की समीक्षा की है।

आदरणीय प्रो0 राधेश्याम जी, अध्यक्ष, मध्य/आधु0 इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रति विनम्र आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने समय-समय पर मेरी सहायता की एव बहुमूल्य सुझाव दिये। शोधकार्य मे पग-पग पर मुझे जो कठिनाइयाँ उठानी पड़ी और शोध-विषय से सम्बन्धित मूल-प्रश्नों की जटिलता महसूस करनी पड़ी, उसका निवारण उन्हीं के द्वारा हुआ। उन्होंने जो वात्सल्य दिया और पुत्रवत् स्नेह-गध बिखेरी, यह शोध-प्रबन्ध उसी की फलश्रुति है।

मेरा पुनीत कर्तव्य है कि, मैं अपने गुरु एव प्रबन्ध-निर्देशक श्री योगेश्वर तिवारी के प्रति विशेष रुप से आभार प्रकट करूँ। शोध-विषय के चयन से लेकर कार्य सम्पन्न होने तक उनकी महती कृपा मुझ पर बनी रही। उन्होने मुझे 'इतिहास' को समझने की समकालीन

दृष्टि दी, नये-नये अनुसन्धानो से अवगत कराया, प्रतिपल साहस देते रहे, उसके प्रति मैं शब्द रहित हूँ और उनसे निरन्तर स्नेह की कामना करता हूँ।

अपने विभाग के प्रो0 लाल बहादुर वर्मा, प्रो0 नैमूर रहमान फारूकी, डॉ0 (श्रीमती) रीता जोशी, डॉ0 पन्नालाल विश्वकर्मा, डॉ0 ललित जोशी सहित मैं विभाग के अन्य प्राध्यापकों के प्रति भी अपना आभार ज्ञापित करता हूँ।

मैं विभागीय कार्यालय के अधिक्षक, श्री जगदीश प्रसाद मिश्र के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होने समय-समय पर मुझे यथोचित् सहायता प्रदान की।

अपने शोध-कार्य काल में मुझे श्री नटनागर शोध सस्थान, सीतामऊ (मालवा) के निदेशक डॉ0-मनोहर सिंह राणावत से विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। उन्होंनें शोध-सस्थान के पुस्तकालय में मुझे जो सुविधाए प्रदान की उसके लिए मैं जीवनपर्यन्त उनका आभारी रहूँगा।

इसी प्रकार से, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष, प्रो0 पी0 सी0 शर्मा एव सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष, एच0 के0 ए0 रिजवी तथा पुस्तकालय के अन्य कर्मचारियो के प्रति मैं आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे हर प्रकार से सहायता प्रदान की।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन (इलाहाबाद) के पुस्तकालयाध्यक्ष के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

शुभ-चिन्तकों एव मित्रो ने शोध-कार्य के विभिन्न चरणो मे जो

मेरी सहायता की, अनेक विषयगत चर्चाए की, चर्चाओं के स्रोत बताए और शोध-प्रविधि के बारे में निरन्तर नूतन जानकारियाँ दी, उनके प्रति आभार प्रकट करना मात्र औपचारिकता होगी।

श्री रविभूषण तिवारी एव उनके परिवार-जनों ने अन्तरग स्नेह दिया, कोमल भावनाओं से मेरी जिजीविषा बनाये रखी तथा लगातार सहयोग एव साहस देते रहे, के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता अर्पित करता हूँ।

पूज्य पिता श्रीयुत् भीमसेन तिवारी एव (चाचा) श्री रामनाथ तिवारी, श्री अनिरुद्ध तिवारी एवं श्री अमला तिवारी के चरणों में प्रणाम निवेदित करता हूँ। पूज्य पिता की सास-सास इस प्रबन्ध के अक्षर-अक्षर में दर्ज है। आदरणीया पुण्य-सलिला दादी जी, श्रीमती श्यामराजी देवी की बहुत फटकारें मिली हैं। ये फटकारें मेरे लिए आर्शीवाद की तरह हैं।

मेरे शोधकार्य के दौरान आदरणीय बडे भाई साहब श्री हरेराम त्रिपाठी, स्नेह-दायिनी भाभी जी श्रीमती विन्दु तिवारी सहित प्रिय (वहन) सुनैना, जयराम (जय) एव माला ने भरपूर पारिवारिक आत्मियता दी और मेरा उत्साहवर्धन करते रहे।

इस 'प्रबन्ध' को लिखते समय स्वर्गीया 'माँ' (श्रीमती जानकी देवी) की याद बराबर आती रही। अब शोध-प्रस्तुति के अवसर पर मेरी आँखे अश्रुपूरित हैं। माँ, आर्शीवाद दो कि तेरी दी गई विद्या को मैं और विकसित कर सकूँ।

-- श्रीराम तिवारी

विषय - सूची

भूमिका - प्रथम अध्याय

महाराष्ट्र की भौगोलिक दशा, मराठों का उत्कर्ष एव बहमनी राज्य तथा उसके उत्तराधिकारी निजामशाही राज्य में उनकी भूमिका।

पृष्ठ सख्या 1 - 19

द्वितीय अध्याय

मुगल अमीर-वर्ग में मराठों का प्रवेश- (1601-1627)

पृष्ठ सख्या 20 - 24

तृतीय अध्याय

शाहजहाँ कालीन मराठा अमीर-वर्ग।

पृष्ठ सख्या 25 - 67

चतुर्थ अध्याय

उत्तराधिकार के युद्ध के समय मराठा अमीर-वर्ग की स्थिति।

पृष्ठ सख्या 68 - 72

पंचम् अध्याय

औरगजेब कालीन मराठा अमीर-वर्ग की स्थिति, (1658-1679)

पृष्ठ सख्या 73 - 105

षष्ठम् अध्याय

औरगजेब कालीन मराठा अमीर-वर्ग, (1680-1707)

पृष्ठ सख्या 106 - 135

उपसंहार

पृष्ठ सख्या 136 - 140

परिशिष्ट 1

पृष्ठ सख्या 141

परिशिष्ट 2

पृष्ठ सख्या 142 - 153

परिशिष्ट 3

पृष्ठ सख्या 154 - 172

परिशिष्ट 4

पृष्ठ सख्या 173 - 180

संदर्भ ग्रथों की सूची

पृष्ठ सख्या 181 - 187

प्रथम अध्याय

भूमिका

"महाराष्ट्र की भौगोलिक दशा, मराठों का उत्कर्ष एवं बहमनी राज्य तथा उसके उत्तराधिकारी निजामशाही राज्य में उनकी भूमिका"

अध्याय (1)

इससे पूर्व की मराठा अमीर-वर्ग की सरचना एव उसकी विशेषताओं पर विहगम, विश्लेषणात्मक दृष्टि डाली जाय, महाराष्ट्र की भौगोलिक सीमाओं पर दृष्टिपात करना समीचीन होगा। वर्तमान महाराष्ट्र की भौगोलिक सीमाए मुगलकालीन मराठी-भाषी प्रदेश से भिन्न थी। वास्तव में यद्यपि मराठी-भाषी प्रदेश उस समय अत्यधिक विस्तृत था परन्तु उसमें-खानदेश, बरार, बीदर, अहमदनगर तथा बीजापुर राज्य के विशाल प्रदेश सम्मिलित थे। अन्य शब्दों में विन्ध्य एव सतपुडा की पहाडियों के दक्षिण में ताप्ती नदी से लेकर दक्षिण में गोदावरी नदी तक का विशाल प्रदेश बीजापुरी-कर्नाटक तक को 'महाराष्ट्र' की सज्ञा प्रदान की गई। पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित दमन से लेकर कारवार तक और दमन से लेकर आधुनिक नागपुर तथा गोंदिया तक तथा दक्षिण में स्थित शोलापुर तक उसकी अनियमित सीमाए रेखाकित की जा सकती हैं। इस विशाल भू-क्षेत्र के प्राचीनतम इतिहास का उल्लेख अनेक इतिहासकारों ने किया है। साथ ही साथ उन इतिहासकारों ने इस प्रदेश से सम्बद्ध- वीर, साहसी तथा योग्य, कर्मठ एव दूरदर्शी शासकों एव सैनिकों की गौरवमयी गाथा पर दृष्टिपात किया है। उन्होंने सातवाहन और भोज, मौर्य, कदम्ब, शिलाहार, यादव, चालुक्य तथा राष्ट्रकूटों आदि जातियों के उत्थान एव राजनीतिक क्रियाकलापों तथा सास्कृतिक गतिविधियों की विशेष रुप से चर्चा की है।[1]

इस प्रदेश की भौगोलिक दशा समान न थी। ताप्ती तथा नर्मदा के मध्य ऊचे पहाड तथा उनकी श्रृखलाए व घाटिया थी। तत्पश्चात् सह्यादि की विशाल पर्वत श्रृखलाए, सघन जगल, घाटियाँ व पथरीली भूमि दूर -दूर तक फैली हुई हैं। उत्तरी कोकण तथा

---

1 जी एस सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 4,5

दक्षिणी कोंकण में भी इस प्रकार की पर्वत-श्रृंखलाए, जगल, दुर्गम घाटिया दूर-दूर तक फैली हुई हैं। शेष क्षेत्र में यद्यपि नदियों व जलधाराओं का जाल बिछा हुआ था परन्तु मुख्यत भूमि पथरीली एव अनउपजाऊ ही थी। समूचे महाराष्ट्र में अधिकाश क्षेत्र अनउपजाऊ, बजर तथा पथरीला था। ऐसा बहुत ही कम क्षेत्र था जहा की कृषि योग्य भूमि दिखाई पडती थी और जहा नियमित रुप से कृषि उत्पादन होता था। यह सत्य है कि यहा के अधिकाश निवासियों का व्यवसाय कृषि ही था परन्तु जीवन-यापन के लिए उनके पास साधन सीमित थे। अत प्रारम्भ से ही वे उद्यमी, परिश्रमी तथा बलिष्ठ हुए। वे असामान्य परिस्थितियों में भी प्रकृति एव परिस्थितियों का डट कर मुकाबला करने के लिए सक्षम रहे। नि सदेह यहा के निवासियों का कद छोटा रहा परन्तु उनकी जीवन शैली साधारण और उनके आचार-विचार नियत्रित और आशापूर्ण रहे।

महाराष्ट्र के अतीत में न जाते हुए केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यहा के निवासियों ने उत्तरी भारत के प्रमुख आक्रान्ताओं का मध्यकाल में पूर्णरुपेण सामना किया और उनके आक्रमणों को बिफल बनाने की चेष्टा की। देवगिरि के यादव राज्य के शासक रामचन्द्रदेव तथा उनके पुत्र शकरदेव ने सुल्तान अलाउद्दीन खिल्जी तथा उसके सेनानायकों के आक्रमणों का पूरी तरह से सामना किया।[2] तत्पश्चात् सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक तथा मोहम्मद- बिन - तुगलक के शासनकालों में जिस प्रकार से इस प्रदेश के लोगों ने शाही सेनानायकों का सामना किया उससे उनके

---

2 **विस्तृत विवरण के लिए देखिए-**

-के एस लाल, खिल्जी वश का इतिहास, पृ0 39,40,

-हबीब तथा निज़ामी, ए कम्प्रीहेंसिव हिस्ट्री आफ इडिया भाग 5, पृ0 322-323,

- सर बूलजले हेग, कैम्ब्रीज हिस्ट्री आफ इडिया भाग 3, पृ0 96-97 इत्यादि।

शौर्य, वीरता तथा कर्मठता की जानकारी मिलती है।[3] नि सदेह उत्तरी-भारत के शासकों द्वारा दक्षिणी-भारत पर सतत् आक्रमणों की अवधि में महाराष्ट्र की विभिन्न जातियों को अपने प्रदेश की सुरक्षा के लिए वीभत्स आक्रमणों का सामना करना पडा जिसके परिणामस्वरुप उनमें राजनीतिक चेतना का समय-समय पर पुनर्विकास प्रारम्भ हुआ।

ज्ञातव्य है कि चौदहवी सदी के मध्य तक यहाँ के सन्तों के उपदेशों ने मराठी भाषा के माध्यम से ऊँच-नीच के भेदभाव को दूर कर सभी जातियों को एक ही सूत्र में बाँध दिया।[4] यहाँ 'महानुभाव सम्प्रदाय' का उदय हुआ। इससे पूर्व अर्थात् 13वी सदी से पूर्व 11वीं तथा 12वी सदी में यहाँ वैष्णव, शैव, लिंगायत, नाथपथ तथा पण्ढरपुर का वर्करी सम्प्रदाय, जनमानस में अपनी धार्मिक विचारधाराओं का प्रचार कर रहे थे। परन्तु 13वी सदी में 1270 से 1295 के मध्य गुजरात से आये हुए हरिपाल देव (चक्रधर) ने वेदों तथा उपनिषदों का प्रचार कर यहाँ मानभाव सम्प्रदाय की स्थापना की। उसने समस्त महाराष्ट्र

---

3 **विस्तृत विवरण के लिए देखिए-**

-आगा, महदी हसन, द राइज एण्ड फॉल आफ मोहम्मद-बिन तुगलक,-पृ0 82,83 एव 164-65,

'तुगलक डाईनेस्टी'- पृ0 97-98, 247-48,49,50, हबीब तथा निजामी, (पू0 30) पृ0 469-72, 531-32 तक।

4 **महाराष्ट्र के धार्मिक- आन्दोलनों में संतों के योगदान के विस्तृत विवरण के लिए देखिए-** रानाडे कृत- मराठा शक्ति का उदय, जी एस सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, इत्यादि।

का भ्रमण किया। और अपने आकर्षक व्यक्तित्व एव तार्किक शक्ति, बुद्धिमत्ता एव विश्लेषणात्मक शक्ति द्वारा अनेक शिष्य बनाये। उसने अनेक ब्राह्मण विद्वानों को भी अपना शिष्य बनाया तथा उसने उपनिषदों एव प्राचीन धार्मिक ग्रथों में निहित उच्चतम् आदर्शों तथा विचारों का प्रचार किया और जाति-पाँति, ऊँच-नीच, वाह्य आडम्बर, छुआछूत, बहुईश्वरवाद का खण्डन ही नही किया वरन् शकर के अद्वैतवाद के विरुद्ध 'द्वैतवाद' का प्रचार करते हुए ईश्वर की उपासना के लिए सभी के लिए द्वार खोल दिये। मानभाव - सम्प्रदाय का प्रभाव समस्त महाराष्ट्र में ही नही सीमित रहा अपितु उसके बाहर भी यथोचित् रहा। चक्रधर और उसके शिष्यों ने सस्कृत के स्थान पर जनमानस की भाषा मराठी में मानभाव सम्प्रदाय के विचारधारा का प्रचार ही नही किया वरन् मराठी में ही धार्मिक ग्रथों का अनुवाद किया और धार्मिक-साहित्य का सृजन किया। चक्रधर ने देवगिरि को अपना केन्द्र बनाया और आश्चर्यजनक बात तो यह है कि समस्त महाराष्ट्र में उसके उपदेश गुजित होने लगे। देवगिरि के यादवराज्य के सूर्यास्त के समय उसकी तथा यादव राज्य के मत्री हेमाद्रि की मृत्यु हो गई। फिर भी मानभाव सम्प्रदाय की विचारधारा महाराष्ट्र- वासियों को प्रभावित करती रही। लगभग इसी काल में पण्ढरपुर के 'विठोबा' की ओर यहाँ के लोग आकृष्ट हुए तथा ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाम, तुकाराम इत्यादि महान वैष्णव सन्तों के भजनों, अभगों, उपदेशो तथा वाणियों से प्रभावित होने लगे। पण्ढरपुर आन्दोलन ने भी यहा के हिन्दुओं को एकता के सूत्र में बाँधने में विशिष्ट भूमिका निभायी। सक्षेप में इस प्रदेश के वासियों के चारित्रिक निर्माण में तात्कालिक धार्मिक आन्दोलनों और उनके प्रवर्तकों का विशिष्ट योगदान रहा। एक ओर तो मराठो की वेद-उपनिषद तथा अन्य धार्मिक ग्रथो, अनेक देवी-देवताओं के प्रति आस्था, सीधे-सादे पवित्र जीवन व्यतीत करने की अभिरुचि हमें देखने को मिलती है तो दूसरी ओर उनमें इन धार्मिक आन्दोलनों द्वारा जागृति की हुई नवीन राजनीतिक चेतना शनै -शनै बढती हुई दिखाई देती है। वास्तव में अगली कुछ शताब्दियों में धार्मिक- उद्बोधन के परिणामस्वरुप विकसित राजनीतिक चेतना, मराठो के चरित्र एव कृतित्व का अविछिन्न अग बन गया।

13वी शताब्दी के अत तक तो उत्तरी भारत के आक्रान्ताओं तथा आक्रमणकारियों के विरुद्ध महाराष्ट्रवासियों को विशेष सफलता प्राप्त न हुई। इस काल में तुगलक वश के द्वितीय शासक मोहम्मद-विन-तुगलक ने सुदूर दक्षिण तक अपने अभियानों का सचालन किया। होयसल, काक्तीय तथा अन्य हिन्दू राज्यों को विजित करने और अधिकाश दक्षिण भारत को अपने आधीन लाने तथा वहाँ तुर्की शासन स्थापित करने में अद्वितीय सफलता ही नही प्राप्त की वरन् देवगिरि का नाम परिवर्तित कर 'दौलतावाद' रख कर वहाँ अपने प्रशासन का मुख्यालय स्थापित किया। जिस प्रकार से हिन्दू शासको व सामन्तों के अधिकारो पर अतिक्रमण हुआ और उन्हें राजनीतिक क्षेत्र में अपग कर दिया गया, उससे महाराष्ट्रवासियों में केन्द्रीय सत्ता के विरुद्ध विद्रोहात्मक प्रवृत्ति ऊपजी। वे हरिहर व बुक्का, जिन्होंने 1336 में तुर्कीसत्ता को चुनौती देकर विजय नगर के हिन्दू साम्राज्य की स्थापना कर दी थी, से प्रेरणा लेते हुए मुसलमान अमीरान-ए-सादा तथा उनके सरदारों को सहयोग प्रदान करते हुए 1347 में तुगलक शाही सेनाओं को पराजित कर एक नवीन हिन्दू-मुसलमान राज्य की स्थापना की जो 'बहमनी राज्य' के नाम से सुविख्यात हुआ। इस प्रकार से महाराष्ट्र में एक नवीनसत्ता का जन्म हुआ और महाराष्ट्रवासी उत्तरी भारत की प्रभुता से मुक्त हो गये और वाह्य प्रभुता से मुक्त होने का ये पाठ उन्होंने प्रथम बार पढा तथा महाराष्ट्रवासियों की आने वाली पीढियों को ये पाठ सदैव याद रहा।

बहमनी राज्य जो की विशेषत एक हिन्दू-मुसलमान राज्य था, में प्रारम्भ से लेकर अत तक कुछ ही जातियों को अपनी राजनीतिक भूमिका निभाने का समय-समय पर अवसर मिला। किसी भी राज्य एव साम्राज्य के इतिहास में केवल कुछ ही ऐसी महत्वपूर्ण जातिया एव प्रजातिया होती हैं जो की राजनीति में अपना विशिष्ट योगदान देकर उसे उत्थान एव पतन की ओर उन्मुख करती हैं। बहमनी प्रशासन में मराठा सिलेहदारों (दुर्ग रक्षकों), मराठा भू-पतियों या सामन्तों तथा सैनिकों का विशिष्ट स्थान रहा।

सैनिकों तथा मुकासादारो, देशमुखो तथा देशपाण्डवों का भी विशिष्ट स्थान रहा। बहमनी शासन तन्त्र में अमीर-वर्ग के सगठनात्मक स्वरुप पर कोई विशेष शोध कार्य न होने के कारण यह कह सकना अत्यन्त कठिन है कि अमीर-वर्ग के जातीय-तत्वो में मराठा जातियों एव प्रजातियों की कितनी सख्या थी। यद्यपि दक्खनी और अफाकी (विदेशी मुसलमानों) का कतिपय उल्लेख प्रो0 एच0 के0 शेरवानी ने अपने ग्रथ- 'दी बहमनीज आफ द डेकन' में किया है किन्तु दक्खनियों में कितने मराठा या मराठों की प्रजातियों के अमीर थे इसका उल्लेख उनके ग्रथ में कहीं भी नहीं मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बहमनी राज्य की स्थापना के समय कन्धार, कल्याणी, मालखेर, वीदर, अकालकोट, महेन्द्री इत्यादि के दुर्ग जो की दिल्ली के सुल्तान मोहम्मद-बिन-तुगलक के मराठा प्रतिनिधि जमींदारों के हाथों में थे, वे नव बहमनी सुल्तान के सेनानायकों से अधिकृत कर लिये।[5] इसी प्रकार से 'मधोल' का दुर्ग जो की नारायण नामक मराठे के हाथो में था, ने यह दुर्ग बहमानियो को समर्पित कर दिया।[6] गोवा, दाबुल, कल्हार, कोल्हापुर इत्यादि के दुर्ग जो मराठा सरदारों के हाथों में थे वे भी बहमनी सुल्तान अलाउद्दीन बहमनशाह की सेनाओं ने अधिकृत कर लिये।[7] 1347 से सुल्तान अलाउद्दीन बहमानशाह की मृत्यु (1358 ई0) तक मराठा मुकद्दम एकजुट न होकर निरन्तर प्रयास करते रहे कि वे नवीन सत्ता का विरोध करते हुए अपनी खोई हुई स्वतत्रता को प्राप्त कर लें।[8]

---

5 एच के शेरवानी,- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 50-55

6 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 57

7 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 61-62

8 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 76

सुल्तान अलाउद्दीन बहमानशाह प्रथम की सेनाओं ने मराठा विद्रोहियों की स्वतत्र प्रवृत्ति दबाकर रख दी। शीघ्र ही द्वितीय बहमनी सुल्तान 'मोहम्मद शाह' ने ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था की कि मराठा विद्रोही तत्व पुन अपना सिर उठाकर नव स्थापित प्रशासन को चुनौतिया न दे सके। सुल्तान मोहम्मद शाह बहमनी ने अपनी सेना व अगरक्षक दल में मराठों को विशेष स्थान दिया। सिलेदार, बरबारा-बारान तथा खासाखेल शब्दों के प्रयोग से ज्ञात होता है कि उनमें मराठों की भर्ती अधिक रही होगी।[9] इसके अतिरिक्त ज्ञातव्य है कि उसे तेलगाना तथा विजयनगर के विरुद्ध अभियान सचालित करने पडे और उसे बहरामखान मजदरानी के विद्रोह का दमन करना पडा। नि सन्देह उसकी सेना में स्थानीय जातीय-तत्व, जिसमें की मराठों की बाहुल्यता थी, रहे होंगे। सुल्तान मोहम्मद शाह द्वितीय ने अपने शासनकाल में स्थानीय जातीय-तत्वो तथा विदेशी मुसलमानो के मध्य सन्तुलन बनाये रखने की चेष्टा की। परिणामस्वरुप मराठों को अपनी स्थिति सुदृढ करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। परन्तु फिरोजशाह बहमनी के शासनकाल में विदेशी मुसलमानों के मुसलमान-ससार के विभिन्न भागों से आगमन के कारण मराठों की उन्नति के मार्ग अवरुद्ध हो गये। इस समय 'माहुर' तथा 'खेरला' मराठो के शक्तिशाली गढ थे। सुल्तान फिरोजशाह बहमनी ने गुलबर्गा से माहुर तथा खेरला की ओर प्रयाण किया। माहुर के मराठा सरदारों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। खेरला के नरसिंह को जब अन्य मराठा सरदारो की सहायता प्राप्त न हुई तो उसे स्वय बहमनी सेनाओं का न केवल सामना करना पडा वरन दो माह तक खेरला के दुर्ग से उनकी घेराबन्दी का सामना भी करना पडा। अन्ततोगत्वा उसने हथियार डाल दिये और स्वय वह

---

9 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 81

बहमनी सुल्तान से इलिचपुर में मिला। उसने उसकी अधीनता स्वीकार की और उसे वार्षिक करद देना स्वीकार कर लिया।[10] उसने अपनी पुत्री को सुल्तान फिरोजशाह बहमनी के हरम में भेजना भी स्वीकार किया। इस प्रकार से बहमनी शासक की शक्तिशाली सेनाओं के सम्मुख विखरे हुए विद्रोही मराठा सरदारों को नतमस्तक होना पडा। जहा तक खेरला के मराठा शासक नरसिंहराव का प्रश्न था उसे खेरला वापस कर दिया गया और उसे सम्मान-सूचक-चिन्ह देकर बहमनी अमीर वर्ग में सम्मिलित कर लिया गया।[11] यह प्रथम अवसर था कि किसी मराठा सरदार को बहमनी अमीर-वर्ग में उसके पदानुसार सम्मानित किया गया और उसे अमीर-वर्ग में लिया गया। सुल्तान फिरोजशाह बहमनी की मराठों को अमीर-वर्ग में भर्ती करने की यह नीति परिणामजनक सिद्ध हुई। इससे न केवल बहमनी राज्य शक्तिशाली हुआ वरन् मराठा शक्ति के उद्भव के मार्ग प्रशस्त हो गये।

1424-1426 के मध्य में जब बहमनी शासक सुल्तान शियाबुद्दीन (शिहाबुद्दीन) ने गुलबर्गा के स्थान पर बीदर में नई राजधानी स्थापित की तो मराठा भूमिपतियों, सिलेहदारों तथा शक्तिशाली मराठा सरदारों को अपनी स्थिति सुदृढ करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बीदर से वह प्रदेश बहुत दूर था जहा की मराठो की घनी आबादी थी। दूसरे, यह प्रदेश मराठों की मानसिकता को देखते हुए भौगोलिक दृष्टि से उनके लिए अत्यन्त अनुकूल था। 1426 से पूर्व माहुर के मराठा सरदार ने अपनी खोई हुई स्वतत्रता वापस ले ली। परिणामस्वरुप सुल्तान अहमदशाह बहमनी को बीदर से उसके विरुद्ध बढना पडा। माहुर अभियान का जो विवरण मिलता है उससे ज्ञात होता है कि अब तक मराठों

---

10 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 156-157

11 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 157

ने गोरिल्ला पद्धति से युद्ध करना सीख लिया था।[12] माहुर के असफल अभियान के उपरान्त सुल्तान अहमदशाह बहमनी ने मराठों से गाबिलगढ तथा नरनाला के दुर्ग छीन लिये। तदोपरान्त 1427-28 में उसने माहुर की आवश्यकता समझते हुए उस पर आक्रमण किये और उसे अपने अधिकार में ले लिया।[13] सुल्तान की इस सैनिक सफलताओं से मराठा-शक्ति को कुछ ठेस अवश्य पहुची होगी। कुलग को जिस प्रकार से उसने विजित किया और मराठों को उत्पीडित किया उससे नि सदेह मुसलमानों के प्रति मराठाओं के द्वेष में वृद्धि हुई होगी। इसी वर्ष मराठों की विद्रोहात्मक प्रवृत्ति देखने को मिलती है। उन्होने कोंकण में शाही-शक्ति के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, फलस्वरुप सुल्तान अहमद शाह ने मलिकतुज्जार खलफ हसन बसरी को उनके दमन हेतु भेजा। प्रो0 एच0 के0 शेरवानी ने- स्वतत्रता के इन प्रेमियों को डकैत व लूटेरे की सज्ञा, समकालीन ऐतिहासिक ग्रथों के आधार पर दी है। जबकि सत्य यह है कि, कोंकण के मराठा सरदार जो अभी तक असगठित व विभाजित थे एकजुट होकर अब बहमनी सेनाओं का सामना करने के लिए दृढ सकल्पित हो गये थे।[14] किन्तु दौलताबाद के गर्वनर खलफ हसन बसरी ने कोंकण पर अपने आक्रमण द्वारा न केवल उन्हें शक्तिहीन कर दिया वरन् उनसे अत्यधिक धन तथा हाथी प्राप्त कर लिये। इस प्रकार से एक बार पुन मराठों को अपने मुह की खानी पडी। बरार में मराठों पर नियत्रण रखने के लिए सुल्तान अहमदशाह बहमनी ने माहुर तथा रामगीर के दुर्ग अपने पुत्र राजकुमार सुल्तान मोहम्मद को सौंप दिया । इसके अतिरिक्त उसने अपने पुत्र राजकुमार महमूद को माहुर रामगीर तथा कुलग

---

12 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 202

13 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 202

14 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 206

को मिलाकर एक प्रात बनाकर उसे उसका प्रातपति नियुक्त कर दिया। इसके बावजूद भी सुल्तान अहमदशाह बहमनी (मृत्यु 1436) के जीवन के अतिम काल तथा उसके उत्तराधिकारियों के शासनकाल में बहमनी राज्य के पश्चिमी क्षेत्र में शाति कदापि नही रही। सगमेश्वर के मराठा शासक के विरुद्ध दिलावरखा का अभियान असफल रहा।

1447 में सुल्तान अहमद द्वितीय ने दौलताबाद से मलिक तुज्जार खलफहसनबसरी को विशाल सेना के साथ समुद्र तटीय क्षेत्र में स्थित सगमेश्वर के मराठा शासक के विरुद्ध भेजा। खलफहसनबसरी ने चाकन पहुचकर वहा दुर्ग बनाया और मराठा शासक शकर राव शिर्के के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ किया। उसने छोट-मोटे मराठा सरदारों का दमन किया और शकर राव को अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। शकरराव ने इस्लाम ग्रहण कर लिया तत्पश्चात खलफ हसन बसरी की विशाल सेनाओं का उसने संगमेश्वर की ओर बढने के लिए मार्गदर्शन किया परन्तु जब मार्ग में हसन बसरी रोगग्रस्त हो गया तो उससे प्रतिशोध लेने हेतु उसने सगमेश्वर के राजा को आक्रमण की सूचना भेज दी। तत्काल सगमेश्वर के राजा ने अपनी सेनाए खलफ हसन बसरी के विरुद्ध रवाना कर दी। मराठों ने खलफ हसन बसरी को चारों ओर से घेर लिया और उसे मौत के घाट उतार दिया। इसी समय बहमन-सैनिक अधिक सख्या में मारे गये। इस अभियान के विवरण से यह ज्ञात होता है कि सगमेश्वर के मराठा शासक के पास विशाल सेना थी जिसमें लगभग 30,000 मराठा सैनिक थे।[15]

बहमनी राज्य के प्रधानमत्री के रुप में महमूदगवाँ ने सम्पूर्ण राजनीतिक स्थिति का अवलोकन करते हुए प्रशासन को सुदृढ बनाने की नीति अपनायी। वह

---

15 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 241

दक्खनी अमीर-वर्ग में मराठा जातीय-तत्व की अवहेलना कदापि नही कर सकता था। वह मराठों की शाक्ति और उनके राजनैतिक अस्तित्व को भलीभाति जानता था। अभी तक बहमनी सेनानायकों के अथक प्रयासों के बावजूद भी राज्य के पश्चिमी क्षेत्र अर्थात कोंकण पर बहमनी सुल्तान की प्रभुता पूर्णरुपेण स्थापित न हो सकी थी। कोंकण प्रदेश में इस समय 'खेलना' तथा सगमेश्वर के मराठा शासकों का बोलबाला था। महमूदगवाँ के कार्यकाल में मराठा-शक्ति के साथ सघर्ष व टकराव होने के कई कारण थे।[16] सर्वप्रथम, बहमनी राज्य से जो मुसलमान हज करने के लिए जाते थे या जिन जहाजो पर माल, मुसलमान-ससार के विभिन्न देशो को जाता था, उन्हें सगमेश्वर के मराठा शासक के नवाडे अत्यधिक परेशान करते थे। दूसरे, मराठों का हिन्दुत्व अब तक पूर्णत जागृत हो चुका था और वे मुसलमानों की प्रभुता स्वीकार करने के लिए कदापि तैयार न थे। वे अपनी स्वतत्रता और अपनी जागीरों की अखण्डता को पूर्णरुपेण अक्षुण्ण बनाये रखना चाहते थे। मराठों की बढती हुई शक्ति का दमन करना परमावश्यक हो गया। 1469 में महमूद-गवाँ ने कोंकण पर आक्रमण करने की योजना कार्यान्वित की उसने विशाल सेनाओं के साथ उस ओर प्रयाण किया। मराठों के लिए यह चुनौती थी। कोंकण की भौगोलिक दशा वहा की सँकरी घाटिया, ऊँची पहाडियाँ तथा सघन जगल उनके पक्ष में थे। महमूदगवाँ ने अपनी सहायता के लिए बीजापुर, चाकन, जुन्नैर तथा चौल से सहायतार्थ सेनाए मगाई और अपने सेनानायकों को आदेश दिया कि वे सघन जगलों को काटकर कोंकण में प्रवेश के लिए मार्ग प्रशस्त बनाये। खुले मैदान में युद्ध करने की अपेक्षा मराठों ने गुरिल्ला ढग से

---

16 महमूद गवाँ के कार्यकाल में मराठा-शक्ति के साथ हुए सघर्ष के कारणों हेतु देखें- एच0 के0 शेरवानी कृत- 'महमूदगवाँ' में।

युद्ध करने की पद्धति अपनाते हुए महमूदगवाँ से कई सप्ताह तक सघर्ष किया। वर्षाऋतु के प्रारम्भ हो जाने से महमूदगवाँ की कठिनाईयाँ और भी बढ गई और अत में उसे कार्यक्षेत्र से वापस लौटने के लिए बाध्य होना पडा। वर्षा ऋतु समाप्त होते ही महमूदगवाँ ने पुन सैनिक कार्यवाहियाँ प्रारम्भ की और रगना के दुर्ग की ओर कूच किया। रगना का दुर्ग शक्तिशाली था अत उसे विजित करने हेतु उसने अनेक मराठों को प्रलोभन देकर अपनी ओर मिलाने की चेष्टा की। 1470 में मराठों की सहायता से उसने रगना का दुर्ग विजित किया, शत्रु से 20,000 हूण हर्जाना वसूल किया और उसके पश्चात दुर्ग में बहमनी सैनिक रखने के पश्चात् वह 'मैकल' के दुर्ग की ओर बढा, उसने मैकल के दुर्ग पर घेरा डाला और खेलना के राय को बाध्य किया कि वह उस दुर्ग को समर्पित कर दे। (1471 में) तदोपरान्त वह सगमेश्वर के दुर्ग को विजित करने के लिए आगे बढा परन्तु कई कारणों से उसे मराठों के विरुद्ध सफलता प्राप्त न हुई। सर्वप्रथम, उसे मराठों की गुरिल्ला- प्रणाली का सामना करना पडा। द्वितीय, सगमेश्वर के मराठा शासक की मराठा सैनिक टुकडियाँ सशक्त थी। तीसरे, उसके अन्तर्गत अनेक दुर्ग थे जो की सघन जगल एव घाटियों में थे। चौथे, राजधानी बीदर से उसे सहायतार्थ सेनाए न मिल सकी। यही नही बीदर में उसके विरुद्ध एक दल था जो की सक्रिय होकर सुल्तान के कानों में उसके विरुद्ध विष भर रहा था। अन्ततोगत्वा मराठों के विरुद्ध अभियान का समापन किये बिना उसे वापस लौटना पडा।[17]

महमूदगवाँ के कोंकण के असफल अभियान के उपरान्त यूसुफआदिल खाँ को महाराष्ट्र का प्रातपति नियुक्त कर दौलताबाद भेजा गया।[18] इस समय अन्तुर, बीरखेरा तथा अन्य दुर्ग मराठा सरदार जैनसिंह राय के हाथों में थे। यूसुफआदिल खाँ को आदेश दिये गये कि वह इन दुर्गों को विजित करे। बहमनी सेनाओं के सम्मुख जैनसिंह

---

17 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 312

18- एच0 के0 शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 318

ठहर न सका और उसने अन्तुर का दुर्ग समर्पित कर दिया। इसी प्रकार से बहमनी सेना ने बीरखेडा का दुर्ग भी अधिकृत कर लिया। इस सफल अभियान के उपरान्त यूसुफआदिल खॉ अत्यधिक धन-सम्पदा व हाथी इत्यादि लेकर वीदर वापस लौट गया जहा उसका अत्यधिक सम्मान हुआ।[19] इस अभियान के उपरान्त भी मराठे शात न रहे। गोवा, बेलगॉव तथा बकापुर में मराठा सरदारों ने विद्रोह की पताका 1472 में लहराई। परिणामस्वरुप सुल्तान अहमदशाह को अपनी सेना के साथ बेलगॉव की ओर बढना पडा। बेलगॉव के दुर्ग को सशक्त देखकर इसके सेनानायको ने 'परकेटा का दुर्ग' विजित किया, इसके बाद सुल्तान महमूदगवॉ के साथ बीदर वापस लौट गया। सक्षेप में, बहमनी सेना मराठों का दमन करने में असफल रही। 1473 के उपरान्त राजनीतिक घटना-चक्र तीव्रगति से बीदर में घूमने लगा। बीदर में महमूदगवॉ के शत्रु सक्रिय हो गये और वे उस समय तक शात न रहे जबतक कि उसका बध करने में उन्हें सफलता प्राप्त न हो गई। बहमनी-अमीरों का ध्यान गुटबन्दी व दलबन्दी में बँट जाने के कारण मराठों को अपनी शक्ति सचित करने का पूर्ण सुअवसर प्राप्त हो गया। महमूदगवॉ के प्रशासनिक सुधार उनके पक्ष में फलीभूत हुए, उसके द्वारा बहमनी राज्य का आठ (8) प्रातों में विभाजित किया जाना, दौलताबाद प्रात में दमन से लेकर गोवा तथा वेलगॉव तक का प्रदेश तथा उसमें आनदपुर तथा जुन्नैर के सम्मिलित किये जाने से मराठों को आभास हुआ कि मराठी-भाषी प्रदेश को एक पृथक प्रशासनिक इकाई प्रदान कर दी गयी है। महमूदगवॉ द्वारा किया गया यह कार्य अन्ततोगत्वा बहमनी राज्य के विघटन का कारण बन गया। यह

---

19 एच के शेरवानी- दी बहमनीज् आफ द दकन, पृ0 319

सर्वविदित है कि महमूदगवॉ के बध के उपरान्त बहमनी राज्य पतन की ओर उन्मुख हुआ। लगभग सात वर्षों के अदर ही यह विशाल साम्राज्य पाच स्वतत्र राज्यों के सस्थापको के मध्य विभाजित हो गया। इनमें से चार सस्थापको अथवा राज्यो का बरदहस्त मराठों पर रहा। बरार के इमदशाहियों, बीदर के बरीदशाहियों अहमदनगर के निजामशाहियों तथा बीजापुर के आदिलशाहियों के मध्य महाराष्ट्र की जनता विभाजित हो गई। महाराष्ट्र के भौगोलिक विभाजन से मराठों को कई लाभ पहुचे। उपरोक्त राज्यों के सस्थापक यह भलीभाति जानते थे कि बिना मराठो की सहायता से वे न तो अपने नव-स्थापित राज्यों को सुदृढ व शक्तिशाली बना सकते हैं, न उनकी रक्षा कर सकते हैं और न ही वे निकटवर्ती शासकों के साथ पारस्परिक सघर्षों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अत इमदशाहियों, बरीदशाहियों, निजामशाहियों तथा आदिलशाहियों ने मराठों की ओर मैत्रीता व सद्भावना का हाथ बढाया। उन्होंने उन पर अपनी प्रभुता स्थापित करने के उपरान्त उन्हें न केवल उनके दुर्गों में रहने दिया वरन् उनकी सैनिक-शक्ति का प्रयोग आन्तरिक शाति एव सुव्यवस्था स्थापित करने में निकटवर्ती राज्यों के विरुद्ध सघर्ष करने में तथा अपनी शक्ति को सुदृढ बनाने में तथा अपने राज्य की सीमाओं को सुरक्षित रखने में किया। शनै -शनै मराठों को समकालीन अमीर-वर्ग में, प्रशासन में, तथा सेना में प्रवेश करने का प्रचुर अवसर प्राप्त हुआ। वास्तव में, बहमनी साम्राज्य के उत्तराधिकारी राज्य मराठों की सेवा पर अधिकाशत निर्भर थे। दूसरी ओर उत्तराधिकारी राज्यों के शासकों के उदारनीति से मराठे लाभान्वित हुए। उनकी धार्मिक सहिष्णुता तथा व्यापक राजनीतिक दृष्टिकोण के कारण मराठे आश्वस्त हो गये कि उन्हें नवीन राज्यों में धार्मिक स्वतत्रता मिलती रहेगी और उनके अधिकारों पर अतिक्रमण करने की चेष्टा न की जायेगी। मराठों का इस प्रकार से आश्वस्त होना उनकी सम्पूर्ण जाति के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ।

उत्तराधिकारी राज्यों के शासकों ने मराठा भूमिपतियों के पास उनकी भूमि रहने दी। जिन मराठा सरदारों के पास उनके पैतृक दुर्ग थे या पैतृक जागीरे थी, वे दुर्ग तथा जागीरें उनके पास रहने दी गयी और उन्हें अपने ही वतन में रहने की स्वतत्रता प्रदान की गई तथा गाव व परगनो के मराठा अधिकारियों को उनके वशानुगत पदो पर बने रहने दिया गया और जो मराठे शक्तिशाली, वीर एव साहसी थे उन्हें शाही सेना में उनकी योग्यतानुसार बराबर रखा गया। इन्ही कारणों से बहमनी साम्राज्य के विघटनोपरान्त मराठों के लिए उन्नति करने के मार्ग प्रशस्त हो गये और राजनीतिक मच पर उन्हें आने में देर न लगी।

बहमनी साम्राज्य के उत्तराधिकारी राज्यों के अमीर-वर्ग में मराठों की भूमिका का पृथक-पृथक विश्लेषण अभी तक किसी इतिहासकार ने नहीं किया है। इमदशाही, बरीदशाही और निज़ामशाही राज्य में 1490 से लेकर लगभग 1600 ई0 तक मराठा सरदारों की राजनीतिक भूमिका का विवरण न तो 'सैयद अली तबातबाई' ने अपनी कृति-'बुरहान-ए-मासीर', फरिश्ता ने अपनी कृति-'तारीखे फरिश्ता' या गुलशने इब्राहिमी, मिर्जा इब्राहिम जुबैरी ने अपने कृति-'बसातीन-उस-सलातीन' तथा अन्य समकालीन परवर्ती लेखको ने इस सम्बध में कुछ भी नही लिखा है। किन्तु इतना तो कहा ही जा सकता है कि उपरोक्त उत्तराधिकारी राज्यों में उनकी स्थिति पूर्व जैसी न रह गई थी। यह सत्य है कि 1490 से लेकर 1600 के मध्य निजामशाही शासकों ने कोंकण पर अपना प्रभुत्व बनाये रखा परन्तु वे मराठों की ओर से कभी भी विमुख न रहे। निजामशाही शासकों ने उनकी प्रोन्नति के लिए सभी द्वार खोल दिये थे।[20] सन् 1600 में अहमदनगर

---

20 **विस्तृत विवरण के लिए देखिए-**

- डा0 राधेश्याम, द किंगडम आफ अहमदनगर, एच0 के0 शेरवानी तथा पी एम जोशी कृत- 'मेडिवल डेकन भाग 1, में।

अहमदनगर के दुर्ग के पतन के उपरान्त निजामशाही राज्य शीघ्रातिशीघ्र विघटन की ओर अग्रसित हुआ। खानदेश में स्थित असीरगढ के दुर्ग तथा अहमदनगर के दुर्ग को विजित करने तथा बरार के प्रदेश पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के उपरान्त मुगलों की साम्राज्यवादी नीति का क्रियान्वयन प्रारम्भ हुआ। यह देखकर निजामशाही राज्य में स्थित दौलताबाद के निकटवर्ती प्रदेश में राजू दक्खनी ने मुगलो का सामना करने के लिये अपने पताका के नीचे सहस्त्र मराठों को एकत्र किया। इसी समय निजामशाही राज्य के पतन को रोकने के लिए तथा उसे पुनर्जिवित करने के लिए 'मलिकअम्बर' नामक हब्शी ने भविष्य में मुगलों के आक्रमणों को विफल बनाने के लिए वृहद कार्यक्रम अपनाया। उसने न केवल निजामशाही सेना का नेतृत्व किया वरन् मराठों को सैनिक शिक्षा देकर उन्हें 'गुरिल्ला पद्धति' से युद्ध करने में सक्षम बनाकर मुगलों से लोहा लेना प्रारम्भ किया। उसकी सेना में मराठा टुकडियों के लिए विशेष स्थान था, जिन्हें 'वार्गी' कहा जाता था। पिछली एक शताब्दी में अर्थात 15वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर उसके अत तक मराठों ने अत्यधिक प्रगति कर अपना राजनीतिक अस्तित्व स्थापित कर लिया था। मराठा सरदारो के हाथो में जुनेर, जोन, लोहगढ, तुग, खेरदुर्ग, मोरागन, निकोना, माहोली, पाली, चाकन, खेलना इत्यादि दुर्ग थे। निजामशाही राज्य की स्थापना 1490 ई0 में होते ही इसके सस्थापक अहमद निजामशाह ने इन दुर्गों के मराठा सरदारों को अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया और उन्हें अपने सेवा में ले लिया।[21] मराठा सरदार उसके आकर्षक व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसकी अत्यधिक सैनिक सहायता नव-राज्य के विस्तार एव सगठन में की। अहमद निजामशाह ने मराठा सरदारों को दूरस्थ दुर्गो

---

21 सैयद अली तबातबाई,-बुरहान-ए-मासीर, पृ0 240,

- प्रो0 राधेश्याम,- द रोल आफ द मराठाज् इन द निजामशाही किंगडम आफ अहमदनगर (मराठा हिस्ट्री सेमीनार, पूना) (अप्रकाशित)

का नायकबाड नियुक्त किया और उन्हें उनकी योग्यतानुसार पद देकर सम्मानित किया। उसके उत्तराधिकारी वुरहान निजामशाह प्रथम ने महात्वाकाक्षी अमीरों पर अकुश लगाने के हेतु 'दनैया जयसिंह' नामक मराठा सरदार की सहायता ली। अपने को अजीजुलमुल्क के हाथों से बचाने के उपरान्त बुरहान निजामशाह ने अपने अमीर-वर्ग के विभिन्न जातीय-तत्वों को सतुलित करने हेतु मराठा सरदारों को अपनी सेवा में लेना प्रारम्भ किया। 1529 में उसने पेशवा के महान पद पर कुँवरसेन, को नियुक्त किया। यह प्रथम अवसर था जबकि किसी मराठे को निज़ामशाही राज्यतत्र में इतना सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ। बुरहान निजामशाह की मराठों के प्रति उदारनीति के कारण अनेक मराठा सरदार न केवल राजभक्त हो गये वरन् वे अपने उज्ज्वलमयी भविष्य के लिए निज़ामशाहियोंकी ओर देखने लगे। बुरहान निजामशाह प्रथम की गुजरात के शासक बहादुरशाह के साथ भेंट में 'साबाजी' नामक मराठा सरदार ने बडी सहायता की। बाद में साबा जी को 'प्रतापराय' की उपाधि से सम्मानित किया गया।[22] गलना के मराठा सरदार 'बहारजीऊ', बुरहान निजामशाह के प्रति बराबर स्वामिभक्त बना रहा। सक्षेप में प्रतापराय, मियाराजा तथा बहारजीऊ, बुरहान निजामशाह प्रथम के मुख्य परामर्शदाता थे।[23] इसके अतिरिक्त अपने राज्य काल में बुरहान निजामशाह ने अनेक मराठों को अनुदान में भूमि दी, उन्हें दुर्ग-रक्षक नियुक्त किया तथा परामर्शदाता समिति में यथोचित् स्थान दिया। बुरहान निजामशाह प्रथम के उत्तराधिकारी हुसैन निजामशाह के समय उसका मुख्य परामर्शदाता सूरजराय था।[24]

---

22 सैयद अली तबातबाई,- बुरहान- ए-मासीर पृ0 280-81

23 सैयद अली तबातबाई, बुरहाने मासीर, पृ0 360

24 सैयद अली तबातबाई, बुरहाने मासीर, पृ0 381,

हुसैन निजामशाह प्रथम के समय माधोराय, उसके तोपखाने का प्रबधक था। जिसने गुलबर्गा के दुर्ग की घेराबदी करने में विशेष भूमिका निभायी[25]। कालातर में हुसैन निजामशाह ने भूपालराय को अपना वजीर नियुक्त किया।[26] यह कहा जाता है कि बाबाजी भोंसले ने हुसैन निजामशाह प्रथम के अभियानों में विशेष रूप से भाग लिया और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[27]

सैयद अली तबातबाई, फरिश्ता तथा अन्य इतिहासकारों ने राक्षस-तगडी (तथाकथित तालीकोटा) के सुप्रसिद्ध युद्ध में हुसैन निजामशाह प्रथम के नेतृत्व में भाग लेने वाले सैनिकों की जो सख्या दी है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उसके सेना में अधिकाशत मराठे थे। इस प्रकार से न केवल हुसैन निजामशाह प्रथम वरन उसके उत्तराधिकारी मुर्तजा निजामशाह प्रथम के शासनकाल में मराठों की निरन्तर उन्नति होती रही। मुर्तजा निजामशाह प्रथम के शासनकाल के अत में राजस्व एव सैनिक विभाग में इनका महत्वपूर्ण स्थान था। परन्तु शिवनेर के दुर्ग में बाघोजी नामक शक्तिशाली मराठा सरदार के रहते हुए भी अभी तक वह समय नही आया था कि मराठे निजामशाही राजनीति में सयुक्त होकर सक्रिय भूमिका निभा सके। मुर्तजानिजामशाह प्रथम की मृत्योपरात जब धीरे-धीरे निज़ामशाही राज्य पतन की ओर उन्मुख होने लगा तो मराठा सरदारों ने स्वतत्र मार्ग अपनाकर अपनी स्वतत्रता का मार्ग प्रशस्त करने का निर्णय लिया।

---

25 सैयद अली तबातबाई, बुरहाने मासीर, पृ0 394,

26 सैयद अली तबातबाई, बुरहाने मासीर, पृ0 399,

27 बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट भाग 1, पृ0 51

उत्तरी-भारत की ओर से मुगलों के दबाव तथा दक्षिण की ओर से बीजापुर के शासक की सेनाओ के दबाव को देखकर निजामशाहियो को मराठा सरदारो पर निर्भर होना पडा। 1595-96 में मुगलों द्वारा अहमदनगर के दुर्ग की घेराबदी के समय 'मालोजी' तथा बीठ्ठोजी अपनी विशाल सेनाओं के साथ देवगिरि अर्थात दौलताबाद की ओर दो कारणों से कूच किया, प्रथमत - वे मुगलों को अपने वतन से दूर रखना चाहते थे, दूसरे-वे यह नही चाहते थे कि दक्षिण में मुगलों का विकास हो, अन्य शब्दों में अपनी भूमि पर अतिक्रमण को वे कदापि सहन नही कर सकते थे। इसी समय अपने राज्य की रक्षा करने हेतु निजामशाहियों को मराठा सरदारो को बडी बडी महत्वपूर्ण जागीरें प्रदान करनी पडी। वास्तव में, निजामशाहियों की क्षति मराठो के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई।

द्वितीय अध्याय

"मुग़ल अमीर-वर्ग में मराठों का प्रवेश"

(1601-1627)

अध्याय (2)

उपरोक्त विवरण से ज्ञात होता है कि किस भाँति मराठों का उत्थान हुआ और राजनीति में उनकी क्या भूमिका रही। 17वी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में मुगल-निजामशाही सघर्ष में 'बैंकोजी कोली' जो कि सुविख्यात मराठा सरदार था, ने विशिष्ट भूमिका निभाई। अहमदनगर के दुर्ग की रक्षा हेतु मिया मजू, इखलास खाँ और उनके पश्चात राजूदक्खनी तथा मलिकअम्बर ने मराठों से विशेष रुप से सहायता प्राप्त की। अहमदनगर के दुर्ग के पतन के उपरान्त कुछ समय के लिए निजामशाही राज्य ही नही वरन् मराठा सरदार छिन्न-भिन्न हो गये। ऐसी स्थिति में मराठों को पुन एकत्रित करने के लिए एक नेता की आवश्यकता थी जो उनकी शक्ति का प्रयोग करके अपने आदर्शों की पूर्ति कर सके। शीघ्र ही उन्हे मलिक अम्बर का नेतृत्व प्राप्त हुआ। मलिकअम्बर साहसी, वीर, महत्वाकाक्षी था। वह जीर्ण-शीर्ण निजामशाही राज्य का पुनरुत्थान करने के लिए कृत सकल्प था। उसके नेतृत्व में मराठों को राजस्व प्रशासन तथा सैनिक-व्यवस्था का पूर्णरुपेण ज्ञान प्राप्त हुआ और कुछ समय के लिए वे मलिकअम्बर के अन्तर्गत निजामशाही राज्य के आधार-स्तम्भ बन गये और निजामशाही अमीर-वर्ग में उन्होंने अपने लिए महत्वपूर्ण स्थान बना लिया।

1601 तथा 1620 के मध्य जिस समय मलिकअम्बर निजामशाही राज्य के पुनरुत्थान मे लगा हुआ था। अनेक मराठा परिवारों को उन्नति करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन मराठा परिवारो मे से भोंसले तथा जाधव जाति के मराठा परिवारों ने निजामशाही राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाई।[1] वहमनी राजनीति मे जो भूमिका सिन्धखेड के जाधवो ने निभाई थी वही भूमिका इस काल मे भोसलो ने निभाई। यह

---

1 जी एस सरदेसाई, न्यू हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 46-47

कहा जाता है कि वे प्राचीन घोरपडो के वशज् थे। कालान्तर में वे महाराष्ट्र में 'वरुल' के समीप बस गये और उन्हे वहाँ की 'पाटिलगीरी' प्राप्त हो गई।[2] भीमा व गोदावरी के मध्य स्थित 'वरुल' जो कि दौलताबाद के निकट था, में वे धीरे-धीरे प्रभावशाली हो गये और उन्होंने अपने लिए वहाँ एक वतन जागीर स्थापित कर लिये। निजामशाही राज्य के अधोपतन का उन्होने लाभ उठाया। लगभग 49 वर्ष वरुल में रहने के उपरात और वहाँ कृषक का जीवन व्यतीत करने के उपरान्त मालोजी भोंसले अपने भाइयों को लेकर सिन्धखेड के जाधवराव की सेवा में भर्ती हुआ। यहाँ मालोजी व उसके भाईयों ने अत्यधिक ख्याति प्राप्त की और सरदार अथवा अमीर का स्तर प्राप्त करने के उपरात जाधवराव की सेवा छोड दी। मालोजी ने पूना पहुँचकर वहाँ भीमा नदी से लेकर सह्याद्रि की पर्वतश्रृखलाओ तक एक भू-भाग पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसने बैंकोजी निंबाल्कर की बहन 'उमा' से विवाह किया। बैंकोजी निम्बालकर की सहायता से वह अत्यधिक शक्तिशाली हो गया। शीघ्र ही अनेक मराठा सरदारों ने उसका नेतृत्व स्वीकार किया। उसने इन मराठा सरदारों के सहयोग से निजामशाही राज्य के दक्षिण में आदिलशाही राज्य का एक भूभाग अपने अधिकार में ले लिया। सन् 1601 से 1605 तक भोंसलों तथा जादवों ने मलिकअम्बर की सहायता मुगलों के विरुद्ध की। मुगलों के विरुद्ध मलिक अम्बर की सहायता करने वालो में जादवराव, बाबाजीकाटे, मालोजी एव विठ्ठोजी, ऊदाजीराम ब्राह्मण, (माहुर के) थे। 1605 में बीजापुर के आदिलशाहियों के साथ युद्ध करते समय मालोजी की इन्दापुर मे मृत्यु हो गयी।[3] इसके उपरान्त उसके भाई बिठ्ठोजी ने अपने भतीजो - शाहजी तथा शरीफ जी का पालन-पोषण किया। विठ्ठोजी ने मुर्तजा निजामशाह द्वितीय से एलोरा के परगने, धीरादी, कन्धार तथा जफराबाद, दौलताबाद तथा

---

2 जी एम सरदेसाई, न्यू हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 46

3 बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट भाग 1, पृ0 53

अहमदनगर के कुछ जिले जागीर में प्राप्त ही नही किये वरन् अपने भाई माल्ोजी की जागीर भी प्राप्त कर ली । (1606 A D)[4] इसके पश्चात् बिठ्ठोजी के सम्बन्ध में कोई जानकारी प्राप्त नही होती (1610 ई)

सम्राट अकबर के मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र जहाँगीर गद्दी पर बैठा। 1605 से लेकर 1610 तक नव सम्राट के सेनानायकों को दक्षिण में मलिकअम्बर के साथ निरन्तर सघर्ष करना पडा। इस निरन्तर सघर्ष से थककर अनेक मराठा सरदार स्वेच्छापूर्वक मलिक अम्बर का साथ छोडकर मुगल सेवा में भर्ती हो गये। वास्तव में, दक्षिण में मुगल सेनानायकों की नीति-'शत्रुओं में फूट डाला और उन पर शासन करो की थी'। मुगल सेनानायकों ने इस नीति का अनुसरण करते हुए शक्तिशाली मराठा सरदारों को प्रलोभन दिये। उन्हें अपने-अपने वतन में बने रहने की छूट दी और उन्हें मनसब, जागीरें, तथा सम्मान-सूचक-चिन्ह देकर उन्हें अपने प्रति स्वामिभक्त बनाये रखने की चेष्टा की। परिणामस्वरुप जादवराव, ऊदाजीराम, बाबा काटे, आदि मराठा सरदार निजामशाहियो का साथ छोडकर मुगलों की सेवा में चले गये। बालापुर मे शाहनवाजखा ने उपरोक्त मराठा सरदारों का स्वागत किया। तथा धन, घोडे, हाथी, खिलअतें इत्यादि उनकी योग्यतानुसार प्रदान किये।[5] इस प्रकार से मुगल अमीर-वर्ग में पहली बार मराठों को प्रवेश दिया गया। छः वर्ष पश्चात 4 फरवरी, 1606 को 'रोशनगाँव के युद्ध' में इन्ही मराठा सरदारों ने मुगलो को सहयोग दिया और मलिकअम्बर व उसके निजामशाही सेनाओं को युद्ध में बुरी तरह से पराजित किया। जहाँ तक भोसलों का प्रश्न था, वे किसी मूल्य पर मुगलो के हाथो

---

4 बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट भाग 1, पृ0 53-54

5 जहॉगीर, तुजुकेजहागीरी भाग 1, पृ0 275, 313,

ग्राट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 75

अपनी स्वामिभक्ति बेचने के लिए इच्छुक न थे। इन्ही भोसलों सरदारों की मदद से मलिक अम्बर ने मुगलों के विरुद्ध 1620 में पुन सघर्ष प्रारम्भ किया। 1620 में जाधवराव, शाहजी तथा फाल्टर के निंबाल्कर ने मलिकअम्बर की सहायता राजकुमार खुर्रम के विरुद्ध 'खिरकी' के पतन के उपरान्त युद्धों में की। 'बाहजी भोंसले' ने मुगलों के विरुद्ध युद्धों में अपनी वीरता एव साहस का प्रदर्शन किया।[6] इसी समय युवक शाहजी तथा उसके भाई शरीफ जी तथा अन्य चचेरे भाईयों ने मुगलों के विरुद्ध युद्धों में अपनी बीरता का प्रदर्शन किया और महाराष्ट्र को यवनों से सुरक्षित रखने का प्रयास किया। 1621 में जाधवराव मुगलों की सेवा छोडकर यद्यपि पुन निजामशाही सेवा में आ गया किन्तु अनेक मराठा सरदार उसे सदिग्ध दृष्टि से देखते रहे और उसे मुगलों का गुप्तचर समझते रहे। अन्तत भोंसलों तथा जाधवों में निजामशाही दरबार के बाहर सघर्ष हुआ जिसमें दोनों परिवारों के सदस्यों को क्षति पहुची। जाधवराव ने पुन निजामशाही सेवा छोड दी और वह मुगलों की सेवा में भर्ती हो गया जहाँ उसे मनसब तथा जागीरें प्राप्त हुई।[7]

1624 में 'भटबाडी के युद्ध' में मलिकअम्बर की सहायता आदिलशाही तथा मुगलों की सयुक्त सेनाओं के विरुद्ध अनेक मराठा सरदारों ने की। जिससे यह ज्ञात होता है कि इस समय तक महाराष्ट्र में अनेक मराठा सरदार प्रभावशाली एव शक्तिशाली हो गये थे।

उपरोक्त विवरण से मराठों के क्रमश उत्कर्ष की जानकारी प्राप्त होती है। 1347 से लेकर 1490 ई0 तक के दीर्घकाल में गिने-चुने मराठा सरदारों का ही उत्थान हुआ था। निजामशाही राज्य की स्थापना के उपरान्त अनेक अन्य मराठों को भी उन्नति

---

6 बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट भाग 1, पृ0 61, रानाडे, राइज आफ मराठा पावर, पृ0 40

7 शिवभारत, सर्ग 4, पृ0 1-9, बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट भाग 1, पृ0 62-63

करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अहमदनगर के दुर्ग को जब मुगलों ने 1600 में विजित कर लिया तो मराठों की आँखें खुली और वे अपनी भूमि की सुरक्षा के लिए व्यग्र हो उठे। मुगलों की विस्तारवादी नीति से न केवल मराठा भूमिपतियों, जागीरदारों, तथा दुर्ग-रक्षकों (सिलेहदारों) को ही आघात पहुँच सकता था, वरन् उनकी उन्नति के सभी मार्ग अवरुद्ध हो सकते थे। अत उनके लिए मुगलों के साथ सघर्ष करना अनिवार्य हो गया। लेकिन उनमें से अनेक मराठा सरदार और उनके परिवार मुगलों का स्वागत और उनकी सेवा करने के लिए आतुर थे। जाधवराव उनमे से एक था। दूसरी ओर, यद्यपि सम्राट अकबर की नीति मराठों को मुगल अमीर-वर्ग में लेने की न थी परन्तु उसका पुत्र एव उत्तराधिकारी जहाँगीर मराठों का उपयोग विद्रोही मराठों के ही विरुद्ध करने में विश्वास रखता था, इसीलिए ही 1610 के पश्चात उसने मराठा सरदारो को मुगल अमीर-वर्ग में प्रवेश देकर उसे व्यापक बना दिया। यह कहना कठिन है कि जहाँगीर के समय 500 और उससे ऊपर के श्रेणी के मनसबदारों में मराठा अमीरों की सख्या कितनी थी। परन्तु यह निश्चय ही कहा जा सकता है कि मुगल अमीर-वर्ग का एक भाग मराठा अमीर-वर्ग भी था।

तृतीय अध्याय

"शाहजहाँ कालीन मराठा अमीर-वर्ग"

अध्याय (3)

पिछले अध्याय में मुख्य मराठा (मरहटा) जातियों का क्रमश उत्कर्ष का विवरण दिया जा चुका है और यह भी बताया जा चुका है कि मुगल सम्राट अकबर के उत्तराधिकारी सम्राट जहाँगीर के समय प्रथमबार मुगल अमीर-वर्ग में मराठा सरदारों को उनकी योग्यतानुसार यथोचित् स्थान दिया गया। यह बडी आश्चर्यजनक बात है कि खानदेश व अहमदनगर के दुर्ग को विजित करने के उपरान्त सम्राट अकबर ने दक्षिणी मुसलमानों को तो अपनी सेवा में पहले की भाति लिया, परन्तु 1605 तक उसने किसी भी मराठा सरदार को शाही सेवा में नही लिया। समकालीन एव परवर्ती ऐतिहासिक ग्रथों से इस बात की पुष्टि नही होती है कि किसी भी मराठा सरदार की भर्ती मुगल सम्राट अकबर के समय शाही सेवा में हुई या उसे मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित किया गया। सम्राट जहाँगीर के मृत्योपरात दो महत्वपूर्ण तथ्य देखने को मिलते हैं, प्रथम -सम्राट जहाँगीर की तुलना में शाहजहाँ ने दक्षिण में साम्राज्य विस्तार की नीति अपनायी और उसे मराठों को अधिक से अधिक सख्या में शाही सेवा में लेना पडा। शाहजहा कालीन मनसबदारों की सूचियाँ हमें वारिस की कृति 'पादशाहनामा, लाहौरी की कृति 'पादशाहनामा (बादशाहनामा)' और मोहम्मद सालेह कम्बू की कृति 'अमल-ए-सालेह' से प्राप्त होती है। डॉ0 मनोहर सिंह राणावत ने 'शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदारों की जो सूची उपरोक्त ग्रथों के आधार पर प्रस्तुत की है उसमें 1000 से लेकर 5000 तक के मनसबदारों की विभिन्न श्रेणियों में कुल मिलाकर (30) तीस मराठा मनसबदार थे। 5000 के मनसबदारों की श्रेणी में आठ (8) मराठा मनसबदार थे, 4000 की श्रेणी में दो (2) मराठे, 3000 की श्रेणी में नौ (9) मराठा मनसबदार थे, एव 1000 व उससे ऊपर की श्रेणियों में, ग्यारह (11) मराठा मनसबदार सेवारत थे।[1] डॉ0 एम अतहर अली ने, 'औरगजेब कालीन मुगल अमीर-वर्ग'

---

1 डॉ0 मनोहर सिंह राणावत,'शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार',सूची के लिए (परिशिष्ट) देखे।

में, शाहजहाँ-कालीन मनसबदारों की कुल सख्या 437 दी है। उनके अनुसार इस सख्या में से 98 हिन्दू मनसबदार थे।[2] उनके द्वारा दी हुई सख्या से यह स्पष्ट नही होता कि उसमें से कितने मराठे थे। कुछ भी हो शाहजहाँ के शासनकाल में मराठा मनसबदारों की सख्या में निरतर वृद्धि होती रही। अपने पिता जहाँगीर की भाति दक्षिण में अपनी विस्तारवादी नीति को कार्यान्वित करने हेतु वह दक्षिण में मराठा सरदारों का प्रयोग मुगल विरोधी मराठा सरदारों के विरुद्ध करना चाहता था। इसके अतिरिक्त जैसे-जैसे निजामशाही राज्य व कोंकण पर मुगलों का दबाव बढता गया, वैसे-वैसे अनेक मराठा सरदारों ने शक्तिशाली मुगल सेनाओं का विरोध करना उचित न समझकर अपनी पैतृक जागीरों, परिवारों तथा हितों की, मुगलों की आधीनता स्वीकार कर रक्षा करना उचित समझा। उनके लिए ऐसा करना स्वाभाविक ही था। 1628 के उपरात निजामशाही राज्य के पतन की गति तीव्र हो चुकी थी। बदलती हुई परिस्थितियों में उनके सम्मुख मुगलों की सेवा में प्रविष्ट करना और मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित होना ही केवल एकमात्र विकल्प था।

अपने राज्य काल में 'सम्राट जहाँगीर' ने अनेक मराठों को भी अपने 'अमीर-वर्ग' के अन्तर्गत नियुक्त कर सम्मानित किया। तथा उन्हें उनकी निष्ठा एव योग्यता के अनुसार 'मनसब' दिये गये।

---

(2) डॉ0 एम0 अतहर अली, औरगजेब कालीन मुगल अमीर-वर्ग, पृ0-46

इस प्रकार शाही सेवा के अन्तर्गत (जहँागीर के 16वें वर्ष, 1621 ई0) में प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों में जादोंराय दक्खनी (कानसटिया)[3] 5000/5000 का मनसब प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शाही सेवा के सोलहवें - सत्रहवें वर्ष (1621-22ई0) में सम्मिलित मराठा

---

3 **निम्न विवरण को देंखें-**

जादोंराव कानसटिया, अपने को यदुवशी कहता था जिस वश में प्रसिद्ध 'कृष्ण जी' हुए हैं। वह निजामशाही राज्य का एक सरदार था। सम्राट जहँागीर के शासन काल के सोलहवें (16वें) वर्ष में जब शहजादा खुर्रम (शाहजहाँ) ने दूसरी बार दक्षिण के विद्रोहियों (जिन्होंने बिद्रोह कर बादशाही राज्य में लूट-मार करना आरम्भ कर दिया था) का दमन करने पहुचा, उसी समय जादोंराव (जो दक्षिण सेना का हरावल था) सौभाग्यवश शाहजादे (खुर्रम) की सेवा में प्रवेश किया तथा शाहजादे द्वारा सम्राट जहँागीर से आज्ञा प्राप्त कर उसे 5000 का मनसब प्रदान कर मुगल अमीर-वर्ग में ले लिया गया।

देंखे- स्रोत शाहनबाज खाँ, 'मासीर-उल-उमरा' भाग 1 पृ0-520-23,

(अनु0-अग्रेजी) वेवरिज " " " भाग 1, पृ0 717-719

(अनु0- हिन्दी) ब्रजरतनदास " " " भाग 1, पृ0 176

सरदार- ऊदाजीराम दक्खनी था।[4] 4,000 जात एव 4,000 सवार का मनसब प्रदान कर सम्मानित किया गया।[5] सम्राट जहँागीर के काल में मुगल अमीर-वर्ग में प्रवेश करने वाले मराठा मनसबदारों की सूची के लिए देखें- (परिशिष्ट सख्या-1)[6]

---

4 एव 5 - विस्तृत विवरण के लिए देखें- यह दक्षिणी ब्राहमण था। वह अपनी बुद्धिमानी के लिए प्रसिद्ध था और माहोर से मेहकर तक की भूमि पर उसने अधिकार कर लिया। सौभाग्य, चालाकी, तथा कार्य-शक्ति से मलिक अम्बर का विश्वासपात्र होकर यह ऐश्वर्यशाली भी हो गया। जहँागीर के समय में ऊदाजीराम को मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित कर चार हजारी मनसबदार बनाया गया। यह दक्षिण की सहायक सेना में रखा गया था। धूर्तता की भी इसमें कमी नही थी, इससे दक्षिण के सूबेदारों में भी इसकी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा बनी हुई थी। जब विजयी सेना दक्षिणी बालाघाट में पहुँची, तब यह, उस प्रात के विषय में अधिक जानकारी रखने के कारण तथा अपनी कुशलता के बल पर वहाँ नियुक्त किया गया। उसने प्रजा का काम इतना मन लगाकर किया कि प्रजा उसके प्रति विश्वासी बन गयी। सम्राट जहँागीर के शासनकाल के सत्रहवें वर्ष (17वें वर्ष) में शहजादा शाहजहाँ बगाल जाने के निमित्त बुरहानपुर से माहोर आया। दक्षिण के सरदारों के साथ इसकी केवल औपचारिक मित्रता नही थी, अतएव वहाँ से प्रस्थान करते समय आवश्यक सामग्री अपने साथ ले, शेष को ऊदाजीराम के सरक्षण में माहोर दुर्ग में रख छोडा। वह (ऊदाजीराम ने) मुगल साम्राज्य की सेवा में भलीभाँति लगा रहा जिसके कारण महावतखा ने उसकी प्रतिष्ठा में दिनोदिन वृद्धि की।

स्रोत शाहनबाज खा, मासीर-उल-उमरा भाग 1, पृ0 142-145, (अनु0-अग्रेजी) बेवरिज भाग 1 पृ0 967, (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0-81-82।

6 देंखे- (परिशिष्ट सख्या, 1)

अपने शासन काल (1627-1658 ई0) में सम्राट शाहजहाँ ने अनेक मराठा सरदारों को मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित कर, उन्हें उनकी निष्ठा एव योग्यतानुसार मनसब प्रदान कर सम्मानित किया। शाही सेवा में सम्मिलित हुए मराठा मनसबदारों का निम्नलिखित विवरण है- शाही सेवा के प्रथम, द्वितीय वर्ष (1627-28 में मुगल अमीर-वर्ग में प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों में-

जादवराव कानसटिया[7] 5,000/ 5,000

ऊदाजीराम दक्खनी[8] 4,000/ 4,000

यशवतराव दक्खनी[9] - 2000 जात/ 1000 सवार

---

7 सम्राट जहाँगीर के 16वें वर्ष में शहजादा खुर्रम की सेवा में आकर 5000 का मनसबदार बना रहा। उसका सेवाभाव शाहजहाँ के प्रथम वर्ष में भी पूर्ववत बना रहा।

देंखें, शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु अग्रेजी) बेवरिज, भाग 1, पृ0 717-719 पर, (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास, भाग 1, पृ0 176 पर, मुशी देवी प्रसाद कृत- शाहजहाँनामा (उद्धृत) रघुबीर सिंह एव मनोहर सिंह राणावत, पृ0- 49 पर।

8 सम्राट शाहजहाँ के शासन के प्रथम वर्ष में यह पूर्ण निष्ठा से पूर्व प्राप्त मनसब के तहत् बादशाही सेवारत रहा। तीसरे वर्ष इसका 5000 का मनसब हो गया।

स्रोत- शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0 अग्रेजी) बेवरिज भाग, 1, पृ0-967 पर, (अनु0 हिन्दी), ब्रजरतनदास, भाग 1, पृ0- 81-82 पर, मुशी देवीप्रसाद कृत-शाहजहाँनामा (उद्धृत) रघुबीर सिंह व मनोहर सिह राणावत, पृ0-49 पर।

9 लाहौरी कृत-बादशाहनामा, भाग 1, पृ0 183 (उद्धृत) एम0 अतहर अली द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0- 100, मुशी देवी प्रसाद कृत -शाहजहाँनामा (उद्धृत) डा0 रघुबीर सिंह व मनोहर सिंह राणावत, पृ0-49 पर

लन्गू पण्डित[10] - 200 जात/ 20 सवार

विठूजी भौंसले[11] - 100 जात/ 20 सवार

वेनतराम[12] - 100 जात/ 5 सवार वेनतराम का पुत्र मकूजी[13] -40 जात/ 5 सवार

खिलोजी (खेलूजी) भौंसला[14] - 5000 जात/ 5000 सवार

---

10 , 11 एव 12 के लिये देखें -

'आन्ध्र प्रदेश आकाईब्स, हैदराबाद (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आप इम्पायर, पृ0-104 पर।

13 पृ0-30 "(Hyd) (उद्धृत)- (पृ0 30) -पृ0-105 पर।

14 लाहौरी कृत - बादशाहनामा भाग 1, पृ0-293 (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-107 पर।

विस्तृत बिवरण में - खेलू जी भौंसला, शाहजहा के राज्यकाल के प्रथम वर्ष में मुगल सेवा में सम्मिलित होने की इच्छा से निजामशाह की सेवा छोडकर आया। शाहजहाँ ने इन्हें 5000 का मनसब प्रदान कर साथ ही अन्य सम्मानसूचक-चिन्ह आदि देकर पूरा आदर दिया। इस प्रकार खेलू जी, मुगल अमीर-वर्ग में शामिल हो, दक्षिण के नियुक्त मुगल सरदारो में नियुक्त होकर बादशाही कार्य में प्रयत्नशील हुआ। इसके साथ यद्यपि उसके दो भाई- मालोजी एव परसो जी भी थे, जो बाद में सम्राट शाहजहाँ द्वारा उच्च-मनसब एव सम्मान प्राप्त कर मुगल अमीर-वर्ग में प्रवेश किये।

स्रोत- शाहनबाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास, भाग 1, पृ0-304 पर, मुशी देवीप्रसाद, शाहजहाँनामा (उद्धृत) रघुबीर सिंह व मनोहर सिंह राणावत, पृ0-52पर।

शाही सेवा में, दूसरे एव तीसर वर्ष (1629-30) में प्रवेश करने वाले मराठा मनसबदारों में-

खेलू जी के भाई परसो जी[15] - 3000 जात/1500 सवार

रावतराय दक्खनी[16] - 2000 जात/ 1500 सवार

मालूजी (मालोजी)[17] - 5000 जात/ 5000 सवार

मन्कूजी दक्खनी[18] - 3000 जात/1500 सवार

हाबा जी[19] - 2000 जात/ 800 सवार

जादौराव के पुत्र अचला जी[20] - 3000 जात/ 1000 सवार

---

15 लाहौरी कृत- बादशाहनामा, भाग 1, पृ0-256 (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-105 पर, मुशी देवी प्रसाद, बादशाहनामा (उद्धृत) डा0 रघुबीर सिंह व मनोहर सिंह राणावत, पृ0-54 पर, शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0-हिन्दी) ब्रजरतनदास भाग 1 पृ0-306 पर,

16 लाहौरी कृत- बादशाहनामा, भाग 1, पृ0-288 (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-107 पर,

17 लाहौरी कृत- बादशाहनामा, भाग 1, पृ0-296 (उद्धृत) (पू0 उ0) एम0 पृ0 107 पर,

18 पू0 उ0, पृ0-306 पर (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-109 पर देखें।

19 पू0 उ0, पृ0-306 पर (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-109 पर देखें।

20 कजविनी, बादशाहनामा, पृ0-194(ब), (पू0 उ0), पृ0-109 पर देखें।

जादोंराव के पुत्र रघू जी[21] - 3000 जात/ 1000 सवार

जादोराव का पौत्र यशवतराव[22] - 3000 जात/ 1500 सवार

अनीराम सनीता[23] - 2000 जात/ 1000 सवार

एलू जी[24] - 1500 जात/ 750 सवार

शाही सेवा के तीसरे चौथे वर्ष (1630-31ई0) में आये हुए मराठा सरदारों में-

तेलगराय जदुनाथराय मराठा[25] - 3000/ 1500

---

21 पू0 उ0, पृ0-194(ब), (पू0 उ0), पृ0-109 पर देखें।

22 पू0 उ0, पृ0-194(ब), (पू0 उ0), पृ0-109 पर देखें।

विस्तृत विवरण में - शाहजहाँ के शासनकाल के तीसरे वर्ष (1629ई0) में जब बुरहानपुर में शाति स्थापित हो गयी तब जादोराव मुगल सेवा छोडकर अपने पुत्र पौत्रादि सहित निजामशाही राज्य में चला गया। वहाँ पर उसे कडा विरोध का सामना करना पडा तथा निजामशाह भी उसके प्रति शकालु हो चुका था। फलत विद्रोहात्मक सघर्ष के दौरान वह पुत्रादि सहित मृत्यु को प्राप्त हुआ। स्रोत शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0) ब्रजरतनदास, भाग 1,पृ0-176-77 पर।

23 कजविनी, बादशाहनामा, पृ0-203 (ब) (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-110 पर।

24 पू0 उ0, पृ0-203 (ब), (पू0 उ0), पृ0-110 पर।

25 लाहौरी भाग 1,पृ0-310 (उद्धृत), एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर पृ0-110 पर।

नाऊजी बारबेराय सिंधिया[26] - 2000/ 1000

बेतू जी[27] - 2000/ 1000

शाहजी भोंसला (साहूजी)[28] - 5000/ 5000

---

26 लाहौरी भाग 1,पृ0-315, (पू0 30),पृ0- 110 पर।

27 लाहौरी भाग 1,पृ0-310, (पू0 30),पृ0- 110 पर।

28 लाहौरी भाग 1,पृ0-327, (पू0 30),पृ0- 111 पर।

विस्तृत विवरण में -

शाहजी भोंसले के पूर्वजों के सम्बध में कहा जाता है कि वे चित्तौड के सिसोदियों से सम्बधित थे। यह विदित है कि सूरसेन सिसोदिया किन्ही कारणों से चित्तौड से पलायन कर दक्षिण पहुँचा। वहाँ पहुचकर उसने (काकाजी) औरगाबाद प्रात के अन्तर्गत परेंदा सरकार के करकनब परगने के 'भोंसा ग्राम' में रहा। उसने उपनाम 'भोंसला' रखा। तभी से उसके वशज् भोंसले कहलाये। सूरसेन के पूर्वज भी दक्षिण में रहते थे। उनमें से एक 'दादाजी भोंसला' था, वह मौजा हकनी और वुद्धि देवलगाव परगना पूना के कुछ अशों में रहता था। उनके दो पुत्र थे- मालो जी एव विठ्ठोजी। कालान्तर में वे दौलताबाद जाकर बस गये, जहाँ वे खेती करते थे। तत्पश्चात वे निज़ामशाही अमीर 'लक्खीजादो'जो की सिंदखेड में था, की सेवा में चले गये। पूर्वोक्त बिठोजी के आठ पुत्र थे। जिनमें दो पुत्र खोलोजी और पन्नाजी थे। उसके भाई मालो जी को केवल दो पुत्र शाहजी तथा शरीफ जी हुए। लक्खीजादों की शाहजी पर विशेष कृपा थी। उसने अपनी पुत्री का विवाह शाहजी से कर दिया।

विस्तृत विवरण हेतु देखें-

शाहनबाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास, मासीरेउमरा भाग 1, पृ0-409-10 पर, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ मराठा भाग 1 पृ0- 63-68 एव 88-90, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0-33-45, जादुनाथ सरकार, हाउस आफ शिवाजी, (अनु0)पृ0- 24-25, एच0 के0 शेरवानी, मेडिवल्स डेकन भाग 1

साहूजी के भाई मीनाजी[29] - 3000/ 1500

साहूजी के पुत्र शम्भा जी[30] - 2000/ 1000

शाही सेवा में, चौथे- पाँचवे वर्ष 1631 से 1633 में आये मराठा सरदारों में-

जादोंराव के पुत्र बहादुर जी[31] - 5000/ 5000

जादोराव के भाई जगदेवराव[32] - 4000/ 3000

---

29 लाहौरी कृत - पादशाहनामा, भाग 1, पृ0-328 (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-111 पर,

30 लाहौरी I, पृ0-332 (उद्धृत) (पू0 उ0)पृ0-111 पर

31 लाहौरी I, पृ0-400 (उद्धृत) (पू0 उ0)पृ0-115 पर, **विस्तृत विवरण देखें**- शाहजहाँ के शासन काल के तीसरे वर्ष में जब बुरहानपुर में शाति स्थापित हो गई, तब जादोराव शाही सेवा छोडकर पुत्रादि सहित निजामशाही राज्य में चला गया। वहा उसे निजामशाही दरबार के एक षडयत्र का सामना करना पडा। जिसके तहत जादोराव अपने दो पुत्र अचल एव राघों तथा युवराज पौत्र यशवतराव के साथ मारा गया। उसके मृत्योपरात उसके उत्तराधिकारियों को शाही सेवा (मुगल दरबार में) के चौथे-पाचवें वर्ष में, सम्मान सहित बुलाकर प्रत्येक के लिए अच्छा मनसब देकर सम्मानित किया गया।

स्रोत - बादशाहनामा भाग 1, पृ0-308, इलियट एण्ड डाऊसन जिल्द 7, पृ0- 10 - 11 पर, शाहनवाज खाँ, मासीर - उल - उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0- 177-78।

32 लाहौरी I, पृ0-297 (ब), (पू0 उ0, पृ0-119 पर।

यशवतराव का भाई पतगराव[33] - 3000/1500

शाही सेवा के छठे वर्ष (1633-34 ई0) में आये मराठा मनसबदारों में-

ऊदाजीराम का पुत्र जगजीवन [34] - 3000/ 2000

धाना जी (धन्नाजी) के पुत्र पतगराव[35] - 150/ 100

यशवतराव मीनाजी[36] - 3000/ 2000

निर्मलराय[37] - 1500/ 700

पीतम जी[38] - 300/ 100

हैयबतराय[39] - 300/ 100

---

33 कजविनी, 332 (अ) (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-123 पर, (शाहनवाज खा, मासीर-उल-उमरा- (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0- 178,

34 लाहौरी कृत- बादशाहनामा, भाग 1, पृ0-510 (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-122 पर,

35 कजवीनी, पृ0- 322 (अ) (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-123 पर।

36 सेलेक्टेड डाक्यूमेंट्स आफ औरगजेब्स रेन, पृ0-1-2 पर (उद्धृत) एम0 अतहर अली, (पू0 उ0), पृ0-123 पर,

37 (पू0 उ0)-पृ0-2, (उद्धृत) (पू0 उ0), एम0 अतहर अली, पृ0- 123 पर

38 (पू0 उ0)-पृ0-2, (उद्धृत) (पू0 उ0), एम0 अतहर अली, पृ0- 123 पर

39 (पू0 उ0)-पृ0-2, (उद्धृत) (पू0 उ0), एम0 अतहर अली पृ0- 123 पर

जासनराय[40] - 100/ 50

शाही सेना में सातवें वर्ष (1634-35) में प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों में-

हम्मीरराय (हम्मबीरराव) दक्खनी[41] - 4000/ 2500

शाही सेवा में आठवें वर्ष (1635-36) में आये हुए मराठा सरदारों में-

धन्ना जी देशमुख[42] -700/500,

तानाजी[43] - 2000/ 1000

गम्भीरराव मराठा[44] - 2000/ 1000 थे।

पुन शाही सेवा में नवें वर्ष (1636-37) में आये मराठा सरदारों में-

दादाजी[45] - 3000/ 1000,

चकबीजी के पुत्र अजूजी[46] - 250/50

---

40 (पू0 उ0)-पृ0-2, (उद्धृत) (पू0 उ0), एम0 अतहर अली, पृ0- 123 पर

41 लाहौरी कृत- बादशाहनामा, भाग 1, पृ0-297(ब) (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-128 पर,

42 सेलेक्टेड डाक्यूमेंटस आफ शाहजहान रेन, पृ0-20 पर (उद्धृत), (पू0 उ0), पृ0-129 पर।

43 (पू0 उ0) भाग-1,पृ0-121, (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-132 पर

44 कजविनी कृत- बादशाहनामा, पृ0-368(ब),(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-134,

45 (पू0 उ0) भाग-1,पृ0-209, (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-136 पर,

46 आन्ध्र प्रदेश आर्चिम्स, हैदराबाद (एच0 वाई0 डी0)- 24/9 (उद्धृत) (पू0 उ0), एम0 अतहर अली (अप्रेटस), पृ0-139 पर।

हम्मीरराव के पुत्र यशवतराव[47] - 400/10,

अचला जी के पुत्र बिठ्ठो जी[48] -2000/ 1000,

सामूजी खानखार के पुत्र शकर जी[49] -500/200,

जाकूजी[50] 20/10

शाही सेवा में दसवें वर्ष (1637-38) के अर्न्तगत आये मराठा सरदारों में-

महिपतराय[51] - 400/200,

जादो दक्खनी[52]- 3000/1500, बहादुर जी दक्खनी के पुत्र दायाजी (दत्ताजी)[53]-3000 / 1000,

---

47 (पू0 उ0),24/11 (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-139 पर

48 (पू0 उ0) -24/7(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-139 पर,

49 (पू0 उ0) -24/10, (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-139 पर,

50 (पू0 उ0) -27 (उद्धृत), एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-139पर।

51 सेलेक्टेड डाक्यूमेंट आफ शाहजहान रेन, पृ0-31-32 (पू0 उ0)पृ0- 134 पर

52 (पू0 उ0),पृ0-34, (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-134 पर

53 (पू0 उ0),पृ0-34, (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-134 पर ,

विवरण में - शाही सेवा के आठवें वर्ष जब बहादुर जी दक्खनी की मृत्यु हो गयी, तब उसके पुत्र 'दत्ताजी' को (उपरोक्त) मनसब मिला। मुगल सेवारत यह प्रमुख मराठा सरदार 'आलमगीर' के समय दिलेरख़ा के साथ मराठों के विरुद्ध हुए युद्ध में मारा गया।

स्रोत· शाहनवाज खा, मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी), ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0-178 पर।

रुस्तमराय[54] - 2000/1000,

रानाजी या रावतजी दक्खनी का भाई रायबा[55] - 1500/600,

बिजय इतीबारराय[56] - 1000/400,

गणेशराय[57] - 2000/800,

शिवाजी हनुमन्त[58] - 500/80,

जगन्नाथमल[59] - 100/20,

माद्राजी मराठा[60] - 100/40,

मालूजीबीर के पुत्र मालूजी[61] - 400/180

मालूजी वीर के पुत्र यासाजी[62] - 200/130,

मालूजी वीर के पुत्र ईसारदास[63] - 80/15,

---

54 (पू0 उ0), पृ0-34 (उद्धृत), एम0 अतहर अली - अप्रेटस, पृ0-134 पर।

55 (पू0 उ0),पृ0-34, (पू0 उ0)-134 पर।

56 (पू0 उ0),पृ0-34, (पू0 उ0)-134 पर।

57 (पू0 उ0),पृ0-34, (पू0 उ0)-134 पर।

58 (पू0 उ0),पृ0-35, (पू0 उ0)-135 पर।

59 (पू0 उ0),पृ0-36, (पू0 उ0)-135 पर।

60 (पू0 उ0),पृ0-47, (पू0 उ0)-135 पर।

61 (पू0 उ0),पृ0-58, (पू0 उ0)-135 पर।

62 (पू0 उ0),पृ0-58, (पू0 उ0)-135 पर।

63 (पू0 उ0),पृ0-58, (पू0 उ0)-135 पर।

सम्भाजी[64] - 200/100,

खाण्डूजी[65] - 150/60,

मालूजी का पुत्र मानूजी[66] - 400/160,

याशाजी[67] - 200/130

शाही सेवा में, ग्यारहवें वर्ष (1638-39) के अर्न्तगत आये मराठा सरदारों में-

जानाजी दातिया[68] - 200/100,

बहारजी[69] - 3000/2500

शाही सेवा में बारहवें वर्ष- (1639-40) में शामिल हुए मराठा सरदारों में-

मन्कूजी दक्खनी[70] - 400/100,

नानाजी दातिया (जमीदार मल्कापुर)[71] - 200/100,

भजनराय दक्खनी[72] - 3000/1000,

---

64 (पू0 उ0),पृ0-58, (पू0 उ0)-136 पर।

65 (पू0 उ0),पृ0-58, (पू0 उ0)-136 पर।

66 (पू0 उ0), (Hyd),पृ0-69, (पू0 उ0)-158 पर।

67 (पू0 उ0), (Hyd),पृ0-69, (पू0 उ0)-158 पर।

68 (पू0 उ0), (Hyd),4492/9 (उद्धृत) एम0 अतहर अली, अप्रेटस- पृ0 163 पर।

69 लाहौरी भाग II, पृ0-108, (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-164 पर

70 (पू0 उ0) (Hyd),157/2,(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-171 पर

71 (पू0 उ0) (Hyd),157/4,(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-171 पर,

72 (पू0 उ0) (Hyd),157/8,(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-172 पर,

शारजाराव खावा[73] - 1500/600,

किशोर जी[74] - 80/15,

शाही सेवा में तेरहवें वर्ष (1640-41) में आये मराठा सरदारों में-
चन्दनराव[75] - 100/10,

धन्नाजी देशमुख[76] - 500/500,

हिम्मतराय[77] - 500/300,

शाही सेवा में, चौदहवें वर्ष(1641-42) में आये मराठा सरदारों में- सीरजी धनकर[78] - 500/300,

शुला गोरी[79] -500/200,

शाही सेवा में पन्द्रहवें वर्ष (1642-43) के अन्तर्गत आये हुए मराठा सरदारों में-

खाण्डेय् राव[80] - 1000/600 था।

---

73 (पू0 उ0) (Hyd),157/8,(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-172 पर,

74 (Hyd),143,(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-174 पर,

75 (Hyd),161,(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-178 पर,

76 (Hyd),196,(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-179 पर,

77 (Hyd),199 (उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-179 पर,

78 (Hyd),239,(उद्धृत) (पू0 उ0), पृ0-183 पर,

79 पू0 उ0, पृ0-239, (उद्धृत) (पू0 उ0)पृ0- 183 पर।

80 (पू0 उ0), (Hyd),पृ-250 (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0 186 पर,

शाही सेवा के - सोलहवें वर्ष - (1643-44) में आये हुए किसी भी मराठा सरदारों का उल्लेख अभी तक प्राप्त नही हुआ है, तथा सदर्भित मूल एव पाठ्य ग्रथों में भी इसकी पुष्टि नही होती है। अतएव इस वर्ष में कोई मराठा, मुगल अमीर-वर्ग में सभवत नही आये होंगे।

शाही सेवा में, सत्रहवें वर्ष (1644-45) में आये हुए मराठा सरदारों में-

रेनूजी[81] - 1000/700,

रावलनानजी[82] - 400/300,

कृष्णाजी शरजाराव[83] - 500/300,

यशवंतराय[84] -100/50,

कृष्णाजी[85] - 200/60,

सालाजी के पुत्र हरचन्दराय[86] - 500/200,

ऊदाजीराम का भाई जालीराम[87] - 300/150,

---

81 (पू0 उ0) (S D S), पृ0- 138 (उद्धृत),(पू0 उ0), पृ0-186 पर,

82 (पू0 उ0) (S D S), पृ0- 138 (उद्धृत),(पू0 उ0), पृ0-188 पर,

83 (पू0 उ0) (S D S), पृ0- 147 (उद्धृत),(पू0 उ0), पृ0-189 पर,

84 (पू0 उ0) (S D S), पृ0- 148 (उद्धृत),(पू0 उ0), पृ0-189 पर,

85 (पू0 उ0) (S D S), पृ0- 151 (उद्धृत),(पू0 उ0), पृ0-189 पर,

86 (पू0 उ0) (S D S), पृ0- 151 (उद्धृत),(पू0 उ0), पृ0-189 पर,

87 (पू0 उ0) (S D S), पृ0- 151 (उद्धृत),(पू0 उ0), पृ0-189 पर,

साभाजी[88] - 3000/2000

शाही सेवा में, अठारहवें वर्ष (1645-46) में आये हुए मराठा मनसबदारों में-

वीरजी धनकर[89] - 1000/400 था।

शाही सेवा में उन्नीसवें वर्ष, (1646-47) में आये हुए मराठा अमीरों में-

ईसा जी[90] - 200/130,

रविराय दक्खनी[91] - 2000/1000, थे।

पुन शाही सेवा में, बीसवें वर्ष (1647-48) में प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों में-

मन्कूजी बनाल्कर[92] - 3000/1500,

उदयराम दक्खनी[93] - 3000/2000,

---

88. (पू0 उ0) (Hyd), पृ0- 523 (उद्धृत), (पू0 उ0),पृ0-196 पर,

89 (पू0 उ0) (Hyd), 4174, (उद्धृत), (पू0 उ0),पृ0-204 पर,

90 (पू0 उ0) (Hyd), 4272, (उद्धृत), एम0 अतहर अली- द अप्रेटस, पृ0-208 पर

91 (पू0 उ0) (लाहौरी II) पृ0-728, (उद्धृत) (पू0 उ0) पृ0-215 पर

92 लाहौरी, II, 724, (पू0 उ0)- अप्रेटस- पृ0- 214 पर

93 (पू0 उ0),पृ0- 724, (पू0 उ0)- पृ0-214 पर

जादोंराव दक्खनी का भाई रायबा[94] - 1500/600, थे।

पुन शाही सेवा में इक्किसवें वर्ष (1648-49 में) आये मराठा सरदारो में -

कृष्णाजी भास्कर[95] - 100/20

कृष्णाजी भास्कर का भाई दत्ताजी[96] - 100/5, थे।

शाही सेवा के अन्तर्गत बाइसवें वर्ष (1649-50) में प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों में-

सालू जी के पुत्र अकूजी[97] - 500/400,

हनुमन्तराव मोहिते[98] - 500/400,

---

94 (पू0 उ0) लाहौरी II,पृ0-731, (उद्धृत)- अप्रेटस- पृ0-216 पर

विस्तृत विवरण में- सभवत सिंदखेड के जाधव बिठ्ठो जी के प्रपौत्र ओर जाधवराव (लक्खो जी) के पौत्र जादोराय (पतगराव) का भाई था, जो जीजा बाई का सगा भाई था, और जिसके पुत्र खाण्डो जी के वशज ने जाधवों को 'भुइंज' शाखा की स्थापना की थी। **स्रोत** - हिस्टारिकल॰ पृ0- 46, मासीर-उल-उमरा में या पादशाहनामा में उक्त भाई या पुत्र को मनसब दिये जाने का कोई उल्लेख नही होने के कारण इस बारे में निश्चयात्मक ढग से कुछ भी कहना सभव नही है।

(उद्धृत)- डॉ0 राणावत, शाहजहाकालीन हिन्दू मनसबदार से।

95 (पू0 उ0) (S D S),पृ0- 166 (उद्धृत) (पू0 उ0)-अप्रेटस, पृ0-230

96 (पू0 उ0) (S D S),पृ0- 169 (उद्धृत) (पू0 उ0)-अप्रेटस, पृ0-231

97 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/5,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस) पृ0-240

98 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/5,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस) पृ0-240

पारसरावनाथ के पुत्र इन्दूजी[99] - 500/200,

सम्भाजी का भाई चेतसिंह[100] - 200/100,

ऊदाजीराम का पुत्र नन्दराव[101] - 200/60,

राबाजी (रायबाजी)[102] - 100/20,

बालनाथ का पुत्र बेतूजी[103] - 100/20,

समान्कर के पुत्र रतनजी[104] - 100/20,

सारुजी दिनकर[105] - 500/200,

प्रचण्डराव[106] - 500/200,

मालूजीवीर[107] - 400/180,

मालूजी का पुत्र लहरुजी[108] - 150/30,

---

99 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/5,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस) पृ0-240

100 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/7,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-241

101 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/7,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-241

102 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/12,(उद्धृत) (पू0 उ0)(अप्रेटस)पृ0-243

103 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/13,(उद्धृत) (पू0 उ0)(अप्रेटस)पृ0-243

104 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/13,(उद्धृत)(पू0 उ0)(अप्रेटस)पृ0-244

105 (पू0 उ0)(Hyd), 2806/31,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-252

106 (पू0 उ0)(Hyd), 2806/31,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-252

107 (पू0 उ0)(Hyd), 2806/31,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-252

108 (पू0 उ0) (Hyd), 2806/32,(उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-252

दात्ताजी का पुत्र हमीरराव[109] - 100/25,

शाही सेवा के अन्तर्गत, तेइसवें वर्ष (1650-51) में प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों में -

मालूजी का पुत्र निर्मलराय[110] - 1000/600,

नीताजी[111] - 200/100,

मालूजी[112] - 500/800,

अल्याजी[113] - 200/130, थे।

शाही सेवा के अन्तर्गत चौबीसवें वर्ष (1951-52), में प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों का कोई उल्लेख, दुर्भाग्य से नही मिला है। अतएव यह सभव लगता है कि इस वर्ष कोई मराठा सरदार शाही सेवा में प्रवेश नही किया होगा।

शाही सेवा के अर्न्तगत पच्चीसवें वर्ष (1652-53) में आये हुए मराठा सरदारों का निम्न उल्लेख रहा है-

मालूजी के पुत्र सीताजी[114] - 200/100

---

109 (पू0 30) (Hyd), 2806/33,(उद्धृत) (पू0 30) (अप्रेटस)पृ0-252

110 (पू0 30) (Hyd), 4473,(उद्धृत) (पू0 30) (अप्रेटस)पृ0-256

111 (पू0 30) (Hyd), 4521,(उद्धृत) (पू0 30) (अप्रेटस)पृ0-256

112 (पू0 30) (Hyd), 4521,(उद्धृत) (पू0 30) (अप्रेटस)पृ0-262

113 (पू0 30) (Hyd), 4521,(उद्धृत) (पू0 30) (अप्रेटस)पृ0-263

114 (पू0 30) (Hyd), 4472,(उद्धृत) (पू0 30) (अप्रेटस)पृ0-270

राहूजी[115] - 100/50

सूजी[116] - 20/20,

बेतूजी[117] - 100/20,

शाही सेवा के अन्तर्गत छब्बीसवें वर्ष (1653-54) में आये किसी भी मराठा सरदार की जानकारी नही मिली है। समकालीन मूल ग्रथों एव सम्बधित उल्लेखों से भी इस अवधि में किसी मराठा सरदार का उल्लेख नही हुआ है। अतएव सभवत इस वर्ष कोई मराठा सरदार शाही सेवा में नही आये होंगे।

शाही सेवा के अन्तर्गत सत्ताइसवें वर्ष (1654-55) में प्रवेश करने वाले किसी मराठा सरदार का भी उल्लेख नही मिलता है। सदर्भित उल्लेखों एव मूलग्रथों में भी इसका उल्लेख नही मिला है। फलत सभव है इस वर्ष भी कोई मराठा सरदार मुगल सेवा में नही आया होगा।

शाही सेवा के अन्तर्गत अट्ठाइसवें वर्ष (1655-56) में आये हुए मराठा सरदारों में-

सकूजी[118] 400/80, था।

---

115 (पू0 उ0) (Hyd), 3838, (उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-274

116 (पू0 उ0) (Hyd), 3838, (उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-274

117 (पू0 उ0) (Hyd), 4079, (उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-275

118 (पू0 उ0) (Hyd), 4199, (उद्धृत) (पू0 उ0) (अप्रेटस)पृ0-298

शाही सेवा में उन्तीसवें वर्ष (1656-57) के अन्तर्गत प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों में-

दाताजी[119] - 3000/1000,

आबाजी देवैया[120] - 2000/800,

रायबा[121] - 1500/600,

मालूजी के पुत्र जीऊराजी[122] - 600/400,

रम्भाजी[123] - 500/500

दानाजी[124] - 500/500,

बीराजी के पुत्र इन्दरजी[125] - 500/150,

गगाजीराम होल्कर के पुत्र नागूजी[126] - 300/100,

यशवतराव के पुत्र नारुजी[127] - 1500/1500,

---

119 वारिस कृत - पादशाहनामा, पृ0-261(अ) (उद्धृत) एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-305 पर।

120 (पू0 उ0),262 (ब)-(उद्धृत)-(पू0 उ0)- अप्रेटस, 306 पर,

121 (पू0 उ0),263 (ब)-(उद्धृत)-(पू0 उ0)- अप्रेटस, 307 पर,

122 (पू0 उ0),269 (अ)-(उद्धृत)-(पू0 उ0)- अप्रेटस, 313 पर,

123 (पू0 उ0),269 (ब)-(उद्धृत)-(पू0 उ0)- अप्रेटस, 314 पर,

124 (पू0 उ0),269 (अ)-(उद्धृत)-(पू0 उ0)- अप्रेटस, 314 पर,

125 (पू0 उ0),270 (ब)-(उद्धृत)-(पू0 उ0)- अप्रेटस, 316 पर,

126 Hyd 4229, (उद्धृत)-(पू0 उ0)-पृ0-319पर

127 Hyd 4233, (उद्धृत),(पू0 उ0)-पृ0 319पर

नारुजी के पुत्र मानाजी[128] - 300/150,

सोहनराव[129] - 80/जात

सामजी भोंसले का पुत्र मानजी[130] " 600/600, थे।

इसी प्रकार शाही सेवा में तीसवें वर्ष (1657-58) के अन्तर्गत प्रवेश करने वाले मराठा सरदारों में-

भुजराज दक्खनी[131] - 1000/500,

मालूजी दक्खनी का भाई जीवाजी[132] - 600/400, भी थे।

इस प्रकार से शाहजहाँ के राज्यकाल (1627-1658) तक 126 मराठे, मुगल अमीर-वर्ग में लिये गये। इतनी बडी सख्या में मराठों को लिये जाने से हम यह भलीभाति कह सकते हैं कि ईरानी, तूरानी, अफगान, भारतीय मुसलमान तथा राजपूतों इत्यादि की भाति मुगल अमीर-वर्ग में जातीय-तत्व के रुप में मराठा अमीर-वर्ग का भी विशिष्ट स्थान था।

---

128 (पू0 उ0),(उद्धृत)-(पू0 उ0)-पृ0-319 पर

129 (पू0 उ0),(उद्धृत)-(पू0 उ0)-पृ0-320 पर

130 (पू0 उ0),पृ0- 4258(उद्धृत)- (पू0 उ0)-पृ0-320 पर

131 (पू0 उ0),(सालेह,III,पृ0-467),(पू0 उ0)-पृ0-332 पर

132 (पू0 उ0),(सालेह,III,पृ0-479),(पू0 उ0)-पृ0-339 पर

शाहजहाँ के राज्यकाल के विभिन्न वर्षों में मराठा मनसबदारों की सख्या घटती -बढती रही। राज्यकाल के प्रथम वर्ष (1627 - 28 में, 8 मराठा सरदार, दूसरे - तीसरे वर्ष में- 10, तीसरे-चौथे वर्ष में- 7, चौथे-पाचवे वर्ष में- 3, पाचवें एव छठवें में- 7 मराठे, सातवें वर्ष में- 1,, आठवें वर्ष - 3,, नवें वर्ष - 6, दसवें वर्ष में - 17, ग्यारहवें वर्ष - 2, बारहवें वर्ष-5, तेरहवें वर्ष में- 3, चौदहवें वर्ष में-2, पन्द्रहवें वर्ष में-1, सोलहवें वर्ष में- (कोई नहीं), सत्रहवें वर्ष- 8, अठारहवें वर्ष में- 1, उन्नीसवें में-2, बीसवें में -3, इक्कीसवें वर्ष में-2, बाइसवें वर्ष में-13, तेइसवें में-4, चौबीसवें वर्ष में- (कोई नही), पच्चीसवें में-4, छब्बीसवें वर्ष मे- (कोई नही), सत्ताइसवें वर्ष में- (कोई नही), अट्ठाइसवें वर्ष में-1, उन्तीसवें वर्ष में-12, तथा तीसवें वर्ष (अन्तिम वर्ष) में 2, मराठा सरदार शाही सेवा में सम्मिलित किये गये।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि जिन वर्षों में सम्राट शाहजहाँ को दक्षिण में (दक्खन) अपनी योजनाओं का कार्यान्वयन सक्रिय रुप से करना पडा, उन वर्षों में मराठा सरदारों को उच्च मनसब प्रदान कर शाही सेवा में लिया गया। उदाहरणार्थ - खानेजहाँ लोदी के विद्रोह का दमन करते समय, वर्ष 1635-36 तक निजामशाही राज्य को विजित करते समय, शाहजी भोंसले को कोंकण में उनकी जागीरों से निकालते समय तथा 1656-57 ई0 में बीजापुर व गोलकुण्डा पर राजकुमार औरगजेब द्वारा आक्रमण करते समय। अन्य शब्दों में, विजय प्राप्त करने की प्रबल अभिलाषा ने शाहजहाँ को प्रेरित किया कि वह दक्षिण में मराठा सरदारों का प्रयोग करे। जिस प्रकार से शाहजहाँ ने अन्य जाति के अमीरो तथा जमीदारों इत्यादि का उनके जातीय श्रेष्ठता, योग्यता वश आदि के आधार पर मान-सम्मान किया, उसी प्रकार से उसने उच्च श्रेणी के मराठा मनसबदारों या सरदारों का यथोचित् मान-सम्मान किया।

उन मराठा सरदारों का विवरण, जिनका मान-सम्मान उपाधियाँ सम्मान-सूचक चिन्ह आदि देकर मुगल सम्राट शाहजहाँ ने अपने राज्यकाल में किया, निम्नलिखित रहा है- इनमें, जादोराव (कानसटिया) जो कि जहाँगीर के काल में (16वें वर्ष 1621 में) शहजादा खुर्रम के दक्षिण अभियान के समय मुगल सेवा में आया, को सम्राट ने उसे शहजादा खुर्रम् का मीर-ए-समद, पदवी देकर तथा ऊँचा मनसब देकर नियुक्त किया।[133] शाही सेवा के चौथे वर्ष (1630-31) में मराठा सरदार पतगराव को उच्च मनसब के साथ 'जादोराव' की पदवी दी गयी।[134] शाही सेवा के छठे वर्ष (1633-34) में मराठा सरदार ऊदाजीराम के पुत्र जगजीवन को उच्च मनसब के साथ साथ 'ऊदाजीराम'की पदवी मिली।[135] शाही सेवा के दसवे वर्ष (1637-38) मे मराठा सरदार जगन्नाथ मल को 'पेशदस्त-ए-दीवान' के पद पर नियुक्त कर उचित मनसब देकर सम्मानित किया गया।[136]

---

133 द्वारा, इगलिश फैक्ट्रीज इन इडिया (E F I) पृ0-261 (उद्धृत), एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, 79 पर।

134 शाहनबाज खाँ, मासीर - उल - उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास, मासीर-उल-उमरा भाग 1, पृ0-178 पर

135 शाहनबाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास, मासीर-उल-उमरा भाग 1, पृ0- 83-84 पर

136 सेलेक्टेड डाक्यूमेंट्स आफ शाहजहाँ रेन (S D S) पृ0-36 (उद्धृत), एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर पृ0- 135 पर देखे।

उपरोक्त उपाधियों के साथ-साथ सम्राट शाहजहाँ ने अपने राज्यकाल मे अनेक सम्मानों, मनसबों एव जागीरों को समय-समय पर मराठा सरदारों को देकर, मुगल सेवा के प्रति निष्ठावान बनाया। उपरोक्त मराठा सरदारों, जिन्हें सम्राट द्वारा पदवियाँ देकर सम्मानित किया गया, के साथ-साथ राज्यकाल के विभिन्न वर्षों में उनकी सेवा के लिए दिये गये सम्मानो में उक्त विवरण महत्वपूर्ण हैं -

(29 जुलाई, 1628 ई0) (शाही सेवा के प्रथम वर्ष) को सम्राट शाहजहाँ द्वारा मराठा सरदार 'खिलोजी भोंसला' को 5000/5000 के उच्च मनसब के साथ-साथ आश्वासनों से पूर्ण फरमान और खिलअत, पुरस्कार, जडाऊ जमधर, नक्कारा, निशान, हाथी और सुनहरी साज का घोडा प्रदान कर सम्मानित किया गया।[137]

(28 फरवरी, 1629 ई0) को 'खिलोजी' के भाई 'परसोजी भोसला' को 3000/1500 का मनसब देकर सम्मानित किया गया।[138]

(25 जनवरी, 1630ई0) को सम्राट शाहजहाँ ने 'खिलोजी' को 50,000 व ऊदाजी राम को 40,000 रुपया नकद प्रदान किया तथा ऊदाजीराम के मनसब में 1000 सवार की बृद्धि कर उसे 5000/5000 का मनसबदार बनाया। इसी अवधि मे मालूजी को 5000/5000 का मनसब, झडा, और डका देकर सम्मानित किया गया।[139]

---

137 मुशी देवी प्रसाद कृत शाहजहानामा (उद्धृत) रघुबीर सिंह एव मनोहर सिंह राणावत, शाहजहानामा, पृ0-52 पर, शाहनवाज खा कृत मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास, भाग 1, पृ0- 304-5 पर

138 (पू0 उ0)-पृ0- 54पर, (पू0 उ0)-पृ0- 306पर,

139 (पू0 उ0)-पृ0- 56-57 पर, (पू0 उ0)

(28 जून, 1630 ई0) को सम्राट ने मराठा सरदार 'हाबाजी' को एक हाथी देकर सम्मानित किया।[140] सम्राट शाहजहाँ के राज्यकाल के तीसरे वर्ष (1630 ई0) में जादोंराय का दामाद 'शाहजी भोंसला' (साहूजी) जो निजामशाही सेना का सरदार था, जादोंराव के मारे जाने पर निजाम की नौकरी छोडकर परगना पूना और जालने में रहने लगा। वही से उसने बादशाही सेवा मे आने हेतु मुगल सरदार 'आजमखाँ' से प्रार्थना की। आजमखाँ ने बादशाह से स्वीकृति प्राप्त करने के उपरात उसे बुलाया। फलत वह अपने 200 सवारों के साथ आकर मुगल सेवा में शामिल हो गया। सम्राट ने 'आजमखाँ' की प्रार्थना पर शाहजी भोंसले को -खिलअत, 5000/5000 का मनसब, जडाऊ-जमधर, नक्कारा, निशान, घोडा, हाथी, व 2 (दो) लाख रुपये नकद इनाम में दिये गये। उसके भतीजे को 3000/1500 का मनसब, खिलअत, जडाऊजमधर, घोडा प्रदान किया गया तथा शाहजी के पुत्र शम्भाजी को खिलअत, 2000/1000 का मनसब और घोडा दिया गया। इसी प्रकार से इसी वर्ष रविराय, मालोजी और हाबाजी को उनकी योग्यतानुसार मनसब देकर 80,000 रुपया नकद प्रदान किया गया।[141]

सम्राट शाहजहाँ के राज्यकाल के चौथे वर्ष (31 अक्टूबर, 1631 ई0) को जादोंराव के बेटे बहादुर जी, शाही सेवा में उपस्थित हुआ। तदोपरान्त शाहजहाँ ने 'बहादुरजी' को खिलअत, जडाऊ खपवआ, 5000/5000 का मनसब, सोने के जीन सहित

---

140 (पू0 उ0)-पृ0- 58 पर,

141 मुशी देवी प्रसाद कृत 'शाहजहानामा' (उद्धृत) रघुबीर सिह एव मनोहर सिंह राणावत, 'शाहजहानामा', पृ0-61 पर, शाहनवाज खा कृत मासीर-उल्-उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास, भाग 1 पृ0 410 पर,

घोडा और हाथी दिया। जादौंराव का भाई जगदेवराव को 4000 सवार का मनसब, झडा और डका मिला। जादौंराव के पौत्र जादोराव (जिसका वास्तविक नाम 'पतगराव' था, मगर बादशाह ने दादा के नाम पर उसे जादोराव की पदवी दिया)- एव उसे (पतगराव को) खिलअत, जडाऊ खजर देकर 50,000-50,000 रुपया प्रत्येक को दिया गया। अचला जी के मृत्योपरात उसके पुत्र बिठ्ठो जी को भी 2000/1000 का मनसब एव 1 लाख 30 हजार रुपया खर्च के लिए प्रदान किया गया। इन सबके साथ जादौंराव के मृत्योपरात उसके सम्बधियो को अनेक सम्मानों के साथ-साथ दक्षिण में बरार, व खानदेश की अच्छी-अच्छी जागीरें दी गई तथा जादोराव की जागीरदारी भी बहाल रखी गयी।[142] (24 मार्च, 1633 एव 1634 ई0) में पाँच हजारी मराठा मनसबदार ऊदाजीराम दक्खनी के मृत्यु हो जाने पर बाद में उसके पुत्र जगजीवन, जो अल्पायु था को मुगल सरदार महावत खाँ खानखाना ने सम्राट से आज्ञा प्राप्त कर मुगल सेवा में लाया तथा (खानखाना ने) उसे 3000/2000 का मनसब दिलाने का प्रबध किया जिससे कि ऊदाजी राम के सैनिक छिन्न-भिन्न न होने पावें। सम्राट द्वारा जगजीवन को उसके पिता के नाम पर 'ऊदाजीराम' की पद्वी भी मिली। तथा उसने दक्षिण में 'माहोर' की जागीर से अपना जीवन-यापन करता रहा।[143] (22 फरवरी, 1636 ई0) को सम्राट द्वारा मराठा सरदार साबाजी निम्बाल्कर को 10,000 रुपयें का इनाम दिया गया। (6 मार्च, 1636 ई0) को बगलाना के जमींदार 'भेरजी' अपने वतन से बादशाह के सेवा में उपस्थित हुआ। सम्राट ने उसे खिलअत एव मनसब देकर सम्मानित किया।[144]

---

142 मुशी देवी प्रसाद कृत -'शाहजहानामा' (उद्धृत) रघुबीर सिंह, मनोहर सिंह राणावत, पृ0- 68-69 पर, शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0-177-78 पर,

143 मुशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा (उद्धृत) रघुबीर सिंह व मनोहर सिंह राणावत शाहजहाँनामा, पृ0 82 पर देखें,

शाहनवाज खाँ कृत- मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0-83-84 पर,

(16 जनवरी, 1638 ई0) को शहजादा औरगजेब ने 'भेरजी' को मुगल सेवा में लेने एव बगलाना को फतह करने के उद्देश्य से उनका विश्वास प्राप्त कर भेरजी की माँ को 'सिरोपा' इत्यादि से सम्मानित करके बादशाह को अर्जी लिखी। बादशाह ने यह देखकर कि 'भेरजी' हमेशा शाही आदेश का पालन करता था, नजराना भेजा करता था, जब काम पडता था तो दक्षिण के सिपहसालार के बुलाने पर उपस्थित हो जाता था, उसको 3000/500 का मनसब एव सुल्तानपुर का परगना प्रदान किया। जब भेरजी किले से निकलकर शहजादा (औरगजेब) के पास उपस्थित हुआ। तब शहजादा औरगजेब ने उसको खिलअत, जडाऊ जमधर, हाथी और घोडा भेंट किया।[145] (25 फरवरी, 1639 ई0) को बगलाने के जमीदार, 'भेरजी' का देहावसान हो गया। तदोपरान्त शाहजहाँ ने उसके पुत्र बहादुर परमजी 'बैरम जी' को 1500/1000 का मनसब देकर सम्मानित किया। बाद में वह मुसलमान बन गया तथा उसका, नाम 'दौलतमद' रखा गया।[146] (2 जून, 1640 ई0) को शहजादा औरगजेब के निवेदन करने पर सम्राट शाहजहाँ ने गोंडवाना के जमीदार चाँदा के बेटे 'बप्पा जी' जिन्हें उनके पिता के स्थान पर सिंहासनारुढ होने का आदेश दिया। इसके साथ-साथ बादशाह ने शाहजादे द्वारा 4 लाख रुपये का इनाम प्रदान करा उसे मुगल साम्राज्य का निष्ठावान सरदार बना लिया था।[147] (31 अगस्त, 1643 ई0) को बादशाह ने दारा के नवजात पुत्र 'मुमताज शिकोह' का मुँह देखने के सुअवसर

---

145 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0- 152

146 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0- 156

147 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0- 161

पर प्रसन्न होकर तथा शाहजादे (दाराशिकोह) के आग्रह पर मुगल-अमीरों के साथ-साथ मराठा-सरदारों को भी सम्मानित किया। इनमें 'फरजी' नामक मराठा सरदार को भी खिलअत देकर सम्मानित किया गया।[148]

नि सदेह उपरोक्त उल्लिखित मराठा सरदारों में से कुछ मराठा सरदार अवसरवादी एव पलायनवादी थे। परन्तु शेष में से अधिकाश ने मुगल शाही सेवा में रहकर, विशेषकर दक्षिण भारत में मुगलों के साथ मिलकर अपनी सैनिक भूमिका निभाई। शाहजहाँ के राज्यकाल में उनकी सैनिक भूमिका का विवरण देना समीचीन होगा। इस प्रकार शाहजहाँ-कालीन मराठा सरदारों द्वारा मुगल सेवा में निभाई गयी भूमिका का क्रमानुसार-उल्लेख निम्नरुप में मिले हैं - मराठा सरदारो में जादोंराव कानम्टिया एव ऊदाजीराम, जो सम्राट जहाँगीर के राज्यकाल के 16-17वें वर्ष में शहजादा खुर्रम के माध्यम से मुगल सेवा में प्रवेश कर साम्राज्य की सेवा करते रहे। सम्राट जहाँगीर के राज्यकाल के 19वें वर्ष (1624 ई0) में दोनो मराठा सरदारों (ऊदाजीराम एव जादोराव) ने पूर्ण निष्ठा से बीजापुरी सेना की सहायता प्राप्त करते हुए 'मलिकअम्बर' के विरुद्ध अहमदनगर के निकटस्थ मौजा 'आतुरी के युद्ध' में डटे रहे। यद्यपि इस युद्ध में बीजापुरी सेना के अध्यक्ष मुल्ला मोहम्मद बारी के मारे जाने से मुगल सेना का प्रबध बिगडने लगा था। परिणामस्वरुप अपनी हार निश्चित समझ जादोंराव और ऊदाजीराम को भी युद्धस्थल से पलायन करना पडा। इस प्रकार इस अभियान में मुगलों को पराजय मिली

---

148 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0- 179

तथा मलिकअम्बर विजयी बना।[149] (23 सितम्बर, 1630 ई0) को सम्राट शाहजहाँ ने बुरहानपुर के निकट स्थित 'असीर' से तीन सैनिक टुकडियाँ तीन वरिष्ठ मुगल सरदारों के सेनापतित्व व नेतृत्व में 'निजामुलमुल्क' व विद्रोही 'खानेजहाँ लोदी' के विरुद्ध उनके दमन करने के लिए भेजा। इस अभियान दल के सचालन हेतु पहली सैनिक टुकडी का सेनापति दक्षिण का सूबेदार, इरादत खा को नियुक्त किया गया, तथा उसके अनेक सहयोगियों में मुख्यत मराठा सरदार, जो कि मुगल सेवा के महत्वपूर्ण अग बन चुके थे, को भी भेजा गया। प्रथम दल के साथ प्रमुख मराठा सरदारों में खिलोजी, मिनाजी (मनहाजी), परसो जी भोंसला भी थे। इस अभियान में इन मराठा मनसबदारों ने मुगल सम्राट के प्रति पूर्णरुपेण निष्ठा प्रकट की तथा उन्होंनें विशिष्ट सेवाए प्रदान की।

दूसरे सैन्य-दल का नेतृत्व मुगल सेनापति राजा गजसिंह राठौर ने किया तथा उसके साथ अनेक हिन्दू-मुसलमान मुगल-अमीर भी थे। इस दल में प्रमुख रुप से सयुक्त मराठा सरदारो में ऊदाजीराम, ऊदाजीराम का भाई बेलाजी, एव शरीफ जी भी थे। उन्होंनें इस अभियान में भाग लेकर मुगल-साम्राज्य की भरपूर सेवा की तथा वे मुगल सेनापति के साथ मिलकर पूर्णरुपेण सहयोग करते रहे।

---

149 यह युद्ध सन् 1624 ई0 के आरम्भ में हुआ था। इसका पूरा विवरण इकबालनामा-ए-जहाँगीरी मे दिया हुआ है। इलियट एण्ड डाऊस्न जि0 6 पृ0 414 पर देखे, शाहनवाज खाँ मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी) वृजरतनदास, मासीर-उल-उमरा, भाग 1, पृ0-82 पर।

तीसरे सैन्य दल का नेतृत्व मुगल सेनापति शाइस्ताखाँ कर रहा था। उसके सहयोगी मराठा-अमीरों में प्रमुख रुप से राव रतन जी भी एक था।[150]

विद्रोही खानेजहाँ लोदी जिसका वास्तविक नाम 'पीरा' था, का 'राजोरी' के पास मुगलों के साथ भयकर युद्ध हुआ। इस अवसर पर अनेक मराठा सरदारों ने शाही-सेवा में रहकर विद्रोही खानेजहाँ लोदी के साथ युद्ध करके अपनी वीरता तथा साहस का परिचय दिया। युद्ध में पराजित होकर खानेजहाँ 'पीरा' युद्ध-स्थल से भाग खडा हुआ। फिर भी मुगल सेना उसका बराबर पीछा करती रही। वह मालवा की ओर भागा तथा 10 जून, 1631 को (वह) मालवा में युद्ध करते हुए मारा गया।[151]

(दिसम्बर, 1630 ई0) में जब शाहजी भोंसले शाही सेवा में प्रवेश किया तब उसे उचित सम्मान सूचक-चिन्ह, उच्च मनसब देकर सम्मानित किया गया। उसने पूरी निष्ठा से मुगलों का सहयोगी बना रहा। इसी समय मुगल सैन्य-अधिकारी 'आजमखा' ने

---

150 मुशी देवी प्रसाद कृत - शाहजहाँ नामा (उद्धृत) डा0 रघुबीर सिंह व डॉ0 मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँनामा, पृ0-56-57 पर।

151 **खानेजहाँ लोदी के विद्रोह के विस्तृत विवरण के लिए देखिए-** लाहौरी कृत- 'पादशाहनामा' भाग 1, पृ0-723 पर, डॉ0 बनारसी प्रसाद सक्सेना कृत- मुगल सम्राट शाहजहाँ पृ0- 69-77 तक, डॉ0 राधेश्याम, द किंगडम आफ अहमदनगर, पृ0-300-301, एच0 के0 शेरवानी, मेडिवल डेकन भाग 1, पृ0 270-271 पर,

- (पू0 उ0) शाहजहानामा, पृ0-60-63 पर।

- जी0 एस0 सरदेसाई- 'मराठो का नवीन इतिहास' भाग 1, पृ0-46,47 पर (इत्यादि)।

'दबेर' के शाही शिविर से उसे जुन्नैर एव सगमनेर का प्रबध करने के लिए भेजा। (14 दिसम्बर, 1631ई0) को आजम खाँ ने घाट से उतरकर मालूजी भोसले को मुल्तफत खा के साथ 'धारुल'का दुर्ग विजित करने के लिए भेजा। तथा इस अभियान के सफल होने के फलस्वरुप आजमखाँ ने 'धारूल का दुर्ग' निजामशाहियों से छीन लिया। इसी समय सम्राट शाहजहाँ ने दक्षिण के क्षेत्रो में मुगलों की स्थिति सुदृढ बनाने के निमित्त 'आसफखाँ' को बुरहानपुर से भेजा तथा उसके साथ इस अभियान में भाग लेने वाले मराठा सरदारों-में ऊदाजीराम, खिलोजी, मालूजी और बहादुर जी भी रहे। ये सभी मराठा सरदार निष्ठापूर्वक शाही सेवा में कार्यरत रहे। (8 सितम्बर, 1632 ई0) को शाहजी भोंसले ने शाही सेवा छोड दी। उसने नासिक, त्रयम्बक और सगमनेर में कोंकण की सरहद तक अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। उसने निजामशाही वकील एव पेशवा 'फतहखाँ' के विरुद्ध निजामशाही परिवार के ही एक लडके को निजामशाही-राज्य का शासक घोषित कर दिया। वह स्वय उसका सरक्षक बनकर उसके नाम पर शासन करने लगा। यह देखकर 'फतेहखा' ने मुगल साम्राज्य की अधीनता स्वीकार करने का निर्णय लिया। 'फतेहखाँ' के इस निर्णय से अवगत होकर शाहजहाँ ने उन सभी दुर्गों व परगनों को जो शाहजी भोंसले को दिये गये थे, उससे वापस लेकर 'फतेहखाँ' को दे दिये। इस बात से रुष्ट होकर शाह जी (8 जून, 1633 ई0) ने बीजापुर के शासक आदिलशाह की सेवा में चला गया। आदिलशाह ने शाहजी को विशाल सेना के साथ दौलताबाद का दुर्ग विजित करने के निमित्त भेजा। जैसे ही फतेहखाँ को दौलताबाद पर आक्रमण की सूचना प्राप्त हुई, उसने मुगल सेनानायक महावत खाँ खानखाना से सम्पर्क स्थापित किया। उसने उससे सहायता मागी, और दौलताबाद का दुर्ग उसे सौंप देने का वचन दिया। फलत खानखाना ने अपने बेटे अब्दुल खानेजमा को मराठा सरदार खिलोजी भोंसले एव जुगराज के साथ शाहजी भोंसले को रोकने एव उसे पराजित करने हेतु भेजा। इस प्रकार शाहजी एव मुगलो के बीच प्रबल सघर्ष हुआ। फलत शाहजी को पराजय मिली तथा मुगल विजयी रहे।

दूसरी ओर शाहजी ने फतेहखॉं से गुप्तवार्ता कर यह वायदा किया कि " हम किला तुम्हारे ही पास रहने देंगे और साथ ही वहाँ रुपया एव रसद भी पहुँचायेंगे।" इस पर फतेहखॉं शाहजी का पक्षधर बन गया। खानखाना ने उसके वायदे से मुकरने पर क्रुद्ध होकर अपने पुत्र खानेजमा को दौलताबाद का दुर्ग विजित करने का आदेश दिया। इस प्रकार इस अभियान के प्रथम चरण में मुगल सेनापति खानेजमा ने प्रमुख मराठा सरदारो खिलोजी मालूजी, भीखा जी, और यशवतराव की सहायता से 'शाहजी' को निजामपुर मे भगाया। तत्पश्चात दौलताबाद की घेराबदी की खबर सुनकर महावतखॉं खानखाना भी वहाँ आ पहुँचा। पृथ्वीराज राठौर, गोल में, बनाकाछरी का मोर्चा जो किले के पीछे था राजा विक्रमादित्य को सौंपा गया तथा मराठा अमीर ऊदाजीराम ने अपने भाई-बन्धु सहित 'चन्द्रावल' में स्थित होकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाया।[152] इस घेरेबदी में जबकि मराठा सरदार निष्ठापूर्वक शाही सेवा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में लगे हुए थे दूसरी ओर (24 मार्च, 1633 ई0) को खिलोजी भोंसले, जिसका मनसब पाच हजारी (5000/5000) था, इस विचार से की दौलताबाद के विजित हो जाने से निजामशाह के साम्राज्य को अत्यधिक हानि पहुँचेगी, याकूतहब्शी की भाति मुगल सेवा छोडकर निजामशाह के पक्ष में चला गया। लेकिन उसके भाई मालूजी एव परसूजी, महावतखॉं खानखाना के पास ही रहे और मुगल सैन्य अभियानों की सफलता हेतु लगे रहे। खानखाना ने भी उनको खिलअतें, हाथी और खर्च वगैरह के साथ-साथ ऊँचा मनसब एव सम्मानों से

---

152 **'दौलताबाद दुर्ग के घेराबदी' के लिए देखिए -**

इलियट एण्ड डाऊसन, हिस्ट्री आफ इडिया एज टोल्ड बाई इट्स ओन हिस्ट्रोरियन्स, भाग 7, पृ0-38-42, डा0 बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0-75 पर, - (पू0 उ0) शाहजहानामा, पृ0- 81 इत्यादि।

सुसज्जित कर उन्हें प्रसन्न रखने में लगा रहा।[153] शाही सेवा के छठे वर्ष (28 मार्च, 1633 ई0) में खानेखानाँ महावत खाँ के साथ मराठा सरदार ऊदाजीराम पूरी निष्ठा के साथ 'दौलताबाद के दुर्ग' के बिजय-अभियान में लगा हुआ था, उसी दौरान जीर्ण रोग के कारण इसकी मृत्यु हो गयी।[154]

उसके मृत्योपरान्त यद्यपि उसका पुत्र जगजीवन अल्पायु था फिर भी महावत खाँ ने सम्राट से निवेदन कर,उसको 3000/2000 का मनसब दिलाने का प्रबन्ध किया जिससे की ऊदाजी-राम के सैनिक बिखरने न पावें। (8 अप्रैल, 1633 ई0) में खानेखाना ने अबरकोट में आकर महाकोट को घेरने के लिए सेना भेजी। इस अभियान में खानखाना ने प्रमुख मराठा सरदार मालूजी एव जगजीवन को बाहर के मार्चे पर नियुक्त कर अपना विजय-अभियान जारी रखा।[155] (17 अप्रैल, 1633 ई0) को रणदौला (रदौला) और शाहजी ने इस युद्ध में मुगलों को पराजित करने तथा उसके शत्रु के सहायतार्थ नाजकी 3000 पोटें, दुर्ग की रक्षार्थ ले आये मगर मराठा सरदार मालूजी, राव दूदा, पृथ्वीराज आदि बादशाही- अमीरों ने उन्हें युद्ध में पराजित कर उनके नाजों को छीन लिया।[156]

---

153 (पू0 उ0) शाहजहानामा पृ0- 82 पर।

154 (पू0 उ0),शाहजहानामा पृ0- 82, शाहनवाज खा, मासीर-उल-उमरा (अनु0 हि0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0-83 पर।

155 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0-83, एव 85 पर देखे।

156 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0-83, एव 85 पर देखें।

(27 अप्रैल, 1633 ई0) को हमीरराव मोहिते ने विरोधी सेनाओं का साथ छोडकर मुगल सेनाओं में मिल गया। इस घेराबदी में मालूजी एव परसोजी अपना पूरा सहयोग खानखाना को देते रहे। इस प्रकार इन मराठा-अमीरों ने मुगल-साम्राज्य की भलीभाँति सेवा की तथा इस अभियान की सफलता में सहयोगी रहे। उनके द्वारा शत्रुओं का दमनकर मुगल दरबार में बहुतों को उपस्थित किया गया।[157]

(18 अगस्त, 1633 ई0) को सम्राट शाहजहाँ ने खानखाना की सूचनानुसार शहजादा शुजा को दक्षिण के अभियान पर प्रेषित किया। (9 अक्टूबर, 1634 ई0) शहजादा शुजा ने 'परेंदा का दुर्ग' विजित करने वुरहानपुर से खानखाना के साथ कूच किया। खानेजमा को बीजापुर लूटने व घेरने के लिए पहले ही भेज दिया था।[158] (18 फरवरी, 1635 ई0) में खानेखाना, रसद लाने गया। उसके साथ खानेजमा तथा अनेक सहयोगियों के साथ प्रमुख मराठा अमीर, 'मालूजी भोंसले' भी रहे, जिन्होंने रसद रोकने की इच्छा से शत्रु द्वारा खानेजमा पर किये गये हमले को असफल कर रसद को गन्तव्य तक पहुँचाया। (4 मार्च, 1635 ई0) की रात्रि में शाहजहाँ के आदेशानुसार बादशाही अधिकारियों और मनसबदारों ने शत्रु के डेरों पर चढाई की। इस अभियान में प्रमुख मराठा, मालूजी दक्खनी, ने भी भाग लिया। इस अभियान में मुगलों को पूर्णत सफलता मिली। (2 जून, 1635 ई0) को शत्रुओं द्वारा रुक-रुक कर किये गये हमले से मुगल सेना को काफी हानि हो रही थी। तथा इससे तग आकर किला पूर्णरुपेण विजित किये बिना ही शहजादे को लौटा लाने पर सम्राट शाहजहाँ ने खानेखाना पर बहुत क्रोधित

---

157 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0-83, एव 85 पर देखे।

158 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0- 89 पर देखें।

हुआ और उसे सभी अमीरों सहित दरबार में उपस्थित होने का आदेश दिया।[159] (19 नवम्बर, 1634-35 ई0) को ऊदाजीराम का पुत्र जगजीवन जो मुगल सेवा में था, एक निष्ठावान मराठा सरदार के रुप में शाही सेवा में सहयोगार्थ शहजादा शाहशुजा के साथ दक्षिण में आया। (13 जनवरी, 1635 ई0) में शाहजी भोंसले ने महावत खा के मृत्योपरात निजामशाह के कई सेवकों के साथ दौलताबाद के किले पर चढाई की थी, उसी समय मुगल सेनापति 'खानेदौरान' मालवा से बुरहानपुर होता हुआ दौलताबाद पहुँचा। इस घेराबदी में मुगलों के सहायतार्थ प्रमुख मराठा अमीरों में मालूजी एव परसू जी ने भी अपना अमूल्य सहयोग प्रदान कर अद्भुत भूमिका निभाई तथा शत्रुओं को पराजित कर भागने के लिए विवश कर दिया।[160] (18 फरवरी, 1636 ई0) को शाहजी भोंसले को कोंकण से निकालने के लिए, जिसने निजामुलमुल्क के परिवार के एक लडके को शासक घोषित कर अपने को उसका सरक्षक बना कुछ क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था, को रोकने एव उसके दमन करने के निमित्त मुगल सेनापति खानेदौरा एव खानेजमा को एक विशाल सेना के साथ भेजा गया तथा यह आदेश दिया गया कि यदि आदिलशाह मुगल सेना के सहयोगार्थ उपलब्ध न होवे तो उसके मुल्क को भी नष्ट कर दो। अतएव इस अभियान में वरिष्ठ मुगल-सरदारों के साथ-साथ मराठा-अमीरों में ऊदाजीराम का पुत्र जगजीवन भी साथ रहा तथा उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।[161] दूसरी ओर खानेजमा के नेतृत्व में 20,000 की सेना शाहजी के वतन 'चमारगोंडा' (श्री गोंडा) को, जो अहमदनगर के पास था विजित करने तथा कोंकण को भी उससे -

---

159 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0-90 पर देखें।

160 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0-83, एव 93-94 पर देखे।

161 (पू0 उ0), शाहजहानामा, पृ0-105-106 देखें।

छीन लेने के लिए भेजा गया। इस सेना में अनेक मुगल-अमीरों में- मालूजी, पतगराव (जादोंराव), बिठ्ठोजी, बहादुर का बेटा दत्ताजी (दायाजी), रुस्तमराव एव हाबाजी आदि मराठा-सरदार थे, जिन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसी अभियान में आसफ खाँ के बेटे शाइस्ताखाँ के साथ 8,000 सवार, जुनेर, सगमनेर,नासिक एव त्रयम्बक के दुर्गों को विजित करने के लिए भेजे गये। इस अभियान में भी मराठा सरदार रावत राय दक्खनी साथ रहा। (7 मार्च, 1636 ई0) को मुगल सेनापति खानेजहाँ, खानेजमा एव खानेदौरा (तीनों) को सम्राट के आज्ञानुसार तीन तरफ से बीजापुर के शासक आदिलखा के राज्य पर हमला करने के निमित्त भेजा गया। इस अभियान में भी मुगल सरदारों के साथ -साथ मगूजी, शरजाराव, कृष्णाजी एव यशवन्तराव आदि मराठा सरदारों को भी मुगल सेनापति ख़ानेजहाँ के साथ भेजा गया। उन्होंने पूरी निष्ठा से युद्ध में मुगलों का साथ देते रहे तथा मुगल साम्राज्य की सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। (4 अप्रैल, 1636 ई0) को सम्राट शाहजहाँ ने बगलाना के जमींदार भैंरजी को खिलअत देकर अल्लाहवर्दी खाँ के पास 'घोडप' आदि किलों को विजित करने हेतु तथा इस अभियान में मुगल सेना की सहायता करने के लिए भेजा।[162] इसी वर्ष (1636 ई0) में ही मुगल सेना ने अपना विजय-अभियान जारी रखते हुए 'अजराही का किला' गम्भीरराव किलेदार के समर्पण करने के उपरान्त अपने अधिकार में ले लिया। पुन कचन-मचन के किले को घेरा गया। किले वाले गम्भीरराव के साथ मुगल-सेवा में उपस्थित हुए। इस प्रकार वह किला भी मुगलों के अधिकार में आ गया। मुगल सेनापति खानेजहाँ के आदेशानुसार मराठा सरदार कृष्णाजी, शरजाराव (शिरजाराव) और सायाजीको सराधनू (शेराढोण) का किला फतह करने प्रस्थान करना पडा। इसके अन्तर्गत बीजापुरी सेनाओं को पुन एकबार मुगल

---

162 (पृ0 30) शाहजहानामा, पृ0-107 पर देखे।

विरोधी शत्रुओं से सहयोग न प्राप्त कर पाने एव मुगलों की विजय क्रम के बने रहने के कारण असफलता ही मिली। इस अभियान में भी मराठा सरदारों ने सुनियोजित ढग से मुगलों की सेवाए की।[163]

शाही सेवा के ग्यारहवें वर्ष (1638 ई0 में) जब राजकुमार औरंगजेब ने 'बगलाना' को अधिकृत करने की इच्छा प्रकट की तो 'मालोजी' को तीन हजार (3000) सेना के साथ औरगजेब के विश्वस्त सेनानायक मोहम्मद ताहिर वजीर खाँ के साथ बगलाना विजित करने के लिए भेजा गया। इस अभियान में मालोजी ने मुगलों की अत्याधिक सहायता की और बगलाना-विजय के उपरान्त वह वापस लौट गया। इस प्रकार मालोजी व परसों जी ने दक्षिण में नियुक्त मुगल सूबेदारों की निष्ठापूर्वक सेवा करते रहे।[164] जिस समय शहजादा मुरादबख्श दक्षिण का महाप्रातपति नियुक्त हुआ उस समय शाहनवाज खा के नेतृत्व में 'देवगढ' पर जब चढाई की गयी तो मराठा सैनिक टुकडियों का नेतृत्व भी उन्होंने ही किया।

शाही सेवा के 29वें वर्ष (1656-57 ई0) में जब 'देवगढ' के जमींदार ने करद देने में आनाकानी की तो राजकुमार औरगजेब ने बरार के नाजिम मिर्जा खाँ तथा तेलगाना के सूबेदार हादीदाद के साथ मालूजी दक्खनी को भी उनके साथ करद वसूल करने के निमित्त भेजा गया।[165]

---

163 पू0 30), शाहजहानामा, पृ0-109 पर देखें।

164 शाहनवाज खा, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0), ब्रजरतनदास भाग 1 पृ0-306-307 पर।

165 शाहनवाज खा, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0), ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0-306 पर।

शाही सेवा के अन्तिम वर्ष (30वें वर्ष, 1657-58 ई0) में जिस समय राजकुमार औरगजेब गोलकुण्डा का घेरा डाले हुए था उस समय मालोजी ने मराठा सैनिकों के साथ मुगलों की अत्यधिक सहायता की। परन्तु किन्ही कारणों से औरगजेब, मालोजी व परसोजी से नाराज हो गया परिणामस्वरुप दोनों ही भाई गोलकुण्डा छोडकर दिल्ली पहुचे जहाँ वे सम्राट शाहजहाँ के सेवा में उपस्थित हुए तथा 'उत्तराधिकार युद्ध' में सम्राट शाहजहाँ के साथ रहे।[166]

1657 में अर्थात राज्य काल के 30वें वर्ष में सम्राट शाहजहाँ रोगग्रस्त हो गया। फलत चारों ओर उसकी मृत्यु की अफवाहें फैलने लगी और उत्तराधिकार के युद्ध के बादल मडराने लगे। सम्राट शाहजहाँ को जब सूचना मिली कि गुजरात व दक्षिण के महाप्रान्तपति राजकुमार मुरादबख्श व औरगजेब अपनी सेनाओं के साथ आगरा की ओर बढ रहे हैं तो उसने महाराजा जसवन्त सिंह को मालवा का सुबेदार नियुक्त किया और उसे उज्जैन की ओर रवाना किया। इसी समय मालोजी व परसो जी भी महाराजा जसवत सिंह के साथ भेजे गये। जसवन्त सिंह ने उन्हें सैन्य-सामग्री की रक्षा करने का काम सौंपा। धरमत का युद्ध प्रारम्भ होते ही राजकुमार मुरादबख्श ने उनकी छावनी पर आक्रमण कर दिया और वे वहाँ से भाग खडे हुए एव युद्धोपरान्त वे वापस लौटे तथा उन्होंने सामूगढ के युद्ध में राजकुमार दारा शिकोह की ओर से भाग लिया। सामूगढ के निर्णायक युद्ध के

---

166 शाहनवाज खा, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0), ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0-307 पर।

उपरान्त उन्होंने राजकुमार औरगजेब के पक्ष में घोषणा की और वे उसकी सेवा में चले गये।[167]

शाहजहाँ ने मराठा सरदारों को मुगल-अमीर-वर्ग में उपयुक्त स्थान तो दिया परन्तु उनकी राजनीतिक भूमिका का कोई विस्तृत विवरण हमें सामयिक ऐतिहासिक ग्रन्थों में कदापि प्राप्त नहीं होता। इन मराठा सरदारों के नामों, उनके मनसब तथा उन्हें प्रदत्त की गई जागीरों से ऐसा प्रतीत होता है कि, दक्षिण में अधिकृत मुगल प्रदेशों की सुरक्षा एव दक्षिण में मुगल साम्राज्य के विस्तार हेतु शाहजहाँ तथा दक्षिण के मुगल सूबेदारों द्वारा मराठा सरदारों के प्रति केवल तुष्टिकरण की नीति अपनानी पडी। सम्राट शाहजहाँ स्वय

---

167 **उत्तराधिकार के युद्ध के लिए देखिए -**

- इलिएट एण्ड डाऊसन, हिस्ट्री आफ इण्डिया एस टोल्ड बाई इन ओन हिस्टोरियन, भाग 7,पृ0-178-80,

- मो0 काजिम शिराजी, आलमगीरनामा भाग 1, (उद्धृत) जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगज़ेब भाग 1,2, पृ0 313-439, - जादुनाथ सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 1, 2 पृ0- 313,

- बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ पृ0- 343-62

- जहीरुददीन फारुकी, औरगजेब एण्ड हिज टाइम्स, पृ0 1-89,

- निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवत सिंह और उनका समय पृ0-51-81,

- शाहनवाज खाँ मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग -1 पृ0-307, आकिल खाँ राजी, वाकयात-ए-आलमगीरी,, (सम्पा0) खान बहादुर मौलवी हाजी जफर हसन, पृ0 12-30 पर देखे।

मराठों के चरित्र एव निष्ठा के सम्बध में निरतर सदिग्ध रहा। कारण कि उसके पिता जहँगीर के समय जाधवराव ने शाही सेवा से पलायन किया। तत्पश्चात शाहजी भोसले ने तथा अन्य कुछ मराठा सरदारों ने पलायन करने के उपरान्त मुगलों के प्रति जो दृष्टिकोण अपनाया उससे उन पर पूर्णरुपेण कदापि विश्वास नहीं किया जा सकता था। जाधवराव द्वारा निजामशाहियों की सेवा में पुन चला जाना तथा शाह जी द्वारा निजामशाही-परिवार के सदस्य को सुल्तान घोषित कर निजामशाही राज्य के पुर्नस्थापना करने की घोषणा करना और मुगलों का सक्रिय विरोध करना इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि मराठा सरदारों पर पूर्णरुपेण विश्वास नहीं किया जा सकता था। उसी के शासनकाल के अतिम चरणों में शाहजी के पुत्र शिवाजी कोंकण तथा निकटवर्ती प्रदेशों में जिस प्रकार की सैनिक कार्यवाहिया प्रारम्भ की तथा दक्षिण में मुगल-अधिकृत प्रदेशों को लूटना प्रारम्भ किया, उससे भी मुगल सम्राट व दक्षिण के मुगल सूबेदारों को मराठों के प्रति शकालु रहना पडा। अन्य शब्दों में, सम्राट शाहजहा की मराठा अमीर-वर्ग के सदस्यो के प्रति दोहरी नीति-'सहृदयता' तथा 'दमन' की थी। एक ओर तो उसने अधिकाधिक सख्या में मराठा सरदारों को अपनी सेवा में लेने की कोशिश की तो दूसरी ओर विद्रोही मराठा सरादारों को पूर्णत दबाने के प्रयास में वह पीछे न रहा।

चतुर्थ अध्याय

"उत्तराधिकार के युद्ध के समय मराठा अमीर-वर्ग की स्थिति"

अध्याय (4)

1657 में सम्राट शाहजहाँ के रोगग्रस्त होने के कारण एव उत्तराधिकार के प्रश्न पर विचार अमीरों के मध्य होने लगा। यह सत्य है कि ज्येष्ठता के सिद्धात के अनुसार सम्राट शाहजहाँ ने मुगल नौकरशाही में सर्वोच्च मनसब के साथ धन व सम्मान-चिन्हों से निरन्तर सम्मानित किया तथा प्रिय दारा को 'शाहबुलन्द एकबाल' की उच्च उपाधि प्रदान कर अनेक सूबों का अनुपस्थित महाप्रातपति नियुक्त किया एव सदैव अपने निकट ही नही रखा वरन् अपने मयूर सिंहास्न के निकट उसके लिए स्वर्ण का सिंहासन रखवाया। और यह सुनिश्चित कर दिया कि वही उसका उत्तराधिकारी होगा, परन्तु उसके इस निर्णय से न तो अमीर-वर्ग के कुछ तन्व सहमत थे और न ही राजकुमार शाहशुजा, औरगजेब तथा मुरादाबख्श ही सन्तुष्ट थे। अत मुगल अमीर-वर्ग के विभिन्न अमीरों का अवसरवादी तथा पलायनवादी होना स्वाभाविक हो गया। अपनी अपनी प्रातीय राजधानियों में शाहशुजा राजमहल में, औरगजेब दक्षिण में तथा मुरादबख्श सूबा गुजरात की राजधानी अहमदाबाद में अपनी स्थिति को सुदृढ करने के लिए न केवल अपने अन्तर्गत अमीरों को प्रलोभन देकर अपने प्रति निष्ठावान बने रहने के लिए प्रोत्साहित करते रहे वरन् भविष्य में अपने बडे भाई दाराशिकोह से सघर्ष करने के लिए सैनिक तैयारियाँ करने लगे। राजधानी दिल्ली व आगरा में नियुक्त इनके प्रतिनिधि निरन्तर वहाँ होने वाली राजनीतिक गतिविधियों की सूचना उन्हें भेजते रहे तथा दाराशिकोह के सम्बध में उन्हें सूचित करते रहे। दूसरी ओर औरगजेब, मुराद तथा शाहशुजा, पारस्परिक गठबन्धनों में बधकर आपस में ही गुप्त पत्र-व्यवहार करते रहे। रोगग्रस्त शाहजहॉ के सम्बध में तरह-तरह की अफवाहें फैलने लगी जिससे सम्पूर्ण राजनीतिक वातावरण दूषित हो गया और तात्कालीन राजनीति में रुचि लेने वाले लोगों को यह सोचने में देर न लगी कि या तो सम्राट की मृत्यु हो गयी है या दाराशिकोह ने यह तथ्य छुपाकर राजनीति की बागडोर अपने हाथों में ले ली है तथा प्रशासन सचालित करना स्वय प्रारम्भ कर दिया है अथवा रोगग्रस्त सम्राट मृत्यु के द्वार पर खड़ा हुआ है।

ऐसी परिस्थिति में राजकुमार औरगजेब के सम्मुख दो में से एक ही विकल्प था- 'करो या मरो' उसका पूर्व चरित्र, उसकी प्रतिभा, सर्वगुणसम्पन्नता तथा आत्मविश्वास उसे प्रेरित कर रहा था कि वह सघर्ष के लिए कटिबद्ध हो जाय। सिंहासन प्राप्त करने का उद्‌देश्य अपने सम्मुख रखने के उपरान्त उसने भी दक्षिण में सैन्य-सामग्री जुटाने प्रारम्भ की और विभिन्न जाति के मनसबदारों को अपने पक्ष में करना प्रारम्भ किया। उसने न केवल अपने प्रति निष्ठावान मनसबदारों के मनसब में वृद्धि की वरन् उन्हें धन और सम्मान-सूचक चिन्ह देकर अपनी ओर मिलाया तथा मराठों का भी सहयोग प्राप्त किया। वास्तव में लक्ष्य-प्राप्ति हेतु वह सभी जातीय-तत्वों का सहयोग प्राप्त करना चाहता था। जहाँ तक मराठों का प्रश्न है यह सत्य है कि पिछले कुछ वर्षों में शिवाजी के नेतृत्व मे मराठे अत्यधिक सक्रिय हो गये थे और वे दक्षिण मे मुगल अधिकृत प्रदेशों पर अतिक्रमण करके लूटने लगे थे। फिर भी औरगजेब की उनके प्रति सहृदयता व क्षमा की नीति रही।[1] दक्षिण भारत से उत्तरी-भारत की ओर प्रयाण करने से पूर्व तथा उत्तराधिकार युद्ध में भाग लेने के लिए जाने से पूर्व औरगजेब दक्षिण में अपना कोई भी शत्रु छोडकर नही जाना चाहता था। अत उसने एक ओर तो शिवाजी की विद्रोहात्मक कार्यवाहियों के लिए क्षमा कर दिया तो दूसरी ओर उस पर दृष्टि एव नियत्रण रखने के लिए वह विशाल सेना औरगाबाद में तैनात कर दी। उसी काल में उसने अनेक मराठों को अपने अन्तर्गत मुगल नौकरशाही में ले लिया।

डॉ0 एम0 अतहर अली ने अपनी कृति "औरगजेब कालीन मुगल अमीर-वर्ग" में उल्लिखित किया है कि औरगजेब की ओर से 10 -(दस) मराठा सरदारो ने

---

1 जादुनाथ सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 58-59 पर, जहीरुद्‌दीन फारुकी, औरगजेब एण्ड हिज टाइम्स, पृ0 1-89, आकिलखाँ राजी कृत- वाकयात-ए-आलमगीरी सम्पा0, हाजी जफर हसन, पृ0 12-30 (इत्यादि), बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, पृ0 44-46, - जी0 एस0 सारदेसाई, न्यू हिस्ट्री आफ मराठा भाग 1 पृ0- 112-13,

उत्तराधिकार के युद्ध में भाग लिया।[2] वह लिखते हैं कि उनमें से 1000 के ऊपर के आठ (8) मराठा-मनसबदार थे तथा दो (2) मराठा मनसबदारों का मनसब 4000 था।[3] परन्तु प्रो0 श्रीराम शर्मा के अनुसार, उत्तराधिकार के युद्ध में निम्नलिखित मराठा सरदार भी औरगजेब के पक्ष में भाग लिया, जो है- (11) मालूजी- 5000/- हजारी, मनसबदार।[4]

जहाँ तक उत्तराधिकार के युद्ध में मराठा सरदारों की भूमिका का प्रश्न है। इस सम्बध में कुछ भी कहना कठिन है। मो0 काजिम शिराजी, जिसने औरगजेब के राज्यकाल के प्रथम 10 वर्षों की घटनाओं का सविस्तार विवरण दिया है जो औरगजेब द्वारा दक्षिण भारत से उत्तराधिकार युद्ध मे भाग लेने के लिए उत्तरी भारत की ओर कूच करने का क्रमानुसार विवरण देता है, ने अपनी कृति- आलमगीरनामा' में कही भी इन 11 (ग्यारह) मराठा सरदारों की (युद्धों) में भूमिका का उल्लेख नहीं किया है। औरगजेब व राजकुमार मुरादबख्श की सयुक्त सेनाओं ने धरमत के युद्ध-स्थल एव सामूगढ के युद्ध-स्थल में विभिन्न सेनानायकों के नेतृत्व में सेना के जिन भागो का नेतृत्व किया उसके विवरण में भी मराठा सरदारों का नाम उल्लिखित नही मिलता। ज्ञातव्य है कि उन मराठा सरदारो का कुल जात व सवार, मनसब (25000 + 5000) = 30,000 जात 13,200 सवार था।

---

2 एम0 अतहर अली, औरगजेब कालीन मुगल अमीर-वर्ग, पृष्ठ - 176-183

3 उत्तराधिकार युद्ध में औरगज़ेब के पक्षधर दस (10) मराठा मनसबदार के नाम एव उसके मनसब के लिए देखिये- एम0 अतहर अली, औरगजेब कालीन मुगल अमीर-वर्ग, पृ0 178-183 पर।

4 श्रीराम शर्मा, राठा मनसबदारस् आफ औरगजेब्स् रेन, मराठा हिस्ट्री सेमिनार पूना।

मराठा सरदारों के अन्तर्गत 13,200 अश्वारोहियों का होना कुछ अर्थ रखता था। उनके अन्तर्गत इतनी बडी सैनिक-सख्या होते हुए भी उन्होने दोनों युद्धो में महत्वपूर्ण भूमिका न निभाई हो यह भी कहना कठिन है। इसी प्रकार से आकिल खा राजी ने भी 'वाकयात्-ए-आलमगीरी' में भी अपने सक्षिप्त विवरण में मराठा सरदारों का तनिक भी उल्लेख नही किया है। मराठा सरदारों की भूमिका का विवरण न देने के पीछे कई कारण हो सकते हैं- प्रथम, मुसलमान इतिहासकारों में यह प्रवृत्ति थी कि वे हिन्दू योद्धाओं के क्रियाकलापों को अनदेखी करते हुए मुसलमान सेनानायकों के कृत्यों का सविस्तार उल्लेख करने में ही अपनी रुचि प्रदर्शित करते रहे। दूसरे, यह भी सम्भव है कि जिस समय औरगजेब ने औरगाबाद या बुरहानपुर से उत्तरी भारत की ओर प्रस्थान किया उस समय ये ग्यारह मराठा सरदार उसकी सेवा में उपस्थित रहे हों किन्तु नर्मदा नदी पार करने के उपरान्त वह उन्हे दक्षिण में ही छोड गया हो ताकि वे उसकी अनुपस्थिति में राजकुमार मुअज्जम की सहायता से विद्रोही शिवाजी की गतिविधियों को नियत्रित कर सके और उस पर दृष्टि रख सके। अत ऐसी स्थिति में जबकि शिवाजी कोंकण में अत्यधिक सक्रिय थे, औरगजेब ने इन मराठा सरदारों को वहीं रखना आवश्यक समझा होगा। इसके अतिरिक्त यह भी सर्वविदित है कि मराठा बार्गी अथवा अश्वारोही गोरिल्ला ढग से लडने में सिद्धस्थ थे, वे अपनी टुकडियों को विभाजित कर शत्रु पर रात्रि में हमला तो कर सकते थे और उनके शिविरो को लूट सकते थे परन्तु खुले मैदान में युद्ध करने के अभ्यस्त न थे। इसी कारण औरगजेब उन्हें अपने साथ न ले गया होगा। इसके अतिरिक्त मराठो के सदिग्ध चरित्र से वह भलीभाति अवगत था। युद्ध प्रारम्भ होने के पश्चात ये मराठा सरदार लाभकारी सिद्ध होने के स्थान पर उसकी सम्पूर्ण सेना के लिए अपने अवाछित व्यवहार के कारण हानिकारक भी सिद्ध हो सकते थे। सक्षेप में समकालीन ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर मराठा सरदारों के उत्तराधिकार युद्ध में भूमिका के विवरण के अभाव में निश्चित रुप से कुछ भी कहना मुश्किल है।

क्र0स0 नाम	मनसब	स्रोत
(1) जादौंराव	4000/2500	आलमगीरनामा-पृ0-45, 55, हातिम खा,14अ, 20अ।
(2) दामाजी दक्खनी	4000/1300	हातिमखा, 14 अ, आलमगीरनामा, पृ0-47-63।
(3) दादाजी	2500/1000	आलम्गीरनामा, 48, हातिमखा-14ब।
(4) मानाजी भौंसले	2500/1500	आलमगीरनामा,पृ0-128, हातिम खा,पृ0-16अ, से0 डा0 औ0 पृ0-7
(5) रुस्तम राव	2500/1200	हातिम खाँ, 14अ, 20अ, आलमगीरनामा 47-55
(6) बाबाजी भौंसले (हाबाजी)	2500/1500,	आलमगीरनामा, पृ0- 54,63, अमल-ए-सालेह भाग III, पृ0-460
(7) व्यासराव	2000/1200,	आलमगीरानामा, पृ0-48, हातिम खाँ, 14ब
(8) बेतूजी दक्खनी	2000/1000,	हातिम खाँ, 14अ, 20अ, आलमगीरनामा, पृ0-47-63पर।
(9) तरमकजी भौंसले	1500/1000	हातिम खा- 14अ, आलमगीरनामा, पृ0-48
(10) दाकूजी	1500/1000;	आलमगीरनामा हातिम खाँ, पृ0- 14 (ब) पृ0 48,
(11) मालू जी	5000/5000	(उद्धृत) प्रो0 एस0 आर0 शर्मा, मुगल शासकों की धार्मिक नीति, 'मराठा मनसबदारस् आफ औरगजेब्स रेन, मराठा हिस्ट्री सेमीनार, पूना।'

पंचम् अध्याय

"औरंगज़ेब कालीन मराठा अमीर-वर्ग"

(1658-1679)

अध्याय (5)

उत्तराधिकार के युद्ध में विजयी होने के उपरान्त औरगजेब ने दो बार अपना राज्याभिषेक कराया। धरमत के युद्ध में उसने राजपूतों के सिरमौर्य तथा जोधपुर के शासक जसवत सिंह को निर्णायक युद्ध में पराजित किया। सामूगढ के युद्ध में शाहजहाँ द्वारा लगायी गयी पूर्ण सैन्य शक्ति के बावजूद भी दाराशिकोह को धूल-धूसरित कर दिया। आगरा के दुर्ग की घेराबदी करके अपने वृद्ध पिता शाहजहाँ को नजरबन्द करवा दिया। उसके पश्चात अपने प्रतिद्वन्दी दाराशिकोह का पीछा करना प्रारम्भ किया। मार्ग में मथुरा के निकट उसने अपने प्रिय भाई मुरादबख्श को बदी बनाकर उसकी महात्वाकाक्षी योजनाओं पर पानी फेर दिया तथा पजाब, सिन्ध, गुजरात व राजस्थान में निरन्तर दारा शिकोह का पीछा करते हुए उसे 'देवराई के युद्ध' में पराजित किया और अन्त में उसके सेनानायक दाराशिकोह को मलिकजीवन के हाथों से लेकर दिल्ली लाया गया जहाँ उसका अन्त हुआ। दूसरी ओर बहादुरगढ तथा 'खजुआ के युद्धों' में पराजित शाहशुजा का निरन्तर पीछा किया गया और उसे अराकान के जगलों में माघो ने मौत के घाट-उतार दिया। इस पृष्ठभूमि के अनन्तर में नव-मुग़ल सम्राट औरगजेब को जो बिरासत प्राप्त हुई वह किन्ही भी अर्थों में सरल व सामान्य नहीं कही जा सकती। उसे विरासत में ऐसा अमीर-वर्ग प्राप्त हुआ जिसकी उत्तराधिकार के युद्ध में अवसरवादी तथा पलायनवादी भूमिका रही। मुगल अमीर-वर्ग, (1657-58) में पूर्णत असन्तुलित हो चुका था। उस अमीर वर्ग को पुन सन्तुलित बनाने उसमें नवीन-स्फूर्ति का सचार करने, सशक्त बनाने तथा राजनीतिक योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु एव अप्रतिष्ठित मुगल साम्राज्य को पुन प्रतिष्ठित बनाने का दायित्व नि.सदेह औरगजेब पर ही था। वह महान राजनीतिज्ञ, कुशल- प्रशासक, योग्य-सेनानायक, दूरदर्शी, कूटनीतिज्ञ, एव दृढसकल्पित व्यक्ति था। वह मुगल अमीर-वर्ग के विभिन्न जातीय-तत्वों, की जातियों एव प्रजातियों से भली-भाँति परिचित था। एक ओर तो ईरानियों के शौर्य, उनकी प्रशासनिक क्षमता, सैन्य-योग्यता, सद्व्यवहार एव उनकी शिष्टिता तो दूसरी ओर तूरानियों तथा अफगानों की उद्ण्डता तथा सदिग्ध-आचरण से वह

अनभिज्ञ न था। यद्यपि उसे पूर्ण विश्वास, राजपूतों की अटूट निष्ठा, कर्तव्यपरायणता एव वीरता में था परन्तु दक्षिण में दीर्घकाल तक रहने के कारण वह मराठा सरदारों के चरित्र से पूर्णत परिचित हो चुका था। मराठा सरदारों के सदिग्ध आचरण के कारण वह उन्हें पूर्णरुप से निष्ठावान एव स्वामिभक्त नहीं कह सकता था। विशेषत ऐसे समय में जब शिवाजी ने अनेक मराठा सरदारों पर विजय प्राप्त कर उन्हें अपने प्रति स्वामिभक्त व निष्ठावान बना दिया था। उसके द्वारा स्वराज्य-सस्थापन की महत्वाकाक्षा ने मराठो में एक नवीन जागृति उत्पन्न कर दी थी और वे उसके नेतृत्व में किसी भी शत्रु से लोहा लेने के लिए दृढसकल्पित हो चुके थे। अन्य शब्दों में मुगल साम्राज्य के सामने दक्षिण में नवीन चुनौतियाँ क्रमश सम्मुख आने लगी। ये ऐसी चुनौतियाँ थी जिनका सामना करना औरगजेब के लिए अनिवार्य हो गया। मूल प्रश्न यह था कि कुछ मराठा सरदारों की विद्रोहात्मक प्रवृत्ति को देखते हुए क्या उन्हें यों ही छोड दिया जाय और उनसे दक्षिण में मुगल अधिकृत प्रदेशों की रक्षा न की जाय ? क्या बीजापुर व गोलकुण्डा के शासकों को इतनी छूट दे दी जाय कि वे शिवाजी के निरन्तर धन-जन से सहायता करते हुए मुगल अधिकृत प्रदेशों को निरन्तर क्षति पहुँचाते रहें ? अथवा दक्षिण में मुग़लों की विस्तारवादी नीति को आगे न बढाते हुए उसे वही रोक दिया जाये और शिवाजी को स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने तथा बीजापुर व गोलकुण्डा के शासकों को अर्द्धस्वतन्त्र राज्यों के रुप में ज्यों का त्यों छोड दिया जाय। वास्तव में शाहजहाँ के राज्यकाल के उत्तरार्द्ध में दक्षिण में मुगलों की प्रतिष्ठा दाँव पर लगी हुई थी। मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा इस समय औरगजेब की प्रतिष्ठा थी। किसी भी मूल्य पर वह यह प्रतिष्ठा वापस लाने के लिए दृढ सकल्पित था।

शिवाजी की बढती हुई सैनिक शक्ति, उसकी ख्याति एव प्रभाव से औरगजेब पहले से ही परिचित था। अपने पिता शाहजहाँ की भाँति उसने मराठा सरदारों के प्रति अपना दृष्टिकोण अपनाया। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि शाहजहाँ के राज्यकाल में मुमल अमीर-वर्ग में मराठा सरदारों की सख्या समय के अनुसार घटती-बढती रही

और शनै -शनै मराठा सरदार मुगल अमीर-वर्ग का अविछिन्न अग बन गये। मुगल अमीर-वर्ग की प्रकृति में औरगजेब ने कोई विशेष परिवर्तन करना उचित भी नही समझा। दक्षिण में मराठा बिद्रोहियों की समस्या को अपने सामने देखते हुए उसने मराठा सरदारों की सैनिक-शक्ति, उनके प्रभाव एव प्रभावशाली व्यक्तित्व से लाभ उठाने की सतत् चेष्टा जारी रखी। उत्तराधिकार के युद्ध में उसे 11 (ग्यारह) मराठा सरदारों का सहयोग प्राप्त हुआ। जिससे निष्ठावान मराठा सरदारों के प्रति उसके उदार दृष्टिकोण का परिचय मिलता है। डॉ0 एम0 अतहर अली ने औरगजेब के शासनकाल को दो भागों में - (1658 से लेकर 1678) तथा (1679 से लेकर 1707) में विभक्त किया है। हमें यह देखना है कि औरगजेब कालीन अमीर-वर्ग में राज्यकाल के दोनों ही चरणो में मराठो की स्थिति क्या थी। डॉ0 एम0 अतहर अली के अनुसार शाहजहाँ के राज्यकाल के 30 वर्षों में 1000 से लेकर 5000 के मनसबदारों के विभिन्न श्रेणियों में तेरह (13) मराठे थे।[1] मैंने 1000 के मनसब से नीचे के श्रेणियों के मराठा सरदारों की गणना करते हुए यह सख्या '126'[2] बतायी है। परन्तु डॉ0 एम0 अतहर अली ने 1000 से नीचे के मनसब प्राप्त करने वाले मराठा सरदारों को अपनी सूची में सम्मिलित नहीं किया है। पुन डॉ0 एम0 अतहर अली, औरगजेब के प्रथम चरण- (1658-1678) में 1000 व उससे ऊपर के विभिन्न श्रेणियों के 5000 तक को विभिन्न श्रेणियों में 27 मराठे थे।[3] द्वितीय चरण (1679-1707) के मध्य, 1000 व 1000 से 5000 तक विभिन्न श्रेणियों के मनसबों में उनकी कुल संख्या 96 हो गई। यह तथ्य अविस्मरणीय एव महत्वपूर्ण है कि जबकि शाहजहाँ के राज्यकाल में 1000 व उससे ऊपर के मनसबदारों की कुल सख्या का (2 9) प्रतिशत मराठा

---

1. एम0 अतहर अली- औरगज़ेब कालीन मुगल-अमीर-वर्ग, पृ0-45,

2. देखिए परिशिष्ट सख्या (2)

3 डॉ0 एम0 अतहर अली, औरगजेब कालीन मुग़ल-अमीर-वर्ग, पृ0-45,

मनसबदार थे जबकि औरगजेब के राज्यकाल के प्रथम चरण में यह प्रतिशत बढकर 5 5 तथा द्वितीय चरण (1678-1707) में (16 7) हो गया।[4]

मुगल अमीर-वर्ग में मराठा सरदारों की स्थिति का निरुपण दूसरे ढग से भी किया जा सकता है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि एम0 अतहर अली ने औरगजेब के राज्यकाल को दो चरणों में (1658-78) एव (1678-1707 विभक्त किया है। प्रथम चरण में (1658-1678) तक 1000 तथा उससे ऊपर के मनसबदारो की 486 एव दूसरे चरण में 1000 व उससे ऊपर के कुल मनसबदारों की सख्या 575 थी।[5] प्रथम चरण में, 486 मनसबदारों में जिनमे से ईरानी 136, 67 तूरानी, 43 अफगान, 65 भारतीय मुसलमान, 70 अन्य मुसलमान प्रजातियों या जिनकी जाति अज्ञात है, 105 हिन्दू एव 27 मराठा थे। इस प्रकार से उन्हीं के अनुसार ईरानियों का प्रतिशत 27 9, तूरानियों का प्रतिशत 13 7, अफगानों का प्रतिशत 8 8, भारतीय मुसलमानों का प्रतिशत 13 4, अन्य मुसलमान जातियों या अज्ञात मुसलमानों का प्रतिशत 14 4, हिन्दुओं का प्रतिशत 21 6 एव मराठो का प्रतिशत 5 5 था। इसी प्रकार से राज्यकाल के द्वितीय चरण 1679-1707 में 1000 और उसके ऊपर के मनसबदारों के कुल सख्या 575 में से 126 ईरानी, 72 तूरानी, 34 अफगान, 69 भारतीय मुसलमान, 62 अन्य मुसलमान प्रजातियाँ या अज्ञात प्रजातियाँ, 182 हिन्दू, एव 96 मराठा थे। इस प्रकार से ईरानी 21 9 प्रतिशत, तूरानी 12 5 प्रतिशत, अफगान 5 9 प्रतिशत, भारतीय मुसलमान 12 0 प्रतिशत, अन्य जाति के मुसलमान व अज्ञात जातियों के मुसलमान 10 7 प्रतिशत, हिन्दू 31 6 प्रतिशत तथा मराठे

---

4 डॉ0 एम0 अतहर अली, औरगजेब कालीन मुगल-अमीर-वर्ग, पृ0-45,

5 डॉ0 एम0 अतहर अली, औरगजेब कालीन मुगल-अमीर-वर्ग, पृ0-291 व 360 (परिशिष्ट में देखें।)

16 7 प्रतिशत थे। इस तुलनात्मक विवरण से यह ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण मुगल अमीर-वर्ग में औरगजेब के शासनकाल के प्रथम तथा द्वितीय चरणों में शाहजहाँ के काल की तुलना में मराठा मनसबदारों की सख्या में आशातीत् वृद्धि तो अवश्य हुई परन्तु अन्य जातीय-तत्वों की तुलना में उनकी वृद्धि सन्तोषजनक नही हुई। यद्यपि 1000 तथा उसके ऊपर के मनसबदारों की श्रेणियों में मराठो की सख्या में अत्यधिक वृद्धि नही हुई किन्तु नि सन्देह उसके नीचे की श्रेणियों में उनकी सख्या में समयानुसार या आवश्यकतानुसार वृद्धि होती रही।

औरगजेब के राज्यकाल (1658-78) एव (1679-1707 ई0) के दोनों चरणों में जो मराठा मनसबदार मुगल अमीर-वर्ग में थे, उनकी सूची परिशिष्ट सख्या (3) में दी गयी है। औरगजेब ने अनेक मराठा सरदारों को न केवल उच्च मनसब ही प्रदान किये वरन् उनकी योग्यता जाति, वश के आधार पर उन्हें सम्मान-सूचक चिन्ह व उपाधियाँ प्रदान की। अतएव- मुगल सम्राट औरगजेब ने सिंहासनारुढ होने के उपरान्त मुगल सरदारों की भाँति मराठा सरदारों को भी जो शाही सेवा में उपस्थित हुए, मनसब, उपाधियों के साथ-साथ सम्मान-सूचक चिन्हों से विभूषित कर शाही सेवा में नियुक्त किया।

इनमें सर्वप्रथम वर्ष (1658-59) ई0 के अन्तर्गत सम्राट ने मराठा सरदार 'मालोजी एव परसों जी' जिन्होंने की पहले सम्राट शाहजहाँ के पक्ष से उत्तराधिकार सघर्ष में धरमत के युद्ध में भाग भी लिया था को सम्राट औरगजेब के अन्तर्गत शाही सेवा में उपस्थित होने पर यद्यपि सम्राट का दृष्टिकोण उनके पूर्व सेवाओं को लेकर मनोमालिन्यपूर्ण था, किन्तु उसने अपने राज्यकाल के 'तीसरे वर्ष' में उन्हें शाही सेवा से हटाकर तथा उनके मनसब वापस लेकर उनके पुरानी सेवाओं के विचार से प्रेरित हो- मालोजी के लिए,

30,000 रुपये एव परसोजी के लिए 20,000 रुपये वार्षिक पेंसन देकर सम्मानित किया।[6]

वर्ष, 1664-65 में, शिवाजी के विरुद्ध मुगल अभियान से पूर्व मिर्जा राजा जयसिंह ने कर्नाटक के जमीदारों में 'शिवप्पानायक'व वासवपत्तन के जमीदार को शाही सेवा में उपस्थित किया तथा उन्होंने मनसब एव सुरक्षा के बदले अपनी-अपनी सेवाए अर्पित किया।

इसी वर्ष, जयसिंह के माध्यम से मराठा सरदारों में, वाजीचन्द्रराव, अम्बाजी गोविन्द राव मोरे, आत्माजी, कहर कोली तथा रामा एव हनुमन्त राव ने मुगल सेवा में उपस्थित होकर अपनी-अपनी सेवाए अर्पित की साथ ही बदले में उन्हें अनेक सम्मान, मनसब, उपहारादि भेंट किये गये तथा उनके सुरक्षा की जिम्मेदारी भी मुग़ल सेना पर रही।[7] (12 जून, 1665 ई0) को पुरन्दर के सन्धि के उपरान्त मिर्जा राजा जयसिंह को सम्राट से राजाज्ञा प्राप्त हो जाने पर शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को 5000 का मनसब

---

6 शाहनवाज खॉं, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास, भाग 1,पृ0-307-8 पर।

7 (।) मुशी 'उदयराज तलयार खा कृत- 'हफ्त अजुमन' (अनु0) जगदीश नारायण-सरकार, मिलिट्री, डिस्पैचेज् आफ ए सेवेन्टींथ सेन्चुरी इण्डियन जर्नल, पृ0-26 (Ref),

- कैम्ब्रीज हिस्ट्री आफ इडिया भाग 4, पृ0- 258,

- डॉ0 सी0 बी0 त्रिपाठी, लाईफ एण्ड टाइम आफ मिर्ज़ा राजा जयसिंह, (अप्रकाशित शोधग्रथ, इ0 वि0 इ0) पृ0-211-13 तक।

देकर सम्मानित किया गया।[8] (12 मई, 1666 ई0) सम्राट औरगजेब द्वारा अपने 50वें जन्मदिन के अवसर पर शाही सेवा में शिवाजी एव उनके पुत्र शम्भा के उपस्थित होने पर 1500 अशर्फियों, निसार, 6000 रुपये तथा अनेक बहुमूल्य भेंटों को देकर सम्मानित किया गया। जो शिवाजी को अस्वीकार ही रहा।[9] (24 फरवरी, 1667 ई0) में शिवाजी के सेनापति नेताजी (नेतूजी) को जो कि पहले शिवाजी से मतभेद होने पर आदिलशाही (बीजापुरी) दरबार में चले गये थे, मिर्जा राजा जयसिंह ने अपने कूटनीतिक चालों से अपने पक्ष में कर मुगल सेवा में आने का निमत्रण दिया। तथा उसके द्वारा सहमति व्यक्त करने पर एव जब वह अपने विवशता से वशीभूत हो 'मुसलमान' बनना भी स्वीकार कर लिया तो सम्राट द्वारा उसे 3000/2000 का मनसब एवं 'मुहम्मद कुली खॅा' की उपाधि देकर मुगल सेवा में नियुक्त किया गया।[10] (7 जुलाई 1675) एक तरफ जबकि शिवाजी का मुगल-विरोधी सैन्य अभियान जोरों पर था तथा मुगलों को लगातार असफलताएँ मिल रही थी, उसी समय शिवाजी का पुत्र शम्भाजी ने अपने पिता से रुष्ट होकर (विद्रोही होकर) मुग़ल सरदार 'जाफरजग' से (गुप्त रुप में) भेंट की तथा जाफर-जग के माध्यम से वह शाही सेवा में उपस्थित हुआ फलत सम्राट द्वारा उसे 6000/ का मनसब साथ ही नकद 80 लाख दाम, नगाडे, डका, झडा तथा खिलअत एव फरमान देकर सम्मानित किया गया।[11]

---

8 साक़ी मुस्तैद ख़ॉ, मासीर-ए-आलमगीरी पृ0-51-52 (अनु0) जे0 एन0 सरकार,पृ0-33,

- मुशी उदयराज तालयार ख़ॉ, हफ्तअजुमन (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 53 पर,

9 (पू0 उ0) मासीर, पृ0- 56 (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0-36,

10 (पू0 उ0) मासीर-ए-आलमगीरी (अनु0), जे0 एन0 सरकार, पृ0- 40

11 (पू0 उ0) मासीर-ए-आलमगीरी (अनु0), जे0 एन0 सरकार, पृ0- 88 पर

इस प्रकार सम्राट के राज्यकाल में (अर्थात 1658 से लेकर 1680 ई0 तक) मराठा सरदारों का शाही सेवा में आना-जाना बना रहा, तथा उन्हें सम्राट द्वारा समय-समय पर उपरोक्त उल्लिखित सम्मानों से विभूषित कर सम्मानित किया जाता रहा।

उनकी (भूमिका) यद्यपि औरगजेब के समकालीन स्रोतों में जो फारसी एव ऐतिहासिक ग्रथों के रुप में उपलब्ध रहे हैं, में मराठा सरदारों की भूमिकाओं का उल्लेख स्वतत्र रुप एव विस्तृत रुप से नही मिलता है। प्राप्त उल्लेखों द्वारा उपरोक्त मराठा सरदार सम्राट से मनसब जागीर, उपाधि एव अनेक बहुमूल्य उपहारों, सम्मान-सूचक चिन्हों को प्राप्त करते रहे तथा अपनी-अपनी सेवाए अर्पित भी करते रहे। परिपेक्ष्यत मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा कूटनीति से मुगल सेवा में लाये गये उपरोक्त मराठा सरदारों को सम्मानित कर शिवाजी के विरुद्ध 'पुरन्दर के घेरे' में तथा इस अवधि के अन्तर्गत विद्रोही मराठो के दमनार्थ इन मराठा सरदारों ने शाही सेवा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाए अर्पित करते रहे।[12]

---

12 (फ़ू0 उ0) हफ्तअजुमन, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- (26 Ref),

- कैम्ब्रीज हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग 4, पृ0- 258,

- (फ़ू0 उ0) मासीर (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 32-33 (इत्यादि)

- (फ़ू0 उ0), हफ्तअजुमन, (पेरिस प्रति) पृ0- 41, 50-55, 13 लेटर्स, न0 8, पृ0- 9-11 पर,

- मनूची भाग II, पृ0- 132-33, आलमगीर पृ0- 888, 13 लेटर्स न0 6 पृ0- 6-9, डॉ0 सी0 वी0 त्रिपाठी, (फ़ू0 उ0), अप्रकाशित, शोध ग्रथ, पृ0- 211-13 व 213-226 तक

24 फरवरी 1667 ई0 में मराठा सरदार एव शिवाजी के सेनापति नेता जी (नेतूजी) को मिर्जा राजा जयसिंह ने अपने कूटनीतिक चालों से मुगल सेवा में लाकर तथा उसको मुसलमान बनने पर उचित मनसब देकर उसकी महत्वपूर्ण भूमिका के रुप में अपने चर्चित 'बीजापुर- विजय- अभियान' में जमकर उपयोग किया। अन्य अभियानों में भी उसने मुगल साम्राज्य की सेवा की।[13]

इसी प्रकार, 5 अगस्त, 1668 ई0 को शम्भा जी मुग़ल शिविर में पुन सेवा के लिए प्रस्तुत हो गया। उसके अधीन सेना के नेता प्रतापराव गूजर एव नीराजी रावजी को नियुक्त किया गया था। उसे पच हजारी का मनसब भी दिया गया था, और भेंट में एक रत्नजटित तलवार, हाथी के साथ उसे 'बरार' का सूबेदार बनाया गया। इस प्रकार शम्भाजी मुगलों के अधिकृत प्रदेशों की सुरक्षा एव उसके अन्तर्गत 'बरार' की सुव्यवस्था करने से अपनी भूमिका निभाते रहे। शाही अभियानों में भी उन्होंने भाग लिया।

(अप्रैल, 1674 ई0 से जून 1676 ई0) तक शिवाजी का लगातार मुगल अधिकृत प्रदेशों को विजित करने से सम्राट औरगज़ेब बहुत चिन्तित हो उठा तथा उसने शिवाजी को शान्त करने एव उसके दमनार्थ किसी ठोस उपाय की खोज में रहा। उसने इस स्थिति में नेताजी (मुहम्मद कुली खाँ) को बुलाकर उससे इस गम्भीर विषय पर राय ली तथा नेताजी शिवा के विरुद्ध उसके विनाश के निमित्त दिलेरखाँ के साथ प्रस्थान भी कर दिया। दुर्भाग्यवश, सम्राट को इस अभियान में असफलता ही मिली।[14]

---

13. (पू0 उ0) मासीर, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 34-38 एव 40 पर,

- जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0- 155 एव 177 पर।

14 जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0),पृ0- 214-215,

वर्ष 1678 में कर्नाटक अभियान से वापस आने पर शम्भा को उसके दुर्व्यवहारों से रोकने हेतु शिवाजी द्वारा अपने पुत्र शम्भा के प्रति कडाई वरतने के फलस्वरुप तथा उसे बन्दी बनाये जाने पर पिता के इस कठोर व्यवहार के विरुद्ध शम्भा जी की आत्मा विद्रोह कर उठी, फलत मुगल सरदार दिलेरखाँ के माध्यम से शम्भाजी सपरिवार शाही सेवा में चले गये। शम्भा जी के भूमिकाओं का पूरा उपयोग करने हेतु मुगल सम्राट ने उन्हें दिलेरखाँ के साथ 'बीजापुर अभियान' पर भेजा तथा उन्होंने मार्ग में सम्मलित रुप से भूपालगढ पर आक्रमण भी किया तथा 'पन्हाला'को विजित करने में भी उसकी अहम् भूमिका रही।[15]

इसके अतिरिक्त, जहाँ तक मराठा सरदारों को मुगल प्रशासन द्वारा दी गई जागीरों का प्रश्न है वहाँ हम देखते हैं कि वहाँ दो प्रकारों की जागीरे वतन जागीरें या तनख्वाह जागीरें ही प्रदान की गईं। जिन मराठा मनसबदारों को अपने पूर्वजों से जागीरें प्राप्त हुई थी वे पैतृक या वतन जागीर कही जाती थीं। मुगल अमीर-वर्ग में ऐसे मराठा सरदारों को सम्मिलित करने के उपरान्त उन्हें उनकी वतन जागीर प्रदान कर दी गई। इसके विपरीत कुछ ऐसे मराठा सरदारों के नाम भी मिलते हैं जिन्हें कि उनके मनसब के अनुसार वेतन या तनख्वाह न देकर उन्हें दक्षिण में ही मुगल अधिकृत प्रदेशों में ही जागीरें प्रदान कर दी गई। ताकि वे अपने मनसब के अनुरूप अश्वारोही रख सकें और उनका भरण-पोषण कर सकें। इस प्रकार से मुगल अमीर-वर्ग में मराठा सरदारों को मनसबदार तथा जागीरदार की भूमिका निभानी पडती रही।

---

15 जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0),पृ0- 249-252 पर,

- (पू0 उ0) मासीर-ए-आलमगीरी, (अनु0) जे0 एस0 सरकार, पृ0-88 पर,

इस प्रकार उपरोक्त विवरणों से हमें स्पष्ट होता है कि, मुगल अमीर-वर्ग में मराठा-अमीर- वर्ग के सम्मिलित होने एव अपनी राजनीतिक भूमिकाओं एव मुगल साम्राज्य के लिए अपनी सेवाए अर्पित करने का यथोचित प्रयास किये जाते रहे। अतएव इस दिशा में विस्तृत जानकारी के लिए यह समीचीन होगा कि हम दक्षिण की राजनीति के कुछ पहलुओं पर दृष्टिपात कर लें। सर्वप्रथम शिवाजी के कृत्यों पर ध्यान देना आवश्यक है। 1656 से 1658 तक शिवाजी की राजनीतिक गतिविधियाँ इस प्रकार से थी।

किसी भी राष्ट्र की सच्ची शक्ति की अभिव्यक्ति इस बात से नही होती है कि वह अपने को बचा सकने में कितना समर्थ है, बल्कि इस बात से होती है कि उसकी अगली पीढियों में राष्ट्रीय सुरक्षा के कार्य को और अधिक मजबूती तथा सफलता के साथ सम्पादित करने की कितनी क्षमता है। शिवाजी के समकालीन इन दोनों मानदण्डों पर यह सिद्ध करते हुए खरे उतरते हैं कि बहादुरी तथा बुद्धिमत्ता इन दोनों दृष्टियों से राष्ट्रीय-निर्माण के कार्य में वे मराठों को नेतृत्व प्रदान करने के योग्य थे।[16] स्वराज्य से सम्बन्धित उनके प्रयोगों की अगली स्थितियाँ शनै -शनै तीब्रतर और उज्ज्वलतर होती गयी। (1654-64) में अदभुत घटनाए हुई, जिनके फलस्वरुप शिवाजी महाराष्ट्र के पूर्ण नेता के रुप में प्रतिष्ठित हो गये। शिवाजी ने अब चारो ओर पूर्ण रुप से प्रसरण प्रारम्भ कर दिया। अपनी रखी हुई नींव पर वे सतत् भवन निर्माण करते रहे। किन्तु अपने शक्तिशाली पडोसियों के साथ उन्होंनें सावधानी पूर्वक युद्ध को टाला और अपने अभ्युदय के प्रति ईर्ष्यालु आन्तरिक विरोधियों का दमन कर दिया। इस प्रकार उन्होंने स्वराज्य

---

16 एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय (अनु0) पृ0- 41 पर,

निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।[17] मावल के अधिकाश देशमुख शनै -शनै उसके साथ हो गये और उन्होंने उनके नेतृत्व को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया। परन्तु कुछ ऐसे भी थे जिन्हें अपने पैतृक महत्व का गर्व था और जिनकी भक्ति बीजापुर के प्रति इतनी प्रबल थी कि राष्ट्र के पुकार को वे अनसुनी कर सकते थे। महावालेश्वर की पहाडी के पश्चिमी तट पर चन्द्रराव उपनाम से बिख्यात जावली के मोरे-परिवार का एक प्राचीन देशमुख था जिसे राज्य की ओर से उच्च सम्मान प्राप्त था। उसे उच्च क्षत्रियत्व का अभिमान था और वे अपने आप को महान चन्द्रगुप्त मौर्य का वशज् मानते थे। क्षत्रियत्व का यह मान भोंसलो को प्राप्त नहीं था। अधिकाश मावल देशमुखों से मोरे परिवार के पारिवारिक सम्बन्ध थे, अतएव उन्होंने शिवाजी का साथ देने से इन्कार कर दिया। इस कारण शिवाजी के लिए मोरे लोगों से निपटना सबसे पहला आवश्यक कार्य बन गया। शिवाजी और मोरे परिवार में कलह का सूत्रपात सन् 1648 में ही हो गया था।[18] बाद में मोरे परिवार, शिवाजी और अफजल खॉं के बीच (जो बीजापुरी सरदार था) एक प्रकार का त्रिकोण-सघर्ष प्रारम्भ हो गया। 1654 में अफजलखॉं का स्थानान्तरण 'वाई' से कनकगिरि हुआ और शिवाजी को किसी निर्णय पर पहुँचने के लिए अभिलषित अवसर प्राप्त हो गया। कुछ मावल देशमुखों को विशेषकर कान्होजी जेधे, हैबतराव सिलिमकर और मोरे परिवार के अन्य पडोसियों को उन्होने अपने पक्ष में कर लिया तथा जावली को एक प्रस्ताव भेजा, जिसकी शर्तों को मानने से मोरे परिवार ने इन्कार कर दिया। तदोपरान्त शिवाजी ने अपने सेनापति, शम्भाजी कावजी के नेतृत्व में इन देशमुखों को थोडी सी सेना के साथ जावली का घेरा डालने का आदेश प्रदान किया। प्रथम प्रयास में असफल सिद्ध होने पर पुन शिवाजी ने

---

17. जे0 एन0 सरकार, हाऊस आफ शिवाजी, पृ0 65, सरदेसाई (पू0 30) भाग 1, पृ0 106-7।

18 बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, पृ0 31-35।

दूसरी सेना रघुनाथ बल्लाल कोर्डे की अधीनता में भेजी।[19] जावली के समीप युद्ध हुआ जिसमें हनुमन्तराव मोरे मारा गया जबकि जसवन्तराव मोरे जान बचाकर भागा और उसने रायरी के गढ में शरण ली। उधर प्रतापराव मोरे ने भी शिवाजी को अपने क्षेत्र से निकाल बाहर करने के निमित्त आदिलशाह की सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से बीजापुर पलायन कर चुका था। (26 जून, 1656 ई0) शिवाजी ने स्वय जाबली पहुचकर कर वहाँ दो मास तक के अपने प्रवास के दौरान मोरे परिवार के निवास-स्थान को पुन आबाद किया और उनकी जागीरों पर अपनी सत्ता स्थापित कर ली। इसी दौरान, रायरी से यशवन्तराय की बढती हुई बिद्रोही प्रवृत्तियों को शात करने के निमित्त शिवाजी ने सहमति एव शातिवार्ता के निमित्त यशवन्तराव को बुलाया किन्तु उसे सपरिवार मार डाला। यह दीर्घ और कष्टप्रद कार्य शिवाजी के चरित्र पर अमिट धब्बा जैसा परिलक्षित होता रहा है।[20]

जावली पर अधिकार करने के उपरान्त शिवाजी ने प्रसिद्ध पारघाट की घाटी को नियंत्रित करने के लिए एक नये गढ का निर्माण कराया और उसका नाम 'प्रतापगढ' रखा,

---

19 जे0 एन0 सरकार कृत- शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स पृ0- 39-41 पर।

20 **जावली-विजय के लिए देखें-**

- जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 39-46, (ऐतिहासिक स्फुट लेखमाला 1, 7 में पारसनिक कृत- मोरे बखर के आधार पर, शिव भारत, जेधेशकावली आदि;

- कादार मोरे, शिव चरित, सा0 3, 639 पृ0- 230 पर, बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, पृ0 34-38।

जबकि अन्य समस्त गढों के नये नाम रखे गये। इस प्रकार 'जावली की विजय' शिवाजी की सफलताओं की प्रथम महत्वपूर्ण कडी साबित हुई। जाबली की सफलता से दक्षिण में शासन करने वाली दिल्ली (मुगल) एव बीजापुर (आदिलशाही) दोनों सत्ताओं की दृष्टि में वे खटकने लगे। ठीक इसी समय मुगल साम्राज्य के प्रतिनिधि के रुप में औरगजेब दक्षिण भारतीय इतिहास के रगमच पर प्रकट हुआ। निजामशाही राज्य की विजय के पश्चात जब शाहजहाँ उत्तर की ओर लौट गया तो उसने औरगजेब को दक्षिण में अपना प्रतिनिधि (सूबेदार)नियुक्त किया। 1633-34 में विजित निजामशाही प्रदेशों की पूर्ण व्यवस्था करने का उसको आदेश दिया।[21] इस स्थिति में 1657 से पूर्व तक शिवाजी का सतत् प्रयास इस बात में निहित था कि जैसे भी बने, मुगल विरोध को उकसाये बिना प्रमुख रुप से अपनी जागीर को दृढता प्रदान की जा सके तथा उन्होंने ऐसा किया भी। तदोपरान्त 1657 ई0 के आस-पास जब शिवाजी की दृष्टि अपने पिता की जागीर से आगे जाने लगी तभी सर्वप्रथम औरगजेब का ध्यान उनकी ओर गया। जावली के मोरे-परिवार से निश्चिन्त होकर शिवाजी जी ने 1657 ई0 के ग्रीष्मऋतु में अपना पहला धावा मुगल अधिकृत प्रदेशों पर किया। फलत. 'जुन्नार' एव 'अहमदनगर' को लूट लिया। साथ ही उन्होंने कल्याण एव भिवण्डी को हस्तगत करके उत्तर कोंकण के आदिलशाही प्रदेशों पर चढाई कर दी। जबकि इसी समय बीजापुर निरकुश मुगल आक्रमण में उलझा हुआ था, जिसका प्रारम्भ 4 नवम्बर, 1656 ई0 को आदिलशाह के मृत्यु के बाद हुआ था।[22] अपने उत्कृष्ट गुप्तचर-व्यवस्था एवं शौर्यता के बल पर लगातार सफलता के क्रम में अग्रसर हो रहे, इस

---

21 बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, पृ0 38-40।

22 जे0 एन0 सरकार (पू0 उ0) पृ0- 46-47 पर, बालकृष्ण (पू0 उ0) पृ0 40-44।

महान मराठा व्यक्तित्व (शिवाजी) ने 1657 ई0 के अन्त तक उत्तर कोंकण के सम्पूर्ण प्रदेश पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। शिवाजी ने अपने नव-विजित प्रदेश 'कल्याण प्रात' में प्रथम राज्यपाल के रुप में 'आबाजी सोनदेव' को अधिष्ठित किया। कल्याण की विजय से[23] शिवाजी का प्रभाव एक त्रिभुजाकार क्षेत्र पर स्थापित हो गया, जिसकी सीमाएं पश्चिमी तट पर बसई से लेकर राजापुर तक थी और अन्य दो भुजाए इन स्थानों से लेकर इन्दापुर पर मिलती थी। उन्होंने इस प्रदेश के अनेकस गढों को भी विजित करने में सफलता प्राप्त की। उत्तर कोंकण के जिले से शिवाजी शीघ्र ही चिपलूण होकर राजापुर तक दक्षिण में बढ गये। इस दौरान अपने सफल अभियानों के अन्तर्गत आने वाले प्रदेशों की रक्षात्मक एव आर्थिक योग्यता का निरीक्षण करते हुए एक लम्बी यात्रा पूरी कर वे राजगढ वापस पधारे।

4 सितम्बर,1657ई0 को औरगजेब अपने पिता के अत्यधिक बीमार होने की खबर से अति व्याकुल हो गया तथा अपनी समूचे सैन्य-सामग्री के साथ उत्तर पहुँचकर वह सिंहासन के लिए संघर्ष करने को पूर्णरुपेण तत्पर हुआ। अतएव अपने पिता के बीमारी की समाचार को उसने अत्यन्त गोपनीय रखते हुए और बीजापुर के मुगल-समर्थित अधिकारियों को अपनी सम्पूर्ण शक्ति से शिवाजी पर नियंत्रण रखने की कडी चेतावनी दी। साथ ही उन्हें राय दी कि यदि राज्य के लिए शिवाजी की सेवाएं आवश्यक ही हो तो उसके पिता शाहजी के समान ही उसे भी दूर देश कर्नाटक में नियोजित किया जाय।

---

23. जे0 एन0 सरकार हाऊस आफ शिवाजी, पृ0- 65 तथा लिडिम नोबुल्स आफ बीजापुर पृ0- 55, बालकृष्ण (पू0 30) पृ0 46।

इसके उपरान्त जहा एक ओर औरगजेब ने उत्तराधिकार सघर्ष में भाग लेने दिल्ली के गद्दी पर आधिपत्य जमाने के उद्देश्य से 25 जनवरी, 1658 ई0 को औरगाबाद से प्रयाण किया, वही दूसरी ओर औरगजेब की अनुपस्थिति के कारण शिवाजी को दक्षिण में अपनी स्थिति और बेहतर बनाने का स्वर्णिम-अवसर प्राप्त हुआ। फलत उन्होंने इसका पूरा उपयोग करते हुए 1657 ई0 के अन्त में एव 1658 ई0 के पूरे वर्ष भर तक, उत्तर और दक्षिण कोंकण में अपनी स्थिति सुदृढ कर ली।[24]

शाही सत्ता को पूर्णरूपेण सुव्यवस्थित एव प्राप्त कर औरगजेब ने अपना पूरा ध्यान दक्षिण की ओर दिया तथा वहाँ मुगल अधिकृत प्रदेशों पर बढते हुए मराठा दबाव को दूर करने एव उन्हें (शिवाजी को) निष्प्रभावी बनाने के उद्देश्य से उसने अपने मामा 'शाइस्ता-खाँ' को जो विश्वस्त एव वीर सेनापति था, दक्षिण का सूबेदार नियुक्त कर भेजा। साथ ही उसे विशेषत यह आदेश भी दिया गया कि वह जैसे भी हो शिवाजी के, मुगल अधिकृत प्रदेशों एव दक्षिणी क्षेत्रों पर बढते हुए प्रभाव एव उपद्रव को रोके। अतएव इन मूलभूत उद्देश्यों को सिरोधार्य कर मुगल सेनापति शाइस्ता खाँ, जनवरी, 1660 ई0 में औरगाबाद पहुँचा। कुछ समय तक उसने दक्षिण के राजनीतिक कार्यवृत्तियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने में लगा रहा तथा भावी योजनाओं को सफल बनाने की सोच में रहा। ठीक इसी समय जब 'पन्हाला' में शिवाजी बहुत परेशान थे, तभी उत्तर से प्रसिद्ध मुग़ल सेनापति

---

24 शिवाजी के जावली - बिजय से लेकर 1657-58 तक की घटनाओं के लिए देखें-

- जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0- 101-112, बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, पृ0 46-48।

- जेम्स ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, 6पृ0- 115-117,

- जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 58-59 (इत्यादि)

शाइस्ता खाँ दक्षिण का सूबेदार नियुक्त होकर अहमदनगर आ गया था। फरवरी, 1660 ई0 के अन्त में वह अहमदनगर से चला तथा पूना और बारामती पर अपना प्रभाव स्थापित करता हुआ अप्रैल, 1660 तक दक्षिण में वह शिरवल तक पहुँचा। जबकि इस समय शिवाजी पन्हाला में घिरे हुए थे।[25] इसी समय शाइस्ता खाँ उत्तम अवसर जानकर 'पूना' पर आधिपत्य स्थापित कर वहाँ स्थित, शिवाजी के 'लाल महल' को अपना स्थायी निवास बनाया तथा वहीं से दक्षिण में मुग़ल अधिकृत क्षेत्रों की सुरक्षा पर पूरा ध्यान दिया। उसने अपने आगामी अभियान में 'चाकन' को विजित कर लिया तथा उजवेग खा को चाकन

---

25 **शाइस्ता खाँ का शिवाजी के विरुद्ध अभियान हेतु देखें-**

- साकी मुस्तैद खा कृत - मासीरेआलमगीरी (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 18-19,
- जे0 एन0 सरकार, (पू0 उ0) पृ0- 74-75, जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) पृ0- 124,
- जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 54-55, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0- 140-41,
- डॉ0 नुपुर सिन्हा, लाइफ एण्ड टाइम्स आफ शाइस्ता खॉ (शोधग्रथ, अप्रकाशित, इ0 वि0 इ0) से।
- भीमसेन कृत- तारीखेदिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 27।
- खाफी खॉ कृत- मुन्तखब-उल-लुबाब (अनु0) अनीस जहां सईद, पृ0- 169-71, मनूची, स्टोरिया डो मोगोर, पृ0- 21-22, शाहनवाज़ खाँ कृत- मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 414,
- ईश्वरदास कृत- फुतुहात - ए- आलमगीरी (अनु0) तस्सनीम अहमद, पृ0- 73-75 इत्यादि।

का सूबेदार नियुक्त कर उसे किले (चाकन) का नाम परिवर्तित कर 'इस्लामाबाद' रखा गया।[26] जहाँ एक ओर मुगल सेनापति शाइस्ता ख़ाँ मराठा- दुर्गो को विजित करने में लगा हुआ था, वही दूसरी ओर अनुकूल सुअवसर प्राप्त कर शिवाजी, 13 जुलाई, 1660 ई0 की अँधेरी रात में जब घनघोर वर्षा हो रही थी, शिवाजी पन्हालागढ के पिछले भाग से निकल कर विशालगढ की ओर भाग गये। इसकी सूचना मिलते ही मुगल सेनाओ ने शिवाजी का पीछा किया तथा उन्हें गन्तव्य तक पहुँचने में बाधा डाली किन्तु उन्हें शिवाजी नही मिले। इस सघर्ष में स्वामिभक्त मराठा 'बाजी प्रभु' जो शिवाजी की सुरक्षा हेतु तैनात था, को मार डाला गया।[27]

शिवाजीकी पन्हाला और चाकन में पराजय के बाद 1660 ई0 के अन्तिम 3 महीने शान्तिपूर्वक व्यतीत हुए। उन्होंने योजनाबद्ध हो अपना युद्धक्षेत्र, कोंकण या सह्याद्रि के पश्चिम में परिवर्तित करने का निर्णय लिया। 1661 ई0 के प्रारम्भ में शाइस्ता ख़ाँ ने उत्तरी कोंकण या कल्याण जिले की ओर ध्यान दिया। अतएव कोंकण की मुगल विजय को पूर्णता प्रदान करने हेतु उसने कारतलब ख़ाँ के नेतृत्व में एक विशाल सेना भेजी। इसी समय शिवाजी द्रुतगति से दर्रों के अन्तर्गत कारतलब ख़ाँ एवं उसकी सेना के पहुँचते ही दल-बल सहित आक्रमण किया तथा उसे पूरी तरह पराजित कर लूटा। इसके साथ-साथ उन्होंने कोंकण की मुगल-विजय को असफल बना स्वय उस पर आधिपत्य जमा ली। कल्याण जिले एव स्थानीय जिलों के शासकों (राजाओं) ने मराठो के इस आक्रमण से

---

26 जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 55-56,

- जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 78-81 पर,

27 जे0 एन0 सरकार, (पू0 30) पृ0- 82 पर,

भयभीत होकर उनकी आधीनता स्वीकार कर ली तथा उनको कर देना भी स्वीकार किया।[28] इसी क्रम में शिवाजी का विजय अभियान जारी रहा तथ उसने दाबुल के बन्दरगाह को 1661 ई0 में जीत लिया। सगमेश्वर का मुगल सूबेदार भी भयभीत हो पलायन कर गया था। इधर मुगल भी शान्त बैठे नही रहे अपितु मई, 1661 ई0 में मुगलों ने मराठो से कल्याण छीन लिया। इसी बीच मराठो ने 1662 ई0 के प्रारम्भ में मीरा डोंगर, पैन के सम्पन्न शहरों पर हमला किया, किन्तु मुगलों ने जमकर नगरों की रक्षा की तथा मराठो के सभी प्रयासो को नाकाम कर दिया। इन दो वर्षों में हुए अभियान के फलस्वरुप मुगलों ने कोंकण के उत्तरी भाग पर अपना कब्जा बनाये रखा तथा शिवाजी कोलाबा नगर के दक्षिण पूर्व क्षेत्र एव रत्नागिरि जिले के सम्पूर्ण भाग के स्वामी बने रहे। मार्च, 1663 ई0 में मुगलों ने शिवाजी की सेना में रिसाले के सरदार 'नेताजी' का बहुत दूर तक पीछा किया किन्तु उसे पकडने में असफल रहे।[29] रविवार 5, अप्रैल 1663 ई0 को शिवाजी, अपने अद्भुत बिजय-अभियान को सफल बनाने के निमित्त 'सिंहगढ' से प्रस्थान कर एव अपने साथ 400 स्वामिभक्त सरदारों को लेकर 'पूना' के शिविर सीमा में प्रवेश किया। मुगल रक्षकों द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि वे शाही सेना के दक्षिणी सैनिक है और अपना नियुक्त-स्थान ग्रहण करने के लिए वहाँ आये हैं। शिवाजी किले के प्रत्येक भाग से पूर्व-अवगत रहे। फलतः अर्द्धरात्रि को वे शाइस्ताखाँ के निवास के समीप आये किन्तु उसी समय कुछ शाही सेवकों के जाग जाने से वहाँ भगदड मच गयी तथा इस गुप्त आक्रमण

---

28 जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, प0 82-84,

- डी0 एफ0 कारका, शिवाजी, पृ0- 132-33 पर।

29 जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज़ टाइम्स, पृ0- 85-88 पर।

से शीघ्र शाइस्ता खाँ को भी अवगत कराया गया। फिर भी अपनी योजना के अनुरूप मराठा सरदारों का मार-काट जारी रहा। इसमें शिवाजी के कुछ सैनिकों को भी मार डाला गया तथा शाइस्ता खा भी अपने स्वामिभक्त सेवकों एव अपने सूझ-बूझ से बच निकला किन्तु उसके हाथों की अगुलिया कट गयी थी। इस प्रकार शिवाजी ने शाइस्ता खॉ पर भयकर आक्रमण कर अपने तीन वर्षों तक गृहहीन रहने का बदला ले लिया था।[30] इस भयानक अनुभव के बाद शाइस्ताखाँ ने पूना को असुरक्षित समझ औरगाबाद चला गया। अपने इस अभियान को सफलता पूर्वक पूरा कर शिवाजी के अपने सरदारों के साथ सुरक्षित गन्तव्य तक वापस चले जाने के समाचार को सुनकर सम्राट औरगजेब एव शाही

---

30 **शिवाजी द्वारा शाइस्ता खाँ पर किये गये ऐतिहासिक हमले के लिए देखिए- (स्रोत)-** जेघ (SS) पृ0- 15, सभासद, पृ0- 33-34, शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 414, डॉ0 सी0 वी0 त्रिपाठी, लाइफ एण्ड टाइम आफ मिर्ज़ा राजा जय सिंह (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ इ0 वि0 इ0) पृ0 206-7,

खाफी खाँ, पृ0- 61-62, मासीर- पृ0- 28,

वर्नियर आप्ट सीट, पृ0- 187, मनूची, आप्ट सीट- पृ0- 104-106,

इगलिश रेकार्ड ऑन शिवाजी, पृ0- 53-54 (उद्धृत)

भीमसेन कृत- 'दिलकुशा' (अनु0) जे0 एन0 सरकार, भाग 1, पृ0- 36 पर देखें;

खाफी खाँ, मुन्तखब- उल-लुबाब, पृ0 209-11 पर,

जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज़ टाइम्स, पृ0- 88-93,

ईश्वरदास नागर कृत-फुतुहात-ए-आलमगीरी (अनु0) (तस्नीम अहमद, पृ0- 74-75 पर, सुरेन्द्रनाथ सेन (एस0 एन0 सेन) कृत- 'लाइफ आफ शिवा छत्रपति' भाग 1, पृ0- 201-5 पर देखें।

परिवार घोर उदासी एव दु ख में डूब गया। अपने आक्रोश के परिणाम स्वरुप सम्राट ने शाइस्ता ख़ाँ से असन्तुष्ट हो उसका स्थानान्तरण दक्षिण से बगाल के लिये कर दिया। (जो औरगजेब के ही शब्दों में- "भोजन से परिपूर्ण एक नरक था)।[31]

इस प्रकार जहा एक ओर शाइस्ता ख़ाँ के नेतृत्व में दक्षिण क्षेत्रों पर कोई विशेष सफलता मुगलों को नही मिली वही दूसरी ओर उनके इस ह्रासावस्था में भी शिवाजी का 'अद्भुत आक्रमण की सूचना' उन्हें एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के रुप में स्थापित कर सर्वत्र ख्यातिनामा बना चुकी थी।

जब से सेनापति शाइस्ता ख़ाँ की नियुक्ति दक्षिण में मुगल अधिकृत प्रदेशों के सूबेदार के रूप में हुई और वह दक्षिण में शिवाजी के विरुद्ध बढा तबसे मुगल अमीर-वर्ग में प्रविष्ट मराठा सरदारों ने उक्त सेनानायक को निरन्तर अपना सहयोग प्रदान किया। उनके निरन्तर सहयोग के कारण ही शाइस्ताख़ाँ पूना, चाकन, कल्याण आदि दुर्गों को विजित करने में सफल हुआ। कोंकण के प्रदेश में किसी भी मुगल सेनानायक को बिना मराठा सरदारों के सहयोग के इतनी अधिक सफलता कदापि प्राप्त नहीं हो सकती थी। शाइस्ता ख़ाँ की कोंकण में सफलता का मुख्य श्रेय मुगल अमीर-वर्ग में प्रविष्ट मराठा सरदारों को ही देना चाहिए। यदि महाराजा जसवन्त सिंह शाइस्ता ख़ाँ के साथ छल न करते और वे शिवाजी के पक्ष में न होते तो मुगल अमीर-वर्ग में प्रविष्ट मराठा सरदारों का सहयोग शिवाजी के लिए अत्यधिक महगा पडता। यह सत्य है कि समकालीन एवं परवर्ती मुसलमान इतिहासकारो ने मुगल अमीर-वर्ग में प्रविष्ट मराठा सरदारो की सैनिक भूमिका का उल्लेख शाइस्ता ख़ाँ से सम्बद्ध घटनाओं के परिपेक्ष्य में नहीं किया है किन्तु विवरण के अभाव में हमें यह नही समझना चाहिए कि मराठा सरदारों की भूमिका नगण्य रही होगी।

---

31 जे0 एन0 सरकार शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 93 पर।

मिर्ज़ा राजा जयसिह का दक्षिण अभियान
(एवं मुगल-मराठा सम्बन्ध)

महान सेनापति शाइस्ता ख़ाँ के स्थानान्तरण के उपरान्त औरगजेब ने राजकुमार मुअज्जम को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया और उसकी सहायतार्थ जसवन्त सिंह को भेजा। दोनों ही मराठा सरदार शिवाजी के पक्ष में थे और वे उसके विरुद्ध किसी आक्रमणात्मक नीति के अपनाये जाने के पक्ष में न थे। शिवाजी के बढते हुए प्रभाव से, उनकी लूट-मार की नीति को देखकर औरगजेब ने राजकुमार मुअज्ज़म व जसवन्त सिंह को दरबार में बुला लिया और मिर्जा राजा जयसिंह को शिवाजी का दमन करने के लिए दक्षिण भेजा।[32]

मिर्जा राजा जयसिंह विशाल सेनाओं के साथ सर्वप्रथम बुरहानपुर पहुँचे तदोपरान्त

---

32 **मिर्ज़ा जयसिंह के दक्ख़न अभियान के लिए देखें.-**

भीमसेन कृत- तारीख़-ए- दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 1, पृ0- 39-40, मासीर-,पृ0- 31, आलमगीरनामा (Scvs III) पृ0- 27, शाहनवाज ख़ाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 414-15, बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, पृ0 233,

- डॉ0 सी0 वी0 त्रिपाठी (पू0 उ0) पृ0 207-8,

ख़ाफी ख़ाँ, मुन्तख़ब-उल-लुबाब (पू0 उ0) पृ0- 215-16 पर,

जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 105;

जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरंगज़ेब, भाग 4, पृ0- 74-75 पर,

ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1,पृ0- 147-50 पर,

एस0 एन0 सेन, छत्रपति शिवा, भाग 1, पृ0- 209 पर (इत्यादि)

उन्होंने औरंगाबाद की ओर कूच किया। औरंगाबाद पहुँचकर उन्होंने सम्पूर्ण राजनीतिक स्थिति का अवलोकन किया। इस समय शिवाजी कर्नाटक (कनारा) में सैनिक अभियानों में व्यस्त थे। तथापि मिर्जा राजा जयसिंह ने औरंगाबाद से पूना की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया तथा 'सासवाद' को आधार बनाकर वहाँ से शिवाजी के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ करने का निर्णय लिया। उसने इस समय अपनी तिजोरी का मुँह खोल दिया।[33] शिवाजी के विरुद्ध मिर्जा राजा जयसिंह के अभियान का जो विवरण उसके मुशी 'तलियारखान' - 'हफ्तअजुमन' में दिया है उससे ज्ञात होता है कि दक्षिण में पहुचते ही मिर्जा राजा जयसिंह ने कूटनीति एव धन द्वारा शिवाजी के अनेक समर्थको को विशेषकर मराठा सरदारों को अपने पक्ष में कर लिया। शिवाजी के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ करने से पूर्व उसने मराठा सरदारों को ऊचे मनसब दिलवाये। उन्हें सम्मान सूचक-चिन्हों से सम्मानित करवाया तथा उन्हें उनकी वतन-जागीरों में बने रहने दिया और उन्हें भाँति-भाँति के प्रलोभन दिये। यद्यपि इस तथ्य को अनेक इतिहासकारो ने अपनी कृतियों में उल्लिखित किया है किन्तु न तो हफ़्तअजुमन के रचयिता और न ही उन्होंने मराठा सरदारों की सूची दी है।[34]

---

33 भीमसेन कृत- तारीख-ए-दिलकुशा (अनु0) ज़जे0 एन0 सरकार, भाग 1, पृ0- 41 पर, आलमगीरनामा, पृ0- 27 पर, जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 113 पर देखें।

34. जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 74-82, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0- 150-54, एस0 एन0 सेन, छत्रपति शिवा भाग 1, पृ0- 211-13, जे0 एन0 सरकार, शिवाजी का राजवश (अनु0) विजय नारायण चौबे, पृ0- 124-25 पर।

डॉ0 यूसुफ हुसैन द्वारा सम्पादित एव अनूदित 'सेलेक्टेड डाक्यूमेंट्स् आफ औरगजेब्स् रेन, में भी 1666 ई0 में जिन मराठा सरदारों को मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित किया गया उनके नाम किसी भी प्रपत्र में नही मिलते हैं। फिर भी इतना तो अवश्य स्वीकार करना पडेगा कि बिना मराठा सरदारों के सहयोग के मिर्जा राजा जयसिंह को शिवाजी के विरुद्ध अभियानों में कदापि सफलता प्राप्त नही हो सकती थी। मराठा सरदार शिवाजी की रणनीति, अभेदनीय दुर्गों की स्थिति, दुर्गों, पहाडियों तथा मार्गों से भ्ली-भाति परिचित थे और वे ही मिर्जा राजा जयसिंह तथा उसके अन्तर्गत मुगल सेनाओं का मार्ग दर्शन कर सकते थे। बडी सख्या में मराठा सरदारों द्वारा मिर्जा राजा जयसिंह के पक्ष में होने तथा मुगल अमीर-वर्ग में प्रवेश करने के ही कारण शिवाजी पर निरन्तर दबाव पडा और अन्त में उसे 'पुरन्दर की सन्धि' करनी पडी।[35] यदि हम पुरन्दर की सन्धि की शर्तों का

---

35 **'पुरन्दर की सन्धि' के लिए देखिए-**

मुशी उदयराज तलयार खा कृत- 'हफ्तअजुमन'(अनु0) जे0 एन0 सरकार, मिलिट्री डिस्पैचेज आफ ए सेवेंटींथ सेन्चुरी जर्नल, पृ0 129-40 पर, शाहनवाज खाँ, मासीरेउमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 415, खाफी खाँ, पृ0- 65-66, सभासद, पृ0- 41-45, फॉरिन वॉयोग्राफीज् आफ शिवाजी, पृ0- 86-88, मनूची (आप्ट सीट ॥) पृ0- 135-36 (उद्धृत) भीमसेन कृत- तारीख-ए-दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 44 पर, एन0 ए0 फारुकी कृत- औरगजेब एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 357, खाफीखाँ, (पू0 उ0) पृ0- 218-20 पर, जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 125-132, बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, पृ0 239-40, मुशी उदयराज, हफ्तअजुमन (अनु0 पू0 उ0), पृ0 52-53, डॉ0 सी0 वी0 त्रिपाठी (पू0 उ0) पृ0 213-26 पर, डी0 एफ0 कारका, शिवाजी, पृ0- 140-47; जी0 के0 एलियास, बाबा साहब देशपाण्डे, द डिलिवरेन्स आर द स्केप आफ शिवाजी द ग्रेट फ्राम आगरा, पृ0- 22-34, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 74-82 ग्राण्ट डफ, भाग 1 पृ0- 150-154, सेन, भाग 1, पृ0- 211-13, जे0 एन0 सरकार, शिवाजी का राजवश

विश्लेषण करें भी यह कहा जा सकता है कि मुगल-मराठा सहयोग के कारण ही शिवाजी ने 23 दुर्गों तथा विशाल भू-भाग को ही मुगलों को सौपना स्वीकार न किया वरन् अपने पुत्र शम्भाजी के लिए 5000 का मनसब भी स्वीकार करना श्रेयस्कर समझा। इसके अतिरिक्त उसने भविष्य में मिर्जा राजा जय सिंह द्वारा बीजापुर राज्य पर किये जाने वाले आक्रमण में भी सैनिक सहायता देना स्वीकार किया।[36]

मिर्जा राजा जयसिंह अपने युग का महान राजनीतिज्ञ, योद्धा, महान दूरदर्शी एव कूटनीतिज्ञ था। बिना युद्ध किये हुए ही उसने शिवाजी पर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त कर ली थी। 'पुरन्दर की सन्धि' होने के पश्चात सम्राट औरगजेब के आदेशानुसार उसने बीजापुर राज्य पर आक्रमण करने की योजना बनायी। नि सदेह बीजापुर राज्य पर आक्रमण समयानुकूल एव समीचीन था। इस समय उसे न केवल शिवाजी की विशाल सेनाओं के सहयोग, उसके पुत्र शम्भाजी के नेतृत्व में भेजी गयी टुकडी के सहयोग तथा हाल ही में मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित किये गये मराठा सरदारों के पूर्ण सहयोग की आशा थी। बीजापुर राज्य पर किये जाने वाले आक्रमण के प्रथम चरण में मिर्जा राजा जयसिंह को

---

36 आलमगीरनामा, पृ0- 37, खाफी खाँ, पृ0- 66 (उद्धृत)- भीमसेन, दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 45,

मासीर-ए-आलमगीरी, पृ0- 33, बसातीन-उस-सलातीन पृ0- 444-71,

(पू0 उ0) दिलकुशा (अनु0) (अनु0) पृ0- 47,

जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 82-98,

ग्राण्ट डफ (पू0 उ0) भाग 1, पृ0- 154-56

निरन्तर सफलता प्राप्त होती रही।[37] इसी बीच मुगल अधिकृत प्रदेशों में शाति एव सुव्यवस्था बनाये रखने के उददेश्य से एक बार पुन कूटनीति का सहारा लेते हुए उसने शिवाजी को प्रेरित किया कि वह मुगल सम्राट औरगजेब से आगरा में भेंट करें। वह मराठा सरदारों की पलायनवादी प्रवृत्ति से भलीभाँति परिचित था। अत कोंकण में शिवाजी की अनुपस्थिति से वह पूर्ण राजनीतिक लाभ उठाना चाहता था। परन्तु दक्षिण में शिवाजी की अनुपस्थिति का वह पूरा लाभ न उठा सका और बीजापुर राज्य के आक्रमण के द्वितीय चरण में उसे अपने मुँह की खानी पडी और उसे इस अभियान से वापस लौटना पडा।[38] यद्यपि बीजापुर के अभियान की असफलता के अनेक कारण थे परन्तु मुख्य कारण मिर्जा

---

37 **जयसिंह का बीजापुर अभियान हेतु देखें-**

- मुशी उदयराज, हफ्तअजुमन (अनु0) सरकार (पू0 उ0) पृ0 100-3 व 117,

- डॉ0 सी0 वी0 त्रिपाठी, लाइफ एण्ड टाइम्स आफ मिर्जा राजा जयसिंह (अप्रकाशित शोध-ग्रथ, इ0 वि0 इ0) पृ0 254-55 व 272,

- डॉ0 पी0 एम0 जोशी, कृत- मेडिवल डेकन भाग 1, पृ0- 380-381 पर।

- मो0 नईम, एक्सटर्नल रिलेशन्स आफ द बीजापुर किंगडम, पृ0- 172 पर,

- डी0 सी0 वर्मा, हिस्ट्री आफ बीजापुर, पृ0- 197

- जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 132 (इत्यादि)

38 मो0 नईम, एक्सटर्नल रिलेशन्स आफ बीजापुर, पृ0- 172-173 पर,

जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 133-38,

जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री ऑफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 128-29, 146-47,

राजा जयसिंह को मराठा सरदारों का पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना था। अपने जीवन की सन्ध्या में पराजित मिर्जा राजा जयसिंह किसी प्रकार से औरगाबाद पहुँचा। जहाँ उसे दक्षिण की सूबेदारी का कार्यभार राजकुमार मुअज्जम को सौपना पडा। ततपश्चात् वह बुरहानपुर पहुँचा जहाँ वह रोगग्रस्त हो गया और वहाँ उसकी मृत्यु हो गयी।[39]

सक्षेप में, दक्षिण में मुगल सूबेदारों को विद्रोही-मराठो या बीजापुर राज्य के विरुद्ध सफलता, मराठा सरदारों के सहयोग पर ही निर्भर करती थी। मुगल अमीर-वर्ग में प्रविष्ट मराठा सरदार जब भी मुगल सरदारों की ओर से अपना मुँह फेर लेते थे तो उनका भविष्य अंधकारपूर्ण हो जाता था और वे अपना उत्तरदायित्व निभाने में असफल साबित होते थे। इसी बीच शिवाजी से सम्बन्धित अनेक घटनाए घटित हुई। शिवाजी का आगरा जाना और वहाँ औरंगजेब से अपमानजनक भेंट होना तथा वहाँ से भागकर पुन दक्षिण पहुँचना, कुछ महत्वपूर्ण घटनाए थीं। औरगजेब के आदेशानुसार मिर्जा राजा जयसिंह ने शिवाजी के प्रमुख सेनापति नेताजी को दरबार में भेजा। वहाँ पहुँचने पर नेताजी ने

---

39 **जयसिंह के मृत्यु-तिथि हेतु देखें-**

-जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 162, बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, पृ0 269, डॉ0 सी0 वी0 त्रिपाठी (पू0 30) पृ0 279, मुशी उदयराज, हफ्तअजुमन (अनु0) सरकार, पृ0 100-117।

मासीर, पृ0- 41; भीमसेन, तारीख-ए-दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 52 पर,

जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 148 पर,

ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा, भाग 1, पृ0- 158-59

इस्लामधर्म स्वीकार कर लिया तथा उसे 5000 का मनसब एव उसका नाम मुहम्मद कुली खा रखा गया। कालान्तर में उसे महावत ख़ाँ के साथ अफगानिस्तान भेजा गया।[40] दूसरी ओर शिवाजी ने पुन दक्षिण पहुँच कर अपनी स्थिति सुदृढ करनी प्रारम्भ की। 1667 में मिर्जा राजा जयसिंह को दक्षिण से वापस बुला लिया गया और उसके स्थान पर राजकुमार मुअज्जम को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया गया।[41] मार्च, 1667 में राजकुमार मुअज्जम जसवत सिंह के साथ दक्षिण की सूबेदारी का कार्यभार सभालने के लिए औरगाबाद पहुँचा और उसने पुन शिवाजी के प्रति मैत्रियता की नीति अपनायी।[42] फलत राजकुमार मुअज्जम की सस्तुति पर औरगजेब ने शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को 5000/ का मनसब तथा बरार की समृद्धशाली जागीरे प्रदान की। विरोधी मराठा सरदारों को मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित करने के लिए यह युक्ति अपनायी गयी। परिणामस्वरुप लगभग अगले दो वर्षों तक (1667-1668 ई0) में मुगल-मराठा सघर्ष स्थगित रहा।[43] इसी काल में शम्भा जी के साथ प्रतापराव गूजर और नीराजी राव जी भी मुग़ल अमीर-वर्ग में प्रविष्ट हुए। 1667-1669 ई0 में जब शिवाजी ने पुरन्दर की सन्धि की शर्तों के अनुसार मुगलों को सौपे गये दुर्गों को पुन अधिकृत करना प्रारम्भ किया तो ऐसा प्रतीत होता है कि मुगल-अमीर-वर्ग में प्रविष्ठ मराठा सरदारों ने मुगलों की कोई विशेष सहायता न की।

---

40 जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0- 137-38

41 मासीर-ए-आलमगीरी, पृ0- 40, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 146-47 पर देखें।

42 मासीर-उल-उमरा भाग 1, पृ0- 694-95

43 जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 178-80।

परिणामस्वरुप शिवाजी ने 1669-70 ई0 में सिंहगढ को विजित कर लिया।[44] इसी प्रकार से मार्च, 1670 में उसने कल्याण, भिवण्डी पर अधिकार कर लिया। 16 जून 1670 को शिवाजी ने माहोली (माहुली) का दुर्ग विजित कर लिया।

सक्षेप में, मुगल-सेवा में रहकर भी मराठा सरदारों ने उपरोक्त सभी दुर्गों की रक्षा करने की चेष्टा नहीं की। उसका मुख्य कारण सम्भवत मुगलों का मराठो के प्रति अविश्वास ही कहा जा सकता है। जो दुर्ग शिवाजी ने पुरन्दर की सन्धि की शर्तों के अनुसार मुगलों को समर्पित किये थे, वे अधिकाशत मुसलामान अधिकारियों के ही हाथों में रखे गये। अत उनकी रक्षा का भार मुसलमान अधिकारियों पर ही रहा। इस प्रकार से मराठा सरदारों को शत्रु के विरुद्ध भूमिका निभाने का कोई अवसर 1670 तक नहीं दिया गया।[45] इसके अतिरिक्त मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित मराठा सरदार कुठाग्रस्त ही रहे तथा अमीर-वर्ग अन्य जातीय-तत्वों की भाँति शिवाजी के विरुद्ध अभियानों के सचालन के समय उन्हें सेना का नेतृत्व कभी भी नहीं सौंपा गया। ज्ञातव्य है कि पुरन्दर अभियान में सेना का नेतृत्व कछवाहा राजा मिर्जा जयसिंह तथा अफगान अमीर-वर्ग के उच्च अमीर 'दिलेर खाँ' को सैन्य-सचालन का नेतृत्व दिया गया।[46] तदोपरान्त बीजापुर के आदिलशाह पर आक्रमण करते समय भी सम्पूर्ण सेना का नेतृत्व मिर्जा राजा जयसिंह ने ही

---

44 भीमसेन, दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 64,

- जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब, पृ0- 167-68

45 जी0 एस0 सरदेसाई (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 188।

46 जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0-170-73

किया और मराठा सरदारों की भूमिका गौण रही। अत विद्रोही शिवाजी के आगरा से पुन दक्षिण वापस लौटने पर जब उसने खोये हुए दुर्गों को एक-एक करके विजित करना प्रारम्भ किया तो मराठा सरदारों ने दक्षिण में तैनात मुगल अमीरों की सम्भवत कोई भी सहायता न की। यदि उपरोक्त दुर्ग मराठा अमीरों पर विश्वास करके उन्ही को सौंप दिये जाते तो स्थानीय मराठो के सहयोग से वे विद्रोही शिवाजी का खुलकर मुकाबला करते व उसके साथ सघर्ष करते हुए मुगलों की सहायता से उन दुर्गों को अवश्य ही खोने न देते।[47] कालान्तर में राजकुमार मुअज्जम व दिलेर खाँ के मध्य बढते हुए वैमनस्य का भी मुख्य कारण यही था कि मुगल अमीर-वर्ग के मराठा सरदारों का राजकुमार मुअज्जम पक्ष लेता रहा और विद्रोही शिवाजी के प्रति तटस्थ रहा।[48] 1670 के उपरान्त जिन मुगल सेनानायकों की नियुक्तियाँ विद्रोही शिवाजी के विरुद्ध हुई उन्हें भी मराठा अमीरों की तटस्थता के कारण सम्भवत तनिक भी सफलता प्राप्त न हुई।[49]

1670-1674 के मध्य शिवाजी ने सूरत को दूसरी बार लूटा। पन्हाला का दुर्ग जीता, आदिलशाही सेनाओं के विरुद्ध सफलता प्राप्त की तथा रायगढ के दुर्ग को सशक्त बनाया और 1674 ई0 में अपना राज्याभिषेक कराकर अपनी स्वतत्रता घोषित की।[50]

---

47 जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 178-79।

48 जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 170-173 एव 191 पर।

49 जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0- 188 पर।

50 जी0 एस0 सरदेसाई (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 188-203, जदुनाथ सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0 173-218।

1674-1676 तक शिवाजी शात रहे। मुगल सेनानायक बहादुर खा को भी मुगल अमीर-वर्ग के मराठा सरदारों का सहयोग प्राप्त न हो सका। औरगजेब ने राजनीतिक परिस्थिति का पुन अवलोकन करते हुए नेताजी फाल्कर जिसे उसने 'मोहम्मद कुली खॉ' की उपाधि से सम्मानित किया तथा जो शिवाजी का कटु*शत्रु बन चुका था, का पूर्ण उपयोग करते हुए शिवाजी का दमन करने का निश्चय किया। नेताजी फाल्कर ने उसे आश्वासन दिया। यदि उसे प्रचुर धन व पर्याप्त सेनाए दे दी जायें तो वह लक्ष्य-प्राप्त कर लेगा।[51] औरगजेब ने उसका आग्रह स्वीकार कर लिया और उस पर दृष्टि रखने के लिए उसने दिलेरखॉं को भी उसके साथ दक्षिण भेज दिया। औरगजेब मराठा सरदारों की अवसरवादी एव पलायनवादी प्रकृति से भली भॉंति परिचित था। जैसा उसने सोचा वैसा ही हुआ। नेताजी फाल्कर दिलेर खॉं के साथ सतारा पहुॅंचा और अवसर पाकर उसने मराठा-चरित्र का परिचय दे ही दिया। वह शाही शिविर से भागकर शिवाजी के पास पहुच गया और उसकी सेवा में भर्ती हो गया।[52]

1676 से 1678 तक बहादुर खॉ को भी दक्षिण में विद्रोही मराठो के विरुद्ध तनिक भी सफलता प्राप्त न हुई। शिवाजी निरन्तर नवीन दुर्गों को अधिकृत करने व अपनी शक्ति सुदृढ करने में लगा रहा। तदन्तर उसका दुश्चरित्र पुत्र शम्भाजी पन्हाला के बन्दीगृह से भाग कर दिलेर खॉं की शरण में पहुॅंचा और उसने बीजापुर पर मुगल आक्रमण में भाग भी लिया। शम्भा जी व उसके साथियों ने दिलेरखॉं का वीजापुर अभियान

---

51 जी0 एस0 सरदेसाई (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 214।

52 जी0 एस0 सरदेसाई (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 214-215

में साथ तो दिया परन्तु उन्हें बीजापुर को विजित करने में सफलता प्राप्त न हुई। यह सत्य है कि इस बीच शम्भाजी के सहयोग से मुगलों ने भूपालगढ आदि के दुर्ग विजित तो कर लिये परन्तु वे मराठा शक्ति का प्रयोग राजा शिवाजी के विरुद्ध करने में असफल रहे।[53] 1680 ई0 में शिवाजी के मृत्यु के साथ ही मुगल अमीर-वर्ग के मराठा सरदारों की वह भूमिका समाप्त होती है जो कि मुगल-मराठा सघर्ष के प्रथम चरण में मुख्य रुप से मुगलों के शकित दृष्टिकोण के कारण तटस्थ कही जा सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि 1670 से लेकर 1680 ई0 तक शिवाजी की निरन्तर विजयों से शाही सेवा में कार्यरत मराठा सरदार इतने भयभीत हो चुके थे कि वे खुलकर न तो उससे सघर्ष करना चाहते थे और न ही उसके विरुद्ध मुगलो को सहयोग देना चाहते थे। विशेषकर उस समय जब राजकुमार मुअज्जम तथा दिलेरखाँ और बहादुर खाँ तथा दिलेरखाँ के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध, बैमन्यस्य की रेखा पार कर कटु शत्रुता की परिधि में पहुच चुकी थी।[54]

---

53 **शिवाजी के शासनकाल का अन्तिम चरण एवं उसके मृत्यु के लिए देखें-**

जेधे (SS) पृ0- 24, बसातीन-उस- सलातीन, पृ0- 533-34, परमानन्द काब्य, पृ0- 88 (उद्धृत)- भीमसेन, दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0- 123 पर।

जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स पृ0- 222-223, 338 व 39 पर

खाफीखाँ, (पू0 उ0) पृ0- 289-90, मासीर-ए-आलमगीर, पृ0- 120,

जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0- 261 पर देखें।

54 जेधे पृ0- 25, सभासद, पृ0- 1052" चिटनिस पृ0- 362, जे0 एन0 सरकार, शिवाजी, पृ0- 331,

ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0- 227 एव 213-14 (इत्यादि)

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है, यद्यपि 1658 से लेकर 1678 तक औरगज़ेब ने बडी सख्या में मराठो को मुगल-अमीर-वर्ग में सम्मिलित किया, उन्हें मनसब, जागीरें, सम्मान सूचक-चिन्ह इत्यादि प्रदान किये। परन्तु मराठा सरदारों का औरगजेब में और न ही औरगजेब का मराठा चरित्र में विश्वास था। दोनों ओर से विश्वास की इस अभाव के कारण वे एक दूसरे को पूर्ण सहयोग न कर सके और इसका लाभ विद्रोही शिवाजी को ही हुआ। उसने मराठा-राज्य का दिकस्वप्न साकार कर लिया और अपनी महात्वाकाक्षाओं को पूर्ण कर दिखाया। यद्यपि उसकी धमनियों में किसी शाही परिवार का रक्त न था लेकिन फिर भी वह एक सगठित विशाल राज्य का स्वतत्र शासक बनने में सफल हुआ।

षष्ठम् अध्याय

"औरंगज़ेब कालीन मराठा अमीर-वर्ग"

(1680-1707)

अध्याय (6)

3 अप्रैल, 1680 को शिवाजी की मृत्यु हुई[1]

अपने जीवन काल में शिवाजी ने एक स्वतत्र एव सगठित मराठा-राज्य की स्थापना कर अपना स्वप्न पूर्ण किया। शक्तिशाली मुगल साम्राज्य तथा बीजापुर व गोलकुण्डा जैसे शक्तिशाली राज्यों से घिरे रहने के कारण भी वे अपने सतत् प्रयासों द्वारा अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हुए। जैसा कि पिछले अध्याय में बताया जा चुका है कि उनके साथ सघर्ष करते समय औरगजेब को अनेक मराठा सरादारों का सहयोग प्राप्त करना पडा। मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित उन मराठा सरदारों में से कुछ तो पलायनवादी व अवसरवादी थे तथा शेष स्वामिभक्त थे। नि सदेह मुगल अमीर-वर्ग में ऐसे अनेक मराठा सरदार थे जिन्हें कि शक्तिशाली, कूटनीतिज्ञ तथा महान प्रशासक शिवाजी की निरकुशता में विश्वास न था और वे अपनी अस्मिता व पहचान को बनाये रखना चाहते थे। मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित ऐसे मराठा सरदारों के लिए अनिवार्य था कि वे अपना सहयोग

---

1 **शिवाजी की मृत्यु एवं उनके बाद मराठा साम्राज्य के विस्तृत विवरण के लिए देखें-** जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 254-55, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0 261, जे0 एन0 सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, पृ0 338-39, एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 84-85, जेधे, पृ0 25, सभासद, पृ0 1052, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 227 (उद्धृत) भीमसेन कृत- तारीखेदिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 1, पृ0 127; जहीरुद्दीन फारुकी, औरगजेब एण्ड हिज टाइम्स, पृ0 366, खाफी खाँ कृत- मुन्तखब-उल-लुबाब, पृ0 289-90, मुस्तैद खाँ कृत- मासीर-ए-आलमगीरी (अनु0) जदुनाथ सरकार, पृ0 120 पर देखें।

मुगलों को ही प्रदान करते रहें और विद्रोही मराठों के विरुद्ध मुगलों द्वारा सचालित अभियानों में ही नही वरन् दक्षिण के दो अन्य प्रमुख राज्यों -बीजापुर व गोलकुण्डा के विरुद्ध अभियानों में भी निरन्तर अपनी भूमिका निभाते रहे। 1680 से मुगल-मराठा सम्बन्धों का एक नवीन प्रकरण प्रारम्भ होता है। इस प्रकरण को समझने के लिए दो तथ्यों पर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। प्रथमत - 1680 से लेकर 1707 तक मुगल अमीर-वर्ग में मराठा सरदारों की स्थिति क्या रही ? द्वितीय - शिवाजी के मृत्योपरान्त नव-स्थापित मराठा राज्य में क्या हुआ और ऐसे कौन से कारण थे जिनके कारण अनेक मराठा सरदारों ने पलायनवादी दृष्टिकोण अपनाकर मुगलों का साथ देना प्रारम्भ किया ?

डा0 अतहर अली के अनुसार 'औरगजेब के शासन काल के द्वितीय चरण - (1679-1707) में 1000 व उससे ऊपर के विभिन्न श्रेणियो में मुगल अमीर-वर्ग में कुल मिलाकर 575 मनसबदार थे। इन 575 मनसबदारों में से 1000 व उससे ऊपर की श्रेणियों में मराठा सरदारों की सख्या (96) छान्यवे हो गयी थी। यह सख्या शासनकाल के प्रथम चरण (1658-1678) से कहीं अधिक थी। जबकि प्रथम चरण में 1000 व उससे ऊपर की मनसबदारों की कुल संख्या 486 में 5 5 प्रतिशत मराठा सरदारों की संख्या थी। इसके विपरीत द्वितीय चरण में (1679-1707) में उनका प्रतिशत 16 7 हो गया। मराठा सरदारों की सख्या में वृद्धि दक्षिण में शनै -शनै मुगलों के बढ़ते हुए प्रभाव क्षेत्र के कारण ही नही हुई वरन् शिवाजी के मृत्योपरान्त नव-स्थापित मराठा साम्राज्य में होने वाली राजनीतिक घटनाओं के कारण भी हुई।

अपने जीवन के अन्तिम समय तक महान शिवाजी उत्तराधिकार के प्रश्न को तय न कर सका था। उसके दो पुत्र शम्भाजी व राजाराम थे। 1680 में शम्भा जी की आयु 22 वर्ष तथा उसके भाई राजाराम की आयु 10 वर्ष थी। शम्भा जी की मा का नाम सईबाई

तथा राजाराम की मा का नाम सोयराबाई था। शम्भा जी बयस्क और राजाराम अवयस्क थे। अत मराठा सरदारों का दो राजकुमारों के मध्य विभाजित होना स्वाभाविक हो गया। जिस समय शिवाजी की मृत्यु हुई उस समय शम्भाजी पन्हाला के दुर्ग में बन्दी का जीवन अपने चारित्रिक दुर्बलताओं के कारण व्यतीत कर रहा था। इसी समय उसका भाई राजाराम अपनी मा सोयराबाई के साथ रायगढ के दुर्ग में था। शिवाजी की मृत्यु की सूचना प्राप्त होते ही सोयराबाई ने मराठा सरदारों की सहायता से अपने पुत्र राजाराम को नव स्थापित मराठा-राज्य का शासक घोषित करा दिया।[2] जबकि उक्त प्रस्ताव से असहमति रखने वाले मराठा सरदारों का एक दल शम्भाजी का पक्षधर बन गया। धीरे-धीरे शम्भा जी का समर्थन करने वालों का एक दल बन गया। स्वय शम्भा जी ने भी मराठा सैनिकों को विभिन्न प्रलोभनों द्वारा अपना पक्षधर बनाने में काफी हद तक सफल रहा। फलत राजाराम को मराठा राज्य का शासक घोषित करने वाले राजमहलों के ब्राह्मण राजगुरुओं के आदेश मानने को कदापि तैयार नहीं थे। अतएव शिवाजी के मृत्योपरान्त केवल सप्ताह भर में ही शम्भा जी के पक्षधर मराठा सरदारों की सख्या में निरन्तर वृद्धि होने लगी थी। उसने रायगढ में स्थापित मराठा-राज्य-प्रशासन की अवहेलना कर 'पन्हाला' में रहते हुए सम्पूर्ण राज्याधिकार अपने हाथ में ले लिया था।[3] एक तरफ जबकि शम्भा जी अपने पराक्रम एव चातुर्यता का उचित प्रयोग करते हुए दक्षिणी मराठा राज्य एव दक्षिणी कोंकण के मराठा प्रदेशों पर अपना अधिकार सुदृढ करने में लगा रहा, वही दूसरी ओर राजाराम के समर्थकों एव अन्नाजी दत्तो आदि मराठा सरदारों ने

---

2 जदुनाथ सरकार कृत- हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0 270-71

3 जे0 एन0 सरकार, (पू0 उ0) भाग 4, पृ0 271-73, गाण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 221

'रायगढ' के सिंहासन पर राजाराम को अधिष्ठित कर 'पन्हाला के किले' एव शम्भा जी के बढते प्रभावों को रोकने तथा उस पर अधिकार कर लेने के उद्देश्य से पेशवा के साथ प्रस्थान किये।[4]

किन्तु यहाँ आकर शम्भा के कृत्यों को दृष्टिगत करने के उपरान्त उन्हें हताशा मिली तथा शम्भा के सेनापति एव निष्ठावान मराठा सरदार हम्बीरराव मोहिते द्वारा उन्हें बन्दी बना लिया गया। ततपश्चात सोयराबाई एव उसके समर्थकों का दमन करने के दृढ निश्चय से शम्भाजी अपने समर्थकों एव सेना के साथ रायगढ की ओर प्रस्थान किया। वहाँ उनका कोई प्रतिरोध नहीं किया गया। फलत उन्होंने राजधानी को हस्तगत कर लिया तथा राजाराम के साथ-साथ सोयराबाई को बन्दीगृह में डाल दिया। तदोपरान्त 20 जुलाई, 1680 को शम्भा जी सिंहासनारुढ हुए, किन्तु उसका विधिवत राज्याभिषेक सस्कार 16 जनवरी, 1681 ई0 को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।[5] इसी दौरान औरगज़ेब के पुत्र

---

4 जी0 एस0 सरदेसाई कृत- मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 293-94, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा, भाग 1,पृ0 222-24।

5 **शम्भाजी के सिंहासनारोहण के लिये देखें-**

- जेधे (SS) पृ0 25 [20 जुलाई, 1680 का उल्लेख मिलता है] उद्धृत, भीमसेन, तारीखेदिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 1, पृ0 127 पर, एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 85, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 294, शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा,(अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 418।

मुहम्मद अकबर ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया। उसने मराठा शासक शम्भाजी से भेट करने एव अपने उद्देश्यों की सफलता के निमित्त आवश्यक सहयोग की आशा से अपने विश्वस्त राठौर सरदार दुर्गादास सहित 9 मई 1681 ई0 को नर्मदा पार करके महाराष्ट्र में प्रवेश किया।[6] जहाँ शम्भा जी द्वारा नियुक्त उच्चाधिकारियों ने उसका स्वागत एव सम्मान किया तथा 1 जून को उसे 'पाली' ले गये। इस प्रकार शम्भा जी के मत्री 'कविकलश' के माध्यम से 13 नवम्बर, 1681 ई0 को शम्भा जी एव अकबर का प्रथम मिलन सम्भव हुआ।[7] इसी दौरान शम्भा जी के विरोधी मराठा सरदारों एवं सोयराबाई के समर्थक सरदारों द्वारा विष देकर शम्भा जी को मारने का षडयत्र, अगस्त, 1681 ई0 को रचा गया। समय से पहले ही भेद खुल जाने पर प्रमुख षणयन्त्रकारियों में अन्नाजी दत्तो, उसके भाई सोमजी, हीराजी फरजन्द, बालाजी प्रभु, महादेव अनन्त एवं अन्य बहुत से मराठा सरदारों को बन्दी बनाया गया तथा कुछ को मौत के घाट उतार दिया गया। ऐसा

---

6 शहजादा अकबर के विद्रोह के लिये देखें-

खाफी खॉ कृत- मुन्तखब- उल-लुबाब, पृ0 295-97, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 294-95।

7 बेन्द्रे, छत्रपति शम्भाजी महाराजा, पृ0 186-87, जेधे, (SS) पृ0 26, मासीर- पृ0 122-23, खाफ़ी खाँ, पृ0 101-102 (उद्धृत) तारीखेदिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 131-32, खाफी ख़ाँ, मुन्तखब-उल-लुबाब, पृ0 291-93, शाहनवाज ख़ाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 419, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0 291-92, सरदेसाई कृत- मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 297, मुस्तैद ख़ाँ, मासीरेआलमगीरी (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 122-23।

प्रतीत होता है कि शम्भा जी के विरुद्ध षड्यन्त्र करने के अपराध में राजाराम की माँ (सोयराबाई) को भी विष देकर मार दिया गया।[8] इस प्रकार जहाँ एक पक्ष में रायगढ में शम्भाजी अपने पारिवारिक एव शासकीय कलह को शात करने के प्रयासों में लगा हुआ था, वही दूसरी ओर सम्राट औरगजेब को जब यह ज्ञात हुआ कि राजकुमार मोहम्मद अकबर शम्भा जी के पास शरणार्थ भाग गया है, तो वह परिस्थिति की गम्भीरता को दृष्टिगत कर उसने अपने द्वितीय पुत्र 'आजमशाह' को तुरन्त उसका पीछा करने के निमित्त भेजा। तदोपरान्त एक सुविशाल सेना के साथ औरगज़ेब ने भी 13 नवम्बर, 1681 ई0 को बुरहानपुर पहुँचा। बाद में वह कुछ और दक्षिण की ओर बढकर (22 मार्च, 1682 ई0) को औरगाबाद को अपना केन्द्र बनाया।[9] इस स्थिति में शम्भा जी और अकबर दोनों की प्रत्येक गतिविधियों पर ध्यान रखने के उद्देश्य से औरगज़ेब ने वहाँ अपने गुप्तचरों का जाल ही नहीं बिछाया वरन् शम्भा जी के सेवकों एव असन्तुष्ट मराठों को धन, मनसब आदि का प्रलोभन देकर उनमें विरोध की भावना जागृति किया।[10] जनवरी, 1682 ई0 में

---

8 जदुनाथ सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0 273-76 एव 278-85, सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 300-301, रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 85।

9 **औरंगज़ेब के दक्खन- अभियान के लिए देखें-**

मासीर, पृ0 131-34 (उद्धृत) भीमसेन कृत- तारीखेदिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 1, पृ0 135-36, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4,पृ0 295-96, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 225-26, खाफी खाँ, मुन्तखब-उल-लुबाब भाग 2, पृ0 278।

10 जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 298।

शम्भा जी अपनी सुदृढता कायम करने के उपरान्त 'जजीरा' पर आक्रमण करने में पूरी तरह व्यस्त रहे। जबकि दूसरी ओर औरगजेब के निर्देशन में सैय्यद हसनअली ने उत्तरी कोंकण होते हुए कल्याण पर अधिकार करने में यद्यपि सफल रहा, किन्तु मई में उस प्रात को छोडकर वापस चला गया। औरगजेब ने औरगाबाद से पुन 22 मार्च, 1682 ई0 को आजमशाह एव दिलेरखाँ के नेतृत्व में मुगल सेना अहमदनगर विजित करने हेतु भेजा तथा 'दलपतराव'के साथ शहाबुद्दीन खाँ ने नासिक से 7 मील उत्तर में स्थित रामसेज किले पर घेरा डाला। किन्तु मराठों की पूर्व सतर्कता से मुगल अभियान को असफलता ही मिली।[11] अतएव सम्राट औरगजेब अब चारों तरफ से शम्भा पर चढाई करने के उद्देश्य से आगे बढा। उसने राजकुमार आजम को बीजापुर की ओर भेजा जिससे कि मराठों को उस तरफ से (बीजापुर से) कोई सहायता न मिल सके। रणमस्तखाँ को उसने कोंकण के अभियान पर नियुक्त किया। फलत उसने नवम्बर 1682 ई0 तक 'कल्याण' को विजित करने में सफलता प्राप्त की।[12] खानेजहाँ तथा शहजादे की सयुक्त सेनाएँ नान्देर तथा बीदर तक पहुँच गई, जिसने चाँदा और गोलकुण्डा की सीमाओं तक आक्रमणकारियों का पीछा किया। राजकुमार आजम ने 'धरूर' पर अधिकार कर शम्भा जी के राज्य में प्रवेश किया।[13]

---

11 **रामसेज अभियान के लिए देखें-**

जेधे, (SS) पृ0 27 (उद्धृत), दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 136, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 305।

12 जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 306

13 मासीर, पृ0 142, (उद्धृत) भीमसेन कृत- तारीखेदिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, भाग 1, पृ0 138-139।

यद्यपि सम्राट औरगजेब अपने अभियान की सफलता हेतु प्राण-प्रण से जुटा रहा परन्तु 1683 ई0 तक उसे अत्यधिक साधन सम्पन्न होते हुए भी वास्तव में उसे मराठों के विरुद्ध कोई ठोस सफलता नही मिल सकी थी। सत्यता तो यह है कि, इस समय उसका व्यक्तिगत जीवन घरेलू तथा मानसिक उलझनों के साथ-साथ अपने कुटुम्बियों के प्रति उठते हुए अविश्वास के भावनाओं से क्षुब्ध एव अशात हो रहा था।[14] दूसरी ओर राजकुमार अकबर दिल्ली के सिंहासन पर शीघ्र ही सिंहासनारुढ होने के उद्देश्य से शम्भा जी को अपना परम सहयोगी एव साधन बनाना चाहता था, किन्तु शम्भा जी के साथ अपने दीर्घकाल तक (18 माह तक) प्रवास के उपरान्त उसे वस्तुस्थिति का अहसास हुआ कि 'इस मराठा शासक से अब किसी भी प्रकार की आशा रखना व्यर्थ होगा। अतएव उसने अब महाराष्ट्र से पलायन करने का निर्णय लिया। दिसम्बर, 1682 ई0 में वह पाली से निकलकर 'सामतबाडी में 'बादा' नामक स्थान पर तथा आगामी सितम्बर माह में बिचोलिम पहुँचा। अब उसने 'ईरान' जाने की इच्छा से बिगुर्ला में एक जहाज खरीद लिया, किन्तु तभी उसने, शम्भा के मत्री कविकलश व दुर्गादास के आग्रह पर अपनी यात्रा स्थगित कर दी। जिसे उसने कालान्तर में पूरा किया। किन्तु ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार वह फरवरी 1684 के पश्चात एक वर्ष तक 'रत्नगिरि' जिले में साखर तथा मलकापुर में रहा।[15]

---

14 जदुनाथ सरकार, हिस्ट्री आफ औरगज़ेब भाग 4, पृ0 304, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 304-5।

15 मनूची, स्टोरिया डो मोगोर, जिल्द 4, पृ0 171-77, जी0 एस0 सरदेसाई (पृ0 30)

इधर मुगलों ने शम्भा जी पर चारों तरफ से एक साथ आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। इस समय तक औरगजेब की अनिश्चतता तथा सावधानी पूर्ण निष्क्रियता का लगभग अन्त हो चुका था। जबकि दूसरी ओर शम्भाजी के बढते हुए दुराचारों, अस्थिर चित्तवृत्ति एव क्रूरतापूर्ण अत्याचारों के कारण उसके अधिकारियों एव सामन्तों में असन्तोष फैलता जा रहा था। वह अपने अधिकारियों एव स्वजनों के प्रति भी अविश्वास रखने लगा। उसने कविकलश को अपना एकमात्र परामर्शदाता नियुक्त किया। शम्भाजी की दयनीय स्थिति से लाभ उठाते हुए औरगजेब ने रिश्वत में धन देकर अनेक मराठा सरदारों को अपने पक्ष में करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप मराठा सरदार मुगलो की सेवा में जाने लगे उदाहरणार्थ- शिवाजी का मुशी 'काजी हैदर' उन्ही में से एक था जिसने की 26 जुलाई, 1683ई0 को औरगजेब के समक्ष उपस्थित हो शाही सेवा स्वीकार की। सम्राट ने उसे खान की उपाधि के साथ साथ 2000/ का मनसब भी दिया।[16]

राजकुमार शाहआलम ने 1683 ई0 में औरगाबाद से दक्षिण की ओर प्रस्थान किया तथा वह बीजापुर राज्य से होता हुआ बेलगाँव के जिले में पहुँचा। वहाँ उसने बहुत से नगरों व दुर्गों को लूटा। वह 5 जनवरी, 1684ई0 को बिचोलिम तक जा पहुँचा। तदोपरान्त वह वहाँ से मालवण गया, जहाँ उसने सुप्रसिद्ध गिरजाघरों तथा अन्य देवघरों को बारूद से उडवा दिया। वहाँ इसी समय अकाल पडा हुआ था। जिसके फलस्वरुप मुगल सेना अब और आगे न बढ सकी। फलत फरवरी में वापस लौटना पडा। रामघाट की सकरी घाटी में इतनी जोरों से महामारी फैली कि शाहआलम की सेना का तिहाई भाग नष्ट हो गया। इस प्रकार वह शेष सैनिकों के साथ दयनीय स्थिति में वापस अहमदनगर

---

16 जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 298।

पहुँचने के लिए अब विवश हो गया था।[17] 1684 ई0 के प्रथम छः महीने में शम्भा जी के राज्य का बहुत सा भाग मुगलों द्वारा विजित किया गया। बहादुरगढ के किले से शम्भा जी के दो पत्नियों एक पुत्री तथा तीन दासियों को पकड कर मुगलों ने उन्हें बन्दी बना ली थी, जो उनकी एक महती सफलता रही। इधर, शम्भाजी 1683 ई0 के अन्त में गोआ पर किये गये मराठा-आक्रमण की विफलता के बाद पुनः प्रशासन से बेखबर हो राग-रग में डूब चुके थे। जबकि 1685 ई0 के मध्य शिहाबुद्दीन ने कोंकण पर आक्रमण करके रायगढ के निचले भाग में स्थित पचाडगाँव को जला दिया। इतना ही नही बल्कि उसने मराठा-प्रशासन की कमजोरियों का भरपूर लाभ उठाते हुए उसने अनेको मराठा सेनानायकों को धन एव पद का लालच देकर अपने पक्ष में कर शाही सेवा में ले लिया। यद्यपि शाही सेवा में आने वाले मराठा अमीरों का उल्लेख स्पष्टत कही प्राप्त नही है। फिर भी साकी मुस्तैदखाँ के 'मासीर-ए-आलमगीरी' में कुछ सदर्भ मिलते हैं।[18] इसी क्रम में दिसम्बर, के प्रारम्भ में ही मुगल सरदार अब्दुल कादिर ने 'कोंडना के किले' पर अधिकार कर लिया। इस बीच मराठा शासक शम्भा जी की सेना औरगाबाद से बुरहानपुर तक के मुगल प्रदेशों में लूट-पाट करने में लगी हुई थी। जब सम्राट औरंगजेब बीजापुर व गोलकुण्डा के विरुद्ध अपने युद्ध में व्यस्त था तब मराठा शासक को अपने आन्तरिक सुदृढता के निमित्त एक सुअवसर मिला था, फिर भी शम्भा जी दक्षिण के सभी राज्यों को आतकित करने वाले इस खतरे से बचने का (निपटने हेतु) कोई समुचित

---

17 जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0 305-7, सरदेसाई (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 305-6।

18 जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 314, एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 85-86।

उपाय न कर, अपने निश्चित कार्यक्रम के अनुसार पन्हाला को केन्द्र बना मुगल अधिकृत प्रदेशों में लूटमार तक सीमित रहे तथा दूसरी ओर औरगजेब इन घटनाओं पर विशेष ध्यान न देते हुए उपेक्षा करता रहा। साथ ही अपने महात्वाकाक्षानुसार बीजापुर व गोलकुण्डा को विजित करने में पूरी तरह सयुक्त रहा।[19] इसी बीच विद्रोही-मराठों को सुअवसर प्राप्त हुआ तथा वे शम्भा जी से असन्तुष्ट होने के फलस्वरूप मुगलो की सहायता में लगे रहे। ऐसे में 1686 एव 1687 ई0 में सम्राट औरगजेब बीजापुर एव गोलकुण्डा को विजित करने के उपरान्त अपने पूरे सैन्य-सामग्री के साथ भीमा नदी पर स्थित अकलुज' नामक स्थान पर अपना शिविर स्थापित कर मराठा शासक शम्भा जी के विरुद्ध कार्यवाहियों को अन्तिम रुप देने में लग गया।[20] 1687 ई0 के अन्त कें 'वाई' के समीप मुगल सेना एव शम्भाजी के सेनाओं के बीच भयकर युद्ध हुआ जिसमें मराठा सेनापति 'हम्बीरराव' की मृत्यु हो गयी। इससे शम्भा जी को अपार क्षति हुई एव दु ख का अनुभव हुआ।[21] औरगजेब द्वारा दक्षिण प्रदेशों पर आधिपत्य स्थापित कर लेने के कारण उसका पूरा दबाव मराठा सरदारों पर पडने लगा था। जिसके फलस्वरुप शम्भा जी के विरोधी मराठा

---

19 जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 306, मुस्तैद खाँ, मासीरे-आलमगीरी (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 169, 82, 83 पर देखें।

20 जी0 एस0 सरदेसाई (पू0 30) पृ0 314, मासीर, पृ0 194 (उद्धृत) नुस्खा-ए-दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 2, पृ0 167; ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 258।

21 जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 314-15, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब, भाग 4, पृ0 474 पर।

सरदारों ने अपनी-अपनी सेवाए मुगल सम्राट के पक्ष में अर्पित करने लगे। उदाहरणर्थ-दक्षिण में स्थित 'अदोनी' के किले में स्थित कर्नूल के जिले पर शासन कर रहे 'सिददी-मसूद' ने 6 अगस्त, 1688 को मुगल सरदार फिरोज जग के माध्यम से शाही सेवा में उपस्थित हुआ। उसे सात हजारी का मनसब भी प्राप्त हुआ। दूसरी ओर शम्भा के विरोधियों में शिर्के-परिवार जो बहुत दिनों तक मराठा शासक की सेवा में रहा ने प्रतिरोध स्वरुप शम्भाजी का पक्ष त्याग कर शाही सेवा (मुगल सेवा) में उपस्थित हुआ तथा शम्भा जी के विरुद्ध मराठों की प्रत्येक गतिविधियों से औरगजेब को अवगत कराता रहा।[22] 1688 ई0 मे शिर्के-परिवार एव शम्भा की सेना के बीच सघर्ष हुआ तथा शम्भा जी विद्रोहियों को सगमेश्वर के समीप परास्त कर प्रहलाद नीराजी व अन्य कई मत्रियों तथा प्रमुख व्यक्तियों को बन्दी बनाकर, कविकलश के साथ वापस 'राजधानी' पहुँचा।[23] दूसरी ओर शिर्के-परिवार एव उसके विरोधी मराठा सरदारों की नजर उस पर गडी हुई थी अतएव सगमेश्वर में उसके होने की गुप्त सूचना मुगल सरदार 'मुकर्रबखाँ' को मिली जो उस समय पन्हाला पर घेरा डालने में लगा था। सूचना प्राप्त होते ही मुकर्रबखाँ ने अपने सैन्य - सामग्री से सुसज्जित होकर कोल्हापुर के अपने पडाव से सगमेश्वर में अपने

---

22 एव 23 के लिए देखें-

जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0 475, जेधे (SS) पृ0 31 (उद्धृत) नुस्खा-ए-दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 2, पृ0 167, जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 315।

विरोधियों का दमन करने के लिये द्रुतगति से प्रयाण किया।[24] वहाँ पहुचने के उपरान्त उसने भयकर आक्रमण कर दी जिसमें बहुत से मराठा सैनिक मारे गये। कविकलश एव शम्भा जी को भी पकड कर बन्दी बना लिया गया।[25] अकलुज' में अपने गुप्तचरों द्वारा इस सूचना को प्राप्त कर सम्राट औरगजेब को अपार खुशी हुई।[26] शीघ्र ही मराठा शासक शम्भाजी को सम्राट के समक्ष उपस्थित किया गया। इस स्थिति में शम्भा जी का लगातार सार्वजनिक अपमान किया जाता रहा। अतएव सार्वजनिक अपमान से क्षुब्ध तथा निराश होकर शम्भाजी ने मुगल सम्राट के जीवनदान का प्रस्ताव ठुकरा दिया। तदोपरान्त सम्राट औरगजेब के आज्ञानुसार मराठा शासक शम्भा जी एव उसके सहयोगियों को

---

24 एव 25 के लिए देखें-

एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 85-86, जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 314-315, मासीर, पृ0 193-95, खाफी खाँ, पृ0 131 (उद्धृत) नुस्खा-ए-दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 2, पृ0 167, जे0 एन0 सरकार, शिवाजी का राजवश (अनु0) पृ0 201-4, खाफ़ी खाँ, मुन्तखब-उल-लुबाब भाग 2, पृ0 383, शाहनवाज खाँ कृत- मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 419।

26 जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 4, पृ0 477-78, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 316।

निर्दयता पूर्वक 11 मार्च 1689 ई0 को 'कोरेगाँव' में बध कर दिया गया।[27]

इस प्रकार शम्भा के बध के उपरान्त 1689 ई0 के अन्त तक सम्राट औरगजेब उत्तरी भारत के साथ-साथ दक्षिण-भारत का भी 'एकछत्र' सम्राट बन बैठा। उसके तीनो प्रबल विरोधियों -आदिलशाह कुतुबशाह एव राजा शम्भा का पतन एव अन्त हो चुका था। शम्भा जी के राज्यकाल के सदर्भ मे वरिष्ट मराठा इतिहासकार एम0 जी0 रानाडे का कहना है कि "मराठा शासक शम्भा जी अपने दुर्बलताओ एव व्यवसन में ही घिरा रहा अपितु उसने सही अर्थों में शासन किया ही नही।"

(वर्ष 1680 से लेकर 1689 ई0) में शाही सेवा में सम्मिलित होकर मुगल सम्राट औरगजेब द्वारा मनसब, धन एव जागीरों आदि से अलकृत कर दक्षिण के विद्रोही मराठों एव मुगल अधिकृत प्रदेशों को व्यवस्थित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले मराठा सरदारों (अमीरों) में निम्नलिखित रहे- (26 जून, 1682 ई0) को मराठा सरदार कान्होंजी आग्रे, औरगजेब की सेवा में उपस्थित हुआ और उसे मुगल अमीर-वर्ग में

---

27 **शम्भा के बध हेतु देखें-**

जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 317, एम0 जी0 रानाडे (पू0 उ0) पृ0 86, जेधे (SS) पृ0 32, मासीर पृ0 196, खाफी खाँ 135, (उद्धृत) नुस्खा-ए-दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 2, पृ0 169, ग्राण्ट डफ हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 259-61, शाहनवाज खाँ कृत- मासीर-उल-उमरा (अनु0 हिन्दी) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 419।

ले लिया गया। उसे 5000 का मनसब प्रदान किया गया।[28] इसी वर्ष, चादा के मराठा जमीदार ने सम्राट औरगजेब से भेंट की तथा उसे चार हाथी, एव 9 घोडे देकर सम्मानित किया गया। इसके साथ-साथ उसे एक खिलअन, सोने की जीन सहित घोडा, एक हाथी, बहुमूल्य रत्नों में पन्ना एव सरपेंच देकर सम्मानित किया गया।[29] इसी वर्ष , शम्भा जी का मराठा सरदार चिमनाजी जो एक अन्य मराठा सरदार के साथ शाही सेवा में उपस्थित हुआ। औरगजेब ने दोनों की 'खिलअत' देकर मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित कर लिया।[30] (जून, 1682 ई0) को राजकुमार आजम के सस्तुति पर 'जसवन्तराव दक्खनी' को 4000 का मनसब देकर सम्राट द्वारा मुगल सेवा में लिया गया। उसे बहुमूल्य रत्न दिये गये तथा उसे मुगल सेनाओं के साथ बीजापुर पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया।[31] (30 अगस्त, 1682 ई0) को जादोंराव दक्खनी का भाई जगदेवराव औरगजेब की सेवा में उपस्थित हुआ, उसे भी 'खिलअत' प्रदान की गयी।[32] (26 फरवरी, 1685 ई0) को औरगजेब ने कान्हों जी तथा बसन्तराव को पुन खिलअत देकर सम्मानित किया।[33] (29 अप्रैल, 1685 ई0) को शम्भा जी के चचेरे भाई अजूजी या अर्जुन जी को 2000 का

---

28 मुस्तैद खॉं कृत- मासीरेआलमगीरी (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 135।

29 (पू0 उ0) मासीरेआलमगीरी (अनु0) सरकार, पृ0 133।

30 (पू0 उ0) पृ0 134 पर देखें।

31 मुस्तैद खॉं कृत- मासीरेआलमगीरी, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 135।

32 (पू0 उ0) पृ0 137।

33 (पू0 उ0) पृ0 156।

मनसब, खिलअत एव एक घोडा दिया गया।[34] (31 जनवरी, 1686 ई0) को औरगजेब ने शिवाजी के सम्बन्धी 'अचला जी' को 5000 का मनसब, झडा, डका, नक्कारा के साथ-साथ रत्नजटित पक्षी एव एक हाथी देकर सम्मानित किया।[35] (मार्च, 1686 ई0) में मुगल-अमीर फजलखान की सस्तुति पर मराठा सरदार इमाजी व तुकोजी को सम्राट द्वारा खिलअतें, एव हाथी देकर सम्मानित किया गया।[36] इसी वर्ष, औरगजेब ने 'मालू जी दक्खनी' को भी मनसब, खिलअत, हाथी, घोडे आदि से सम्मानित किया।[37] (मई, 1687 ई0) में औरगजेब ने 'आसू जी दक्खनी' जो की शम्भा जी द्वारा 'साल्हेर' का किलेदार नियुक्त किया गया था, को शाही सेवा में सम्मिलित होने पर उसे मुगल अमीर-वर्ग में लेकर -खिलअत, डका, झडा, नक्कारा के साथ साथ 20,000 रुपया नकद दिया गया।[38] तथा (नवम्बर, 1689 ई0) में मुगल सम्राट औरगजेब ने शम्भा जी के बध किये जाने के उपरान्त उसके उत्तराधिकारी शाहू, उसकी पत्नियों तथा सगे-सम्बन्धियों की पेंशनें निर्धारित कर दी, उसने साहू जी को 7000 का मनसब, 'राजा' की उपाधि, खिलअत, झडा, डका, नक्कारा, हाथी, घोडे आदि दिया। इसके साथ-साथ औरगजेब ने उसके छोटे भाई मदन सिंह व माधव सिंह को उपहार दे उन्हें अपनी माता एव दादी के साथ रहने की अनुमति भी प्रदान की।[39]

---

34 मासीर, पृ0 259 (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 158।

35 मासीर (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 166।

36 मुस्तैद खॉ, मासीरेआलमगीरी (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 167।

37 मासीर, पृ0 285 (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 173।

38- मासीर, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 181।

39 मासीर, पृ0 322-33 (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 200 पर।

1680 से लेकर 1689 ई0 तक की घटनाओ पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि शिवाजी की मृत्योपरात मराठा राज्य के छिन्न-भिन्न हो जाने पर अनेक मराठा सरदार मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित कर लिये गये। इसके अतिरिक्त मराठा राज्य के जिन दुर्गों पर मुगलों ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया वहाँ भी मराठा सरदारों ने आत्मसमर्पण कर मुगल अमीर-वर्ग सम्मानित होना श्रेयस्कार समझा। मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित होना श्रेयस्कर समझा। मुगल अमीर-वर्ग में प्रविष्ट होने के उपरान्त इन मराठा सरदारों को उच्च मनसब, जागीरें व सम्मान- सूचक- चिन्ह प्रदान किये गये। दुर्भाग्यबस समकालीन मुसलमान इतिहासकारों ने कुछ ही ऐसे मराठा सरदारों के नाम दिये हैं जिन्होंने 10 वर्षों में मुगल अमीर-वर्ग में प्रवेश किया। इसके अतिरिक्त मराठा सरदारों ने मुगलों के पक्ष में जो भूमिका निभाई उसका विवरण भी उन्होंने न दिया। परन्तु फिर भी हमें इतना तो मानना ही पडेगा कि बिना मराठा सरदारो की सहायता से मुगल कल्याण, धारूल, अदोनी, बेलगाव, सगमेश्वर, आदि के दुर्ग न तो विजित कर सकते थे और न ही इस काल में बीजापुर व गोलकुण्डा के राज्यों को विजित करने के उपरान्त शम्भाजी को बन्दी बनाकर उसे मौत के घाट उतार सकते थे। अन्य शब्दों में, दक्षिण के विभिन्न अभियानों एव विजयों में मुगलों के पक्षधर मराठा सरदारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

'राजाराम का राज्यारोहण एवं मुगल-मराठा संघर्षः (1689-1700 ई0 तक)

मराठा शासक शम्भा जी को मुगलों द्वारा बन्दी बना लिये जाने एव उनके जीवित रहने की जब कोई आशा न रही, उसी समय मराठा साम्राज्य के निष्ठावान मराठा सरदारों ने वर्तमान स्थिति को दृष्टिगत कर गहन विचार-विमर्श के उपरान्त 8 फरवरी,

1689 ई0 को शम्भा के भाई 'राजाराम' को बन्दीगृह से मुक्त कराये।[40] तथा मराठा साम्राज्य को अव्यवस्थित होने से बचाने के निमित्त 9 फरवरी, 1689 ई0 को उसे मराठा-राज्य का शासक बनाया गया। यद्यपि राजाराम साहसी, वीर, प्रबुद्ध एव विलक्षण-बुद्धि रखने वाला युवक था फिर भी उसमें शिवाजी के सदृश मराठों का नेतृत्व करने की क्षमता का परम अभाव था। इतना ही नही बल्कि उसे किसी प्रकार का प्रशासकीय अनुभव भी नही था। सौभाग्य से उसे निष्ठावान मराठा सरदारों में- रामचन्द्र पन्त, सन्ताजी घोरपडे, शकरजीनारायण जैसे अनेक मराठों का भरपूर सहयोग मिला। उनकी सहायता को प्राप्त कर उसने अव्यवस्थित मराठा साम्राज्य को सुव्यवस्थित स्वरूप में लाने का पूरा प्रयास किया तथा मराठा राज्य को बर्बाद होने से बचा लिया। शम्भा जी के साथ मुगलों द्वारा किये गये दुर्व्यवहार के कारण अनेक मराठा सरदारों का क्षुब्ध होना स्वाभाविक था, अतएव उनमें राष्ट्रभावना के उठते हुए ज्वार को सही नेतृत्व देकर मराठा साम्राज्य को पुनश्च सगठित करने के उद्देश्य से जहाँ एक ओर राजाराम मुगल-विरोधी नीतियों को अन्तिम रुप देने में व्यवस्त रहा वहीं दूसरी ओर मुग़ल सेना ने इतिकारखाँ के नेतृत्व में रायगढ पर हमला कर मराठा राजधानी को घेर लिया। दूसरी ओर, रायगढ के निकट मुगल सैनिकों को अलग-अलग मोर्चे पर नियुक्त कर किला विजित करने के पूर्ण प्रयास में मुगल सरदार जुल्फिकार खाँ व्यस्त था। इससे पूर्व सम्राट औरगज़ेब द्वारा अनेक

---

40 **राजाराम के सिंहासनारोहण के लिए देखें-**

जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 5, पृ0 21-22, जेधे (SS) पृ0 31 (उद्धृत) नुस्खा-ए- दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार भाग 2, पृ0 169; ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 263-266, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास, भाग 1, पृ0 321, एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 86।

मराठा-किलो साल्हेर, त्रयम्बक, राजगढ, रोहिणा, तोरणा एव माहुली को विजित कर उन्हें अपने आधिपत्य में लिया जा चुका था।[41] इस प्रकार जहाँ एक ओर मुगल सेना सम्राट (औरगजेब) एव अपने सुयोग्य सेनापतियों के नेतृत्व में मराठों के किलों (गढो) पर आधिपत्य करने में लगी हुई थी, उसी समय वहाँ मराठा शासक राजाराम के नेतृत्व में सन्ताजी घोरपडे और धन्नाजी जाधव जैसे सुयोग्य सेनापतियों एव युवा मारठा सहयोगियों का सगठन मुगलों पर लगातार 'गुरिल्ला पद्धति'से आक्रमण कर उन्हें परेशा करता रहा। फलत जुल्फिकार ख़ाँ को रायगढ के घेराबदी में सामयिक सहायता भी नही मिल पा रही थी। मुगलों के बढते दबाव से प्रभावित हो राजाराम प्रतापगढ पहुचा। तदोपरान्त वहा से भी पलायन कर उसे पन्हाला के दुर्ग में शरण लेनी पडी। वहा से भी उसे 'रायगढ' जाना पडा जहा मुगल सरदार जुल्फिकार ख़ाँ घेराबदी किये हुए था। अतत आठ माह के घेराबदी के बाद मुगल सेनापति विजयी रहा तथा 3 नवम्बर, 1689 ई0 को रायगढ पर मुग़लों का आधिपत्य हो गया।[42] इसी परिपेक्ष्य में 'रानाडे' ने लिखा है - "ठीक उसी समय जब देश का भाग्य-नक्षत्र पतनोन्मुख था और ऐसा लगता था कि प्रत्येक वस्तु नष्ट हो गयी है। यह दुखस्थ देश प्रेमियों की एक टोली को जिसने अपना प्रशिक्षण शिवाजी से प्राप्त किया था, यह प्रतिज्ञा करने के लिए प्रोत्साहित किया कि साधनों व सम्पत्ति के पूर्ण अभाव में भी वे राष्ट्रीय स्वतन्त्रा की रक्षा करेंगे और औरगजेब की

---

41 एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 87, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 322-23।

42 मुस्तैद ख़ाँ, मासीरेआलमगीरी, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 197-98, जी0 एस0 सरदेसाई (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 324।

सेनाओं को उत्तर हिन्दुस्तान में ढकेल देगें।" मुगलों द्वारा रायगढ के किले पर अधिकार कर लिया गया तथा वहाँ शिवाजी की विधवाओं, राजाराम की पत्नियों-पुत्रों सहित शम्भा जी के पुत्र 'शाहू' को भी बन्दी बनाया गया तथा बाद में सम्राट ने उसे उसे उच्च मनसब आदि देकर सम्मान- सूचक - चिन्हों के साथ 'राजा' की उपाधि भी दी। रायगढ के किले की मुगलों द्वारा विजित किये जाने में असतुष्ट मराठा, वाई के 'सूर्या जी पिसाल' जो मराठों द्वारा किला का सुरक्षा अधिकारी नियुक्त रहा ने मुगलों से धन व पद की लालच में विशेषत मुगलों द्वारा उसे वाई का देशमुखी वतन देने का आश्वासन ने उसे उक्त विजय में मुगलों का साथ देने हेतु प्रेरित किया। फलत मुगलों को शत्-प्रतिशत सफलता अर्जित हो सकी।[43] किन्तु राजाराम रायगढ के किले से सुरक्षित (सितम्बर 1689 ई0) पन्हाला से वेल्लोर होता हुआ 'जिंजी' पहुँचा, जबकि मुगल सेना उसका लगातार पीछा करने में लगी हुई थी। राजाराम ने सुरक्षित जिंजी पहुँचकर अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन प्राप्त करने एव शासन-व्यवस्था को पुनर्जिवित करने की दृष्टिकोण से अष्ट-प्रधानों की नियुक्त की। साथ ही उसने अपनी कमर में पुन तलवार बाध ली और वह अपने निष्ठावान सहयोगियों को साथ ले पुन मुगलों का विरोध करने के लिए उठ खडा हुआ। औरगज़ेब की ओर से उसकी शकाए बढने लगी। उन्हें अपने हितों की चिन्ता होने लगी और दक्षिण में मुगलों के बढते हुए प्रभाव, प्रतिष्ठा और उनकी साम्राज्यवादी-नीति के परिणामस्वरुप उनके मुगल-विरोधी भावनाओं को बल मिला। अतएव अब मराठा मुगल सघर्ष ने तेजी ले ली। मराठा सरदार मुगल अधिकृत प्रदेशों पर किसी भी दिशा से आक्रमण करके औरगज़ेब की कठिनाईयों को बढाने में लगे रहे। फलत महाराष्ट्र में अब जन साधारण का युद्ध छिड

---

43 मुस्तैद खाँ कृत- मासीर-ए-आलमगीरी (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 198-200।

गया।[44] दूसरी ओर 'जिजी' में राजाराम द्वारा मराठा प्रशासन के पुनर्व्यवस्था के समाचार ने सम्राट औरगजेब को चिन्तित कर दिया। फलत 1691 में जिंजी को घेरने वाली मुगल सेना की सहायतार्थ सम्राट को एक विशाल सेना के साथ अपने पुत्र राजकुमार कामवख्श और मुगल सरदार असद ख़ाँ को भेजा गया।[45] 1692 ई0 में इस अभियान में शाही सेना को पराजय का मुँह देखना पडा तथा मुगल सरदारों एव राजकुमार कामबख्श (जिस पर मराठा-समर्थक होने का दोष लगाया गया) की सुरक्षा के लिए मराठा शासक राजाराम से विवश हो शांति-वार्ता करनी पडी। इस स्थिति में मराठा सरदारों द्वारा राजाराम के इस 'वार्ता' को लेकर काफी मतभेद बना रहा जिससे उनमें पुन असन्तोष एव विरोधी भावनाए जोर मारने लगी।[46] इस प्रकार 1692 से लेकर 1694 ई0 तक मुगलों को मराठों के विरुद्ध विशेष सफलता नही मिली। जबकि मराठा सरदारों में सन्ताजी घोरपडे, धन्ना जाधव, नीमा सिंधिया, हनुमन्तराव आदि के साथ-साथ राजाराम ने सदैव मुगलों को परेशान कर अपना दबाव बनाये रखा।

---

44 ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 268-270।

45 **राजाराम के जिंजी अभियान के लिए देखें-**

मासीर, पृ0 205, (उद्धृत) नुस्खा-ए-दिलकुशा (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 179, जे0 एन0 सरकार, शिवाजी का राजवश, पृ0 205-6, जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) भाग 1, पृ0 326-34, एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 87-88।

विस्तृत विवरण के लिए देखें-

केशव पुरोहित कृत- राजाराम चरितम् (सस्कृत ग्रथ में), जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 5, पृ0 128।

46 जे0 एन0 सरकार कृत- हाऊस आफ शिवाजी, अध्याय 13, पृ0 219- मार्टीन के सस्मरण से, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 335 पर।

इसी काल में बेरड जाति के आदिवासियों द्वारा अपने स्वामी 'शासक' पीडिया के नेतृत्व में भयकर विद्रोह किया गया। जबकि दिनोदिन बढती हुई मुगल-विरोधी प्रवृत्तियों को सयमित करने तथा मराठा क्षेत्रों को विजित करने के निमित्त सम्राट औरगजेब ने मई, 1695 ई0 में 'इस्लामपुरी' को केन्द्र बनाया।[47] 1695 से 1697 ई0 तक मराठों के बढते हुए प्रभाव से प्रेरित हो मुगलों ने अब 'रक्षात्मक युद्धनीति' अपनायी। दूसरे शब्दों में मराठों की प्रबलता के सामने उन्हें विवश हो 'चौथ वसूलने एव शांति-सधियों को माध्यम बना मराठों से सुरक्षित होने की बात स्वीकारने के लिए विवश होना पडा। इस स्थिति में व्याप्त, अव्यवस्था एव विरोधों का लाभ उठाते हुए मुगल अधिकारियों ने भी मराठों से गुप्त सम्बन्ध स्थापित कर सम्राट औरगजेब की ही प्रजा एव व्यापारियों को लूट कर धनी बनने में लगे रहे। इसी बीच 1695 ई0 तथा 1696 ई0 में कासिमखाँ एव हिम्मतखाँ जैसे वरिष्ठ मुगल सेनापति मराठा सरदार सन्ताजी के द्वारा मारे गये। जून, 1697 ई0 में सन्ताजी भी आपसी-विवाद को लेकर उद्वेलित रहा तथा मारा गया।[48] इसके उपरान्त जिंजी की घेराबन्दी पर मुगलों की पकड बढने लगी तथा दिसम्बर, 1697 ई0 में राजाराम घेरा

---

47 मुस्तैद खाँ, मासीर-ए-आलमगीरी (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 226-27, एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 90-91

48 जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 5, पृ0 47-49 एव 124-127 पर देखें, - बृजकिशोर कृत- ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 51, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 271-72, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 338-40।

डालने वाली (मुगल) सेना से बचते हुए बेल्लोर होता हुआ 'महाराष्ट्र' सुरक्षित पहुच गया। 7 फरवरी, 1698 ई0 को 'जिजी' का पतन हो गया तथा गढ पर मुगल-अधिकार स्थापित हुआ।[49] महाराष्ट्र में राजाराम के सुरक्षित पहुँचने के उपरान्त धीरे-धीरे समस्त मराठा सेनानायक भी 'जिजी' से महाराष्ट्र पहुँच गये। इस प्रकार महाराष्ट्र में अपनी स्थिति सुदृढ करने के उपरान्त राजाराम ने मुगलों के विरुद्ध पुन सैनिक-अभियान शुरु कर दी। इसी दौरान उसने 'चन्दन-वन्दन' का दुर्ग मुगलों से छीन लिया तथा मुगल-अधिकृत क्षेत्रों पर लगातार छापा मारने लगा। उसने 'साहू' को औरगाबाद के बन्दीगृह से मुक्त कराने के लिये औरगाबाद पर भी आक्रमण किया। किन्तु उसे सफलता नही मिल सकी। इधर औरगजेब ने राजाराम को पराभूत करने के उद्देश्य से पुन मराठों के विरुद्ध पूरी शक्ति से सघर्ष छेड दिया। शक्तिशाली मुगल सेना ने एक-एक कर मराठों के गढा को विजित करना प्रारम्भ कर दिया। और अन्त में मराठों की नई राजधानी 'सतारा' को घेर लिया। जब लम्बे घेराबदी के उपरान्त 'सतारा का गढ' भी मुगलों के हाथों में चला गया तो अपनी सुरक्षा की खोज में वहाँ से पलायन कर राजाराम 'सिहगढ' पहुँचा।[50] यात्रा एव भाग दौड की कठिनाइयों के कारण राजाराम अपने इस प्रयाण में,

---

49 जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ द औरगजेब भाग 5, पृ0 70-74 व 107-109 पर, प्रहलाद शकावली (SS) पृ0 39, मासीर, पृ0 238 (उद्धृत) जी0 पी0 शकावली, पृ0 209 पर, बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 45-46 व 55-56 पर।

50 बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 57,59,60, खाफीखाँ, मुन्तखब-उल-लुबाब, पृ0 159-62, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 5, पृ0 134-35, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 343, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 282-83।

मार्ग में ही रुग्ण हो गया। फलत 2 मार्च, 1700 ई0 को उसका देहान्त हो गया।[51] मरते समय राजाराम ने अपने अनुयायियों को प्रेरणादायक एव जागृतिपूर्ण उद्बोधन करते हुए कहा-"मेरा अन्त समय आ गया है। मेरे बाद भी प्रयत्नों में शिथिलता नही आनी चाहिए इसी प्रकार आगे भी सगठित होकर कार्य करते रहो साथ ही महाराज साहू को मुगलों के बन्दीगृह से मुक्त कराने के लिए निरन्तर प्रयन्नशील रहो।"

इस प्रकार मराठा राजनीतिक रगमच पर 1689 से लेकर 1700 ई0 तक राजाराम अपने महात्वाकाक्षी योजनाओं एव मराठा साम्राज्य की सुव्यवस्था को लेकर चिन्तित रहा तथा उसे सुदृढता प्रदान करने की दिशा में ठोस भूमिका निभाई।

ताराबाई के नेतृत्व में- "मराठा-मुगल सघर्ष" (1700-1707):-

राजाराम की मृत्यु सिंहगढ में 2 मार्च 1700 ई0 को हुई। उसकी विधवा रानी 'ताराबाई' ने अपने अल्पवयस्क पुत्र 'शिवाजी द्वितीय' को नव-मराठा शासक (राजा)

---

51 **राजाराम के मृत्यु के लिए देखें-**

जी0 पी0 शकावली, (SS), पृ0 40, मासीर, पृ0 254 (उद्धृत) पृ0 218, फारूकी, औरगजेब एण्ड हिज टाइम्स, पृ0 389, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब भाग 5, पृ0 135-37, मुस्तैद खाँ, मासीर-ए-आलमगीरी, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 250-51, बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 61-62, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 284-85, एच0 एन0 सिन्हा, राइज आफ द पेशवा, पृ0 4 - 5, एम0 जी0 रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, पृ0 91, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 345, शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास भाग 1, पृ0 421 पर।

घोषित करवा दिया। ताराबाई स्वय उसकी सरक्षिका के रुप में अधिष्ठित रही।[52] जिन परिस्थितियों में तारा बाई ने मराठा-नेतृत्व को ग्रहण किया वह किसी को भी विचलित कर सकती थी। राजाराम की मृत्यु से उत्साहित होकर मुगल सेना, मराठों के विरुद्ध अन्तिम युद्ध छेडने की तैयारी, में थी, किन्तु यह निर्भीक एव साहसी रानी (ताराबाई) मुग़ल सम्राट की चुनौती से थोडा भी भयभीत न होते हुए वरन् अखिल मराठा जाति में अपने पति से बढकर उत्साह का सचार कर दिया।[53]

ताराबाई जहाँ एक ओर मराठा-राज्य के आन्तरिक सघर्षों से निपटने में लगी रही वही दूसरी ओर उसने मुग़लों के विरुद्ध सघर्ष करने में कोई कसर न छोडी। उसने सतारा को मुगलों द्वारा विजित होने के उपरान्त मराठा साम्राज्य के मुख्यालय के रुप में 'पन्हाला'को चुना तथा वहीं से मुगलों के विरुद्ध सैनिक अभियान का कार्यक्रम जारी

---

52 **राजाराम के मृत्यु के बाद ताराबाई के विवरण हेतु देखें-**
फारुकी, औरगज़ेब एण्ड हिज टाइम्स, पृ0 389, बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 63, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ मराठा भाग 1, पृ0 285, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 351-52, शालिनी वी0 पाटिल, महारानी ताराबाई आफ कोल्हापुर (1675-1761), पृ0 77-79,

53 शालिनी वी0 पाटिल, महारानी ताराबाई आफ कोल्हापुर (1675 से 1761), पृ0 83-86, दिलकुशा, पृ0 133 (अ), खाफी ख़ाँ भाग 2, पृ0 468 (उद्धृत) बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 69; जी0 एस0 सरदेसाई, को0 वॉल्यूम, मराठी सेक्शन, पृ0 181, (पू0 30) मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 366 पर देखें।

रखा।[54] मराठा सरदार हनुमन्तराव निम्बालकर ने 18 अगस्त 1700 ई0 को मुगलों से खटाऊ का जिला छीन लिया जबकि रानोजी घोरपडे के नेतृत्व में दूसरी मराठा सेना ने बीजापुर जिले में स्थित 'बागेवाडी' तथा 'इन्दी' के समृद्ध-क्षेत्रों को सफलता पूर्वक विजित किया। इतना ही नही अपितु ताराबाई ने महाराष्ट्र में मुगलों के बढते दबाव को कम करने के निमित्त खानदेश, बरार व मालवा के मुगल अधिकृत क्षेत्रों में अपनी सैनिक टुकडिया भेजी।[55] ताराबाई ने अपने मुगल विरोधी अभियानों की सफलता हेतु कान्होजी आँग्रे जैसे शक्तिशाली मराठा सामन्तों का पूरा सहयोग लिया। दूसरी ओर मुगल सम्राट औरगजेब ने ताराबाई द्वारा सयोजित मराठा सघर्ष से क्रुद्ध हो 'पन्हाला' दुर्ग को विजित करने के उद्देश्य से जनवरी, 1701 ई0 में विशाल सेना के साथ प्रस्थान किया तथा उक्त दुर्ग की घेराबदी कर दी।[56] 28 मई, 1701 ई0 को पन्हाला के किलेदार मराठा सरदार त्रयम्बक मल्हार ने धन एव पद के लालच में आकर शाही सेना को अपना पूरा सहयोग दिया फलत दुर्ग को मुगलों द्वारा विजित कर अधिकृत कर लिया गया। सम्राट द्वारा इसका नया नाम 'नबीशाह दुर्ग' रखा गया।[57] मराठा राजधानी 'पन्हाला' के पतनोपरान्त ताराबाई

---

54 जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब, भाग 5, पृ0 166, बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 69, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 278।

55 बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 72।

56 मुस्तैद खाँ, मासीर-ए-आलमगीरी, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 262-63, बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, पृ0 72।

57 जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब, भाग 5, पृ0 176-177, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 293, जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) पृ0 352, बृजकिशोर, (पू0 उ0) पृ0 64-65 इत्यादि।

अल्पव्यस्क छत्रपति (शिवाजी द्वितीय) को साथ लेकर 1702 ई0 में 'प्रतापगढ' के दुर्ग में शरण ली। जबकि औरगजेब की सैनिक टुकडियाँ 5 जून को 'वर्धनगढ', 6 जुलाई को 'नन्दगिरि' तथा 6 अक्टूबर को 'चन्दन-वन्दन' के दुर्गों को एक-एक कर विजित करने में सफल रही। इतना ही नही अपितु सम्राट ने मराठा सामन्तों के आपसी-मतभेदों को उभाडकर एव उन्हें पद तथा धन का लोभ देकर 1703 ई0 में 'विशालगढ का दुर्ग' एव 'सिंहगढ' को भी विजित किया। वही 1704 में रायगढ (राजगढ) और तोरण के दुर्ग के साथ-साथ 1705 ई0 में 'वागिनगेरा' के दुर्ग को भी सफलता पूर्वक विजित कर अपने अधिकार में ले लिया।[58] जहॅा एक ओर लगातार मुगलों का विजय अभियान जोरों पर रहा वही दूसरी ओर मराठा शात नही बैठे रहे। अपितु मराठा सरदार धन्नाजी जाधव ने 1706ई0 में बडौदा को लूटा तथा वहाँ नियुक्त मुगल फौजदार नजरत अली को बन्दी बना लिया। दक्षिण में मराठों ने पैनूकोंडा पर आधिपत्य स्थापित कर सीरा पर भी आक्रमण करने में लग गये।

इस प्रकार 1700 से लेकर 1707 ई0 तक सम्राट औरगज़ेब एव ताराबाई के बीच मुगल मराठा सघर्ष चलता रहा। मराठा शासक राजाराम के मृत्योपरान्त भी मराठा राज्य में ताराबाई द्वारा सत्ता ग्रहण करने से दक्षिण में मराठों की स्थिति में आशातीत् सुदृढता कायम रही तथा अपने अभियानों तथा नीतियों के कार्यान्वयन हेतु ताराबाई द्वारा परशुराम जी त्रयम्बक, धन्नाजी जाधव, शकर जी नारायण जैसे वरिष्ठ मराठा सरदारों (अमीरों) का सहयोग सदैव बना रहा जबकि सम्राट औरगज़ेब भी मराठा-शक्ति को तोडने

---

58 मुस्तैद ख़ॉं, मासीर-ए-आलमगीरी, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 267, 69, 84-85, 279 और 296-97 पर देखें, जी0 एस0 सरदेसाई, राजाराम, पृ0 124-25, बृजकिशोर, (पू0 उ0), पृ0 67।

के लिए जहाँ एक ओर अपने सैन्य अभियानों की सफलता को उचित निर्देशन देने में लगा रहा वही रामचन्द पन्त जैसे मराठा अमीर जो ताराबाई से मतभेद रखते थे,[59], की विरोधी भावनाओं को भडकाकर उन्हें शासन के प्रति लापरवाह ही नही बनाया साथ ही 'साहू' को वास्तविक मराठा शासक सिद्ध करने हेतु ताराबाई के विरोध में खडा कर एक कूटनीतिक-चाल चली गई तथा मराठों को दो पक्षों में करने का प्रयास किया।[60] इन्हीं प्रयासों में अतत सम्राट औरगजेब सफल होता गया किन्तु 20 फरवरी, 1707 ई0 को उसके मृत्यु के कारण दक्षिण की राजनीतिक-परिदृश्य में कुछ स्थिरता हो चली थी।[61]

मुगल सम्राट औरगजेब ने (1689-1707 ई0) में शाही सेवा में आने वाले निम्नलिखित मराठा सरदारों (अमीरों) को सम्मानित किया। (अगस्त, 1696 ई0) में खटाऊ के थानेदार रामचन्द्र को शाही सेवा में उपस्थित होने पर सम्राट द्वारा 2000 का

---

59 मासीर-ए-आलमगीरी (पू0 उ0) पृ0 255 व 294, पूना क्वाटर्रली, वर्ष 29, सख्या 3-4, पृ0 72, बृजकिशोर, (पू0 उ0) पृ0 72-77, ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, पृ0 295।

60 मासीर, (पू0 उ0), पृ0 281, जी0 एस0 सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, पृ0 353-54

61 **औरंगजेब की मृत्यु के लिए देखें-**

फारुकी, हिस्ट्री आफ औरगजेब, पृ0 390, जे0 एन0 सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब, भाग 5, पृ0 18-19, सिन्हा, राइज एण्ड फाल आफ पेशवा, पृ0 6, जी0 एस0 सरदेसाई, (पू0 उ0) पृ0 365 पर, मासीर-ए-आलमगीरी अनु0 (पू0 उ0) पृ0 308-10 इत्यादि।

मनसब (1500 सवार, दो अस्पा-सेह-अस्पा) प्रदान किया गया।[62] इसी वर्ष, धुन्दीराव (दुन्दीराव) को मुगल अमीर-वर्ग में लिया गया। पुरस्कार स्वरुप उसे 1500 का मनसब देकर 'महादेव पहाडी' का थानेदार नियुक्त किया गया।[63] (8 जनवरी, 1703 ई0) को कोंडना के दुर्ग की विजय के पश्चात रायरी के मराठा किलेदार शिवसिंह को 1000 का मनसब दिया गया।[64] इसी वर्ष, शम्भा जी के पुत्र शाहू जी को रत्नजटित पक्षी एव आभूषण, सोने की जीन वाला घोडा, बहुमूल्य रत्न आदि देकर सम्मानित किया गया।[65] (27 जनवरी, 1704 ई0) को 'राजा नेकनाम' जिसका विवाह राजाराम की पुत्री से सम्पन्न हुआ, के शाही सेवा में आने पर सम्राट द्वारा खिलअत, एव अनेक सम्मान दिया गया।[66] इसी वर्ष, (1704 ई0) बुद्धपचगाँव के थानेदार पादाजी (जो की शिवाजी के चचेरे भाई भी थे) को शाही सेवा में आने पर 25 00 का मनसब दिया गया।[67] इसी वर्ष, सम्राट ने मराठा सरदार 'इन्दर सिंह' के पूर्वमनसब में 500 जात की वृद्धि कर उसे 3000/ 2000 का मनसब दिया।[68] इसी वर्ष, शम्भा जी के पुत्र राजा शाहू का विवाह बहादुर जी की पुत्री से निश्चित हो जाने पर मुगल सम्राट द्वारा इस शुभ-अवसर पर शाहू को रत्नजडित करधनी (बेल्ट) सरपेंच तथा अन्य बहुमूल्य आभूषण जिनकी कीमत

---

62 मुस्तैद खाँ, मासीर-ए-आलमगीरी, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 232।

63 (पू0 उ0) पृ0 232।

64 मासीर (पू0 उ0) पृ0 279।

65 (पू0 उ0) पृ0 281।

66 (पू0 उ0) पृ0 286।

67 (पू0 उ0) पृ0 286।

68 (पू0 उ0) पृ0 286।

10,000 रु0 से अधिक रही होगी, देकर सम्मानित किया गया।[69] (13 मार्च, 1705 ई0) को औरगजेब ने कान्होंजी शिर्के के मनसब में 1000 की वृद्धि की।[70] इसी वर्ष, चन्दनखेडा के मराठा जमीदार वासुदेव को 3000 का मनसब तथा एक हाथी देकर मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित किया गया। (जुलाई, 1706 ई0) में रायरी के दुर्ग के किलेदार तथा फौजदार शिव सिंह को नविशा दुर्ग का किलेदार एव फौजदार नियुक्त किया गया।[71] उपरोक्त के अलावा और भी ऐसे तमाम मराठा-अमीर रहे जिन्हें मराठा प्रशासन में नियुक्त होते हुए भी सम्राट औरगजेब से धन, पद अथवा पदोन्नति के अतिरिक्त अपने आपसी मतभेदों के चलते गुप्त रुप से मुगलों का सहयोग किया जाता रहा। जिसका पूरा-पूरा लाभ मुगलों को मिलता रहा। जिसका विवरण पूर्व में दिया गया है।

अन्तत मुगल-मराठा सघर्ष के द्वितीय चरण में भी मराठों के प्रति औरगजेब की नीति उन्हें मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित करने तथा उनकी सेवाओं का पूर्णत उपयोग करने की बनी रही। 1689 से 1707 तक मुगल मराठा सघर्ष मुख्यत जिंजी, सतारा, कोल्हापुर, पन्हाला आदि दुर्गो तक सीमित रहा। प्रतिद्वन्दी मराठा सरदारों की स्वामिभक्ति के कारण यदि एक ओर औरगजेब को असफलताओं मुँह देखना पडा तो दूसरी ओर मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित मराठा सरदारों की वीरता तथा सैन्य-शक्ति के कारण उन्हें निरन्तर सफलताए प्राप्त होती रहीं। इस काल में भी अनेक मराठा सरदारों की भर्ती मुगल अमीर-वर्ग में हुई और मुगलों की सहायता करते हुए भी वे अपनी अपनी वतन जागीरों की रक्षा करते तथा प्रतिद्वन्दी मराठा सरदारों से मुगलों के लिए दुर्ग अधिकृत करने में लगे रहे।

---

69 मासीर, पृ0 483 (अनु0) पृ0 287।

70 (पू0 उ0) पृ0 294।

71 मासीर-ए-आलमगीरी, पृ0 517, (अनु0) जे0 एन0 सरकार, पृ0 307 (इत्यादि)।

उपसंहार

उपसंहार

मराठी-भाषी प्रदेश अथवा महाराष्ट्र में मूल मराठा जाति एव प्रजातियो का इतिहास बहुत ही पुराना है। प्राचीन काल से लेकर मध्य-युगीन दक्षिण के इतिहास में उनके कृत्यों एव गौरवमयी गाथाओं की गहराइयों में न जाते हुए हम 1347 में बहमनी राज्य की स्थापना के उपरान्त उनकी ओर जब ध्यान देते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि बहमनी-साम्राज्य जो कि हिन्दू-मुसलमान राज्य का प्रतिमान था, ने अनेक मराठों को राजनीतिक रगमच पर अपनी भूमिका निभाने का सुअवसर प्रदान किया। बहमनी शासकों ने उन्हें अपने वतन में ही जागीरदारों तथा सिलेहदारों अथवा दुर्गाध्यक्षों के रुप में रहने दिया और उनकी भर्ती अपनी सेना में करके उनका प्रयोग किया। निसदेह बहमनी शासकों के व्यापक धार्मिक दृष्टिकोण के कारण उनकी उन्नति निरन्तर होती रही और अनेक मराठा सरदारों की पहचान समय-समय पर बनी रही। यह सत्य है कि अफाकी (विदेशी मुसलमानों) तथा दक्खनियों (दक्षिणी दक्खनी मुसलमानों) के मध्य स्पर्धा, दलबन्दी तथा गुटबन्दी के विवरण में मराठा सरदारों की पृथक गुट के रुप में भूमिका का उल्लेख सुस्पष्ट नहीं है। परन्तु परोक्ष रुप में वे इन दो गुटों को अपना सहयोग अवश्य प्रदान करने में पीछे न रहे होंगे। बहमनी शासकों ने विद्रोही मराठा सरदारों को उभरने न दिया और उनके विरुद्ध अभियान सचालित करके उनसे उनके दुर्ग एव जागीरें छीनकर उन्हें पगु बना दिया।

15वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जब बहमनी राज्य पतन की ओर उन्मुख हुआ तो एक बार फिर उन्होंने अपने प्रदेश के तरफदारों (प्रातपतियों) का साथ देकर महाराष्ट्र को बीदार की सत्ता से मुक्त करवा दिया। फलस्वरुप बरार तथा अहमदनगर राज्यों का

सस्थापन इमादुलमुल्क तथा अहमदनिजामबहदी के नेतृत्व में हुआ। नव-स्थापित इमदशाही तथा निजामशाही राज्यों में मराठे, शासकों की शक्ति के स्रोत बन गये। दोनों ही राज्यों के शासकों के व्यापक राजनीतिक एव धार्मिक दृष्टिकोण के कारण मराठों की स्थिति पूर्ववत बनी रही और वे प्रशासन के ताने-बाने में सिलेहदार, जागीरदार तथा सामान्य सैनिक के रुप में रहे।

1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध के उपरान्त उत्तरी भारत में राजनीतिक अस्थिरता ने महाराष्ट्र को यद्यपि दीर्घकाल तक वाहय आक्रमणों से मुक्त रखा परन्तु बरार एव अहमदनगर के शासक, मराठों का प्रयोग प्रशासन तथा अभियानों में निरन्तर करते रहे। 1600-1601 में खानदेश तथा अहमदनगर के दुर्ग की विजय के उपरान्त जब मुगलों का दबाव दक्षिण में विशेषकर महाराष्ट्र पर पडने लगा तो मराठों की मानसिकता में शनै -शनै परिवर्तन होने लगा। एक ओर तो चिरकाल से महाराष्ट्र-धर्म, पण्ढरपुर के भक्ति-आन्दोलन तथा महाराष्ट्र में प्रचलित मतो ने उनमें जागरुकता उत्पन्न की और उन्हें ऊॅच-नीच की भावनाओं से मुक्त कराया तो दूसरी ओर उन्हें 'एकता के सूत्र' में बाध कर उन्हें सशक्त जाति के रुप में परिणित किया। 1601 से 1626 ई0 तक के अन्तराल में निजामशाही राज्य के एक हब्शी वकील एव पेशवा मलिक अम्बर ने सफलतापूर्वक मराठा शक्ति का प्रयोग न केवल मुगलों के विरुद्ध वरन् बीजापुर व गोलकुण्डा के वियद्ध भी किया। उसकी निरन्तर अद्वितीय सफलताओं के पीछे मराठों का विशेष योगदान था। इन 25 वर्षों में दक्षिण पर मुगलों के बढते हुए दबाव के कारण कुछ गिने-चुने हुए मराठा सरदारों ने पलायनवादी एव अवसरवादी दृष्टिकोण अपनाना प्रारम्भ किया और अपने वतन जागीरों एव दुर्गों की रक्षा हेतु मुगल सेवा में प्रविष्ट हो गये।

सम्राट जहागीर के समय पहली बार मराठा सरदारों का मुगल अमीर-वर्ग में प्रवेश होना दृष्टिगोचर है। यह प्रक्रिया सम्राट औरगजेब के शासनकाल के अत तक निरन्तर चलती रही और समय-समय पर मराठा सरदारों को उनकी योग्यता उनके वश तथा व्यक्तिगत आचरण एव व्यवहार के आधार पर उन्हें मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित किया जाता रहा। अन्य अमीरों की भाति मराठा सरदारों को भी मनसब जागीरें धन तथा सम्मान-सूचक-चिन्ह व उपाधिया प्रदान की जाती रही। परिणामस्वरूप अनेक मराठा सरदार मुगलों की ओर से न केवल महाराष्ट्र में विद्रोही मराठा सरदारों के अभियानों में भाग लेते रहे या मुगलों की सैनिक सहायता करते रहे वरन् बीजापुर व गोलकुण्डा के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियों में भाग लेते रहे। मुगलों ने मराठा शक्ति का प्रयोग विद्रोही मराठों के विरुद्ध निश्चयात्मक ढग से किया। परन्तु समकालीन एव परवर्ती ऐतिहासिक ग्रथों में कुछ मराठा सरदारों द्वारा अवसरवादी तथा पलायनवादी दृष्टिकोण अपनाये जाने के प्रयोग मिलते हैं। उदाहरणार्थ - जहागीर के शासनकाल में सिंदखेड के जादवराव ने मुगल अमीर वर्ग से पलायन किया। शाहजहाँ के शासन काल के पूर्वार्द्ध में शाहजी भोंसले जिसे की पाच हजार का मनसब मिला था ने मुगल अमीर-वर्ग से पलायन कर निजामशाही राज्य के पुर्नस्थापन का कार्य प्रारम्भ कर मुगलों से सघर्ष करना प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् पुरन्दर की सन्धि के उपरान्त शम्भाजी को 5000 का मनसब देकर उसे मुगल अमीर-वर्ग में सम्मिलित किया गया परन्तु उसने अपने पिता शिवाजी के निर्देशानुसार (उसने भी) मुगलों का साथ छोड दिया। इस प्रकार से कुछ और उदाहरण भी मिलते हैं।

शिवाजी, जैसे ही महाराष्ट्र के राजनीतिक मच पर आये और उन्होंने सम्पूर्ण उत्तरी एव दक्षिणी कोंकण पर अपना प्रभाव स्थापित किया। वैसे ही उनका टकराव मुगलों तथा आदिलशाहियों से होने लगा। उनके बढते हुए प्रभाव के कारण अनेक मराठा सरदार अपने व्यक्तिगत हितों के सुरक्षा के लिए चिन्तित हो गये और उन्हें बाध्य होकर मुगलों की शरण में जाना पडा।

महान मुगल सम्राटों के अमीर-वर्ग का आधार व्यापक था। उसमें विभिन्न जातीय-तत्वों ईरानियों, तूरानियों, अफगानों, भारतीय मुसलमानों, अरब वासियों हब्शियों राजपूतों इत्यादि का अनुपातिक प्रतिनिधित्व था। इस व्यापक अमीर-वर्ग में जब मराठा सरदारों को भी सम्मिलित कर लिया गया तो वह पहले की तुलना में और भी व्यापक हो गया। अमीर-वर्ग के व्यापक होने के कारण ही मुगल साम्राज्य सुदृढ एव शक्तिशाली बना रहा। अन्य जाति एव प्रजाति के अमीरों की भाँति मराठा सरदारों ने भी इस साम्राज्य की सेवाए कर उसे विशाल, सुदृढ एव शक्तिशाली बनाने में अपना विशेष योगदान दिया। औरगजेब के शासनकाल के द्वितीय चरण में मराठा सरदारों की विद्रोही शक्तियों- (शम्भाजी, राजाराम तथा शिवाजी द्वितीय की मा ताराबाई) के विरुद्ध मुगलों की स्थिति सराहनीय रही। इसका मूलभूत कारण यह था कि एक ओर तो बीजापुर व गोलकुण्डा के विजय के उपरान्त मुगलों का दबाव दक्षिण पर दिनोदिन बढता जा रहा था तो दूसरी ओर विद्रोही मराठा शक्ति का विभाजन मराठा सरदारों के मध्य शिवाजी के मृत्यु के उपरान्त उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर हो रहा था।

शम्भा जी तथा राजाराम के मध्य मराठा सरदार विभाजित हो गये, शेष मुगलों की सेवा में चले गये। शम्भाजी के बध के उपरान्त अनेक मराठा सरदार उसके पुत्र साहू के

साथ मुगल सेवा में भर्ती हो गये। तत्पश्चात् राजाराम के मृत्योपरात एक बार पुन या तो मराठा सरदार मुगलों की सेवा में चले गये या शिवाजी द्वितीय की सरक्षिता ताराबाई को अपना सहयोग प्रदान करने लगे।

औरगजेब के शासनकाल में मुगल-मराठा सघर्ष, मुगल-आदिलशाही सघर्ष तथा मुगल-कुतुबशाही सघर्ष के दौरान मुगल अमीर वर्ग में मराठा जातीय-तत्व की राजनीतिक भूमिका सहज रुप में देखी जा सकती है। यह भूमिका दुमुखी थी-स्वामिभक्तिमयी तथा पलायनवादी। दोनों ही प्रकार की भूमिकाए उनके लिए अपने हितों की सुरक्षा करने के लिए आकर्षित करती थी। अन्ततोगत्वा उनकी भूमिका से न तो मुगल-साम्राज्य और न ही मराठा साम्राज्य पतनोन्मुख होने से बच सकता।

परिशिष्ट

परिशिष्ट संख्या (1)

"जहांगीर कालीन मराठा अमीर-वर्ग।"

क्र स	मराठा मनसबदारों का नाम	मनसब	स्रोत
1	जादवराव (जादोंराव)	5000/5000	शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास, मासीर-उल-उमरा, भाग 1, पृ 176
2	ऊदाजीराम दक्खनी	4000/4000	शाहनवाजि खाँ, मासीर-उल-उमरा, (हिन्दी अनु) ब्रजरतनदास, मासीर-उल-उमरा,भाग 1, पृ 81-82, मुशी देवी प्रसाद कृत-तुजुकेजहाँगीरी (उद्धृत), हिन्दी-हस्तलिखित, डॉ रघुबीर सिंह, तुजुकेजहाँगीरी के सूची से।

परिशिष्ट संख्या (2)

"शाहजहाँ कालीन मराठा अमीर-वर्ग।"

क्र स	मराठा मनसबदारों का नाम	मनसब	स्रोत
1	जादवराव (जादोंराव) कानसटिया	5000/5000	शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा, (हिन्दी अनु0) ब्रजरतनदास, मासीर-उल-उमरा, भाग 1, पृ0- 176, मुंशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा (उद्धृत) डा0 रघुबीर सिंह, मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँनामा, पृ0- 49, एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0- 79 पर।
2	यशवतराव दक्खनी	2000/1000	लाहौरी कृत पादशाहनामा भाग 1, पृ0- 183 पर, एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर, पृ0-99, मुशी देवी प्रसाद कृत शाहजहानामा (उद्धृत) रघुबीर सिंह, मनोहर सिंह, राणावत, शाहजहाँनामा, पृ0-49 पर।
3	लन्गू पण्डित	200/20,	Hyd 4510

5	वेनतराम	100/5,	Hyd 4510
6	वेनतराम का पुत्र मन्कू जी,	40/5,	Hyd 4510
7	खेलू जी का भाई परसू जी,	3000/1500,	लाहौरी I, 256
8	रावतराय दक्खनी,	2000/1500,	लाहौरी I, 288
9	खेलू जी भोसला,	5000/5000,	लाहौरी I, 293
10	मालू जी,	5000/5000	लाहौरी I, 293
11	ऊदाजीराम दक्खनी,	5000/5000,	लाहौरी I, 296
12	मन्कूजी दक्खनी,	3000/1500,	लाहौरी I, 306
13	हाबा जी,	2000/800,	लाहौरी I, 306
14	जादोराय का पुत्र अचला,	3000/1000,	कजविनी 194 (b)
15	जादोराय का पुत्र रघूजी,	3000/1000,	कजविनी 194 (b)
16	जादोराव का पौत्र		
	यशवन्तराव,	3000/1500,	कजविनी 194 (b)
17	अनीराय सनीता,	2000/1000,	कजविनी, 203(b)
18	ऐलू जी,	1500/750,	कजविनी, 203 (ब)

19	नाऊजी बारबेसय		लाहौरी,I, पृ0- 315 (उद्धृत)
	सिंधिया,	2000/1000,	एम0 अतहर अली, द अप्रेटस
			आफ इम्पायर पृ0- 110 पर।
20	तेलगराय जदुनाथ राय		
	मराठा,	3000/1500,	लाहौरी, I 310
21	बेतूजी,	2000/1000,	लाहौरी,I 310
22	साहू जी भोंसले,	5000/5000,	लाहौरी, I, 327
23	साहूजी का भाई		
	मीना जी,	3000/1500,	लाहौरी I 328
24	साहूजी का पुत्र		
	सम्भा जी,	2000/1000,	लाहौरी I, 332
25	जादोराव का पुत्र		
	बहादुर जी,	5000/5000,	लाहौरी, I, 400
26	जादोराव दक्खनी		
	का भाई,	4000/3000,	लाहौरी I, 297 (6)
	जगदेव राय		

27	यशवन्त राव का भाई,	3000/1500,	कजविनी 258(b)
	पतगराव		
28	ऊदाजी का पुत्र		
	जगजीवन,	3000/2000,	लाहौरी I, 510
29	धानाजी का पुत्र		
	पतग राव,	150/100,	कजवीनी 322 (a)
30	यशवन्त राव मीना जी,	3000/2000,	S D S,PP, 1-2
31	निर्मलराय,	1500/700,	S D S, 2
32	पीतम जी,	300/100	S D S 2
33	हैयबत राय,	300/100,	S D S ,2
34	जासनराय,	100/50,	S D S ,2
35	हमीरराय (हमबीर राव),	4000/2500,	लाहौरी I, 297(b)
	दक्खनी		
36	धन्ना जी देशमुख,	700/500,	S D S ,20
37	ताना जी दक्खनी,	2000/1000,	लाहौरी I (b) 121

38	गम्भीर राव मराठा,	2000/1000,	कजवीनी, 368(b)
39	दादा जी,	3000/1000,	लाहौरी I b- 209
40	चकबीजी का पुत्र अन्जू जी,	250/50,	Hyd 24/9
41	हमीरराव का पुत्र		
	यशवन्त राव,	400/10,	Hyd 24/11
42	अचला जी का पुत्र		
	बीठ्ठो जी,	2000/1000,	Hyd 24/7
43	सामू जी खानखार का पुत्र,	500/200,	Hyd 24/10
	शकर जी		
44	जाकू जी,	20/10,	Hyd 27
45	महीपति राय,	400/200,	S D S ,31,32
46	जादोराय दक्खनी,	3000/1500,	S D S , 34
47	बहादुर जी दक्खनी		
	का पुत्र,	3000/1000,	S D S ,34
	दाया जी या दत्ता जी		
48	रुस्तम राय,	2000/1000,	S D S ,34

49	रावत जी दक्खनी का भाई,	1500/600,	S D S , 34
	राना जी या रायबा		
50	बिजय इतीबार राय,	1000/400,	S D S , 34
51	गणेश राय,	2000/800,	S D S ,34
52	शिवाजी हनुमन्त,	1500/80,	S D S , 35
53	जगन्नाथ मल,	100/20,	S D S ,36
54	माद्रा जी मराठा,	100/40,	S D S ,47
55	मालूजी वीर का पुत्र मालूजी,	400/180,	S D S ,58
56	मालूजी वीर का पुत्र यासा जी,	200/130,	Hyd,69 (स्रोत)
57	मालूजी वीर का पुत्र ईसारदास,	80/15,	S D S ,58
58	सम्भा जी,	200/100,	S D S ,58
59	खाण्डू जी,	150/60,	S D S ,58

60	मालूजी के पुत्र मानू जी,	400/160,	Hyd ,69
61	याशा जी,	200/130,	Hyd ,69
62	जाना जी दातिया,	200/100,	Hyd ,4492/9
63	बहार जी,	3000/2500,	लाहौरी II 108
64	मन्कू जी दक्खनी,	400/100,	Hyd ,157/2
64	नान जी दातिया (जमींदार मल्कापुर),	200/100,	Hyd ,157/4
66	भजन राय दक्खनी,	3000/1000,	Hyd ,157/8
67	शारजाराव खावा,	1500/600,	Hyd ,157/8
68	किशोर जी मराठा,	80/15,	Hyd ,143
69	चन्दन राव,	100/10,	Hyd ,161
70	धन्ना जी देशमुख,	500/500,	Hyd ,196
71	हिम्मत राय,	500/300,	Hyd ,199
72	सीर जी धनकर,	500/300,	Hyd ,239
73	शुला गोरी,	500/200,	Hyd ,239
74	खाण्डेय राव,	1000/600,	Hyd ,250

75	रेनू जी,	1000/700,	S D S ,138
76	रावल नान जी,	400/300,	S D S ,138
77	कृष्णा जी सरजाराव,	500/300,	S D S ,147
78	यशवन्त राव,	100/50,	S D S ,148
79	कृष्णा जी,	200/60,	S D S ,151
80	साला जी का पुत्र		
	हरचन्दराय,	500/200,	S D S ,151
81	ऊदाजीराम का भाई		
	जालीराम,	300/150,	S D S ,151
82	साभा जी,	3000/2000,	Hyd , 523
83	बीर जी धनकर,	1000/400,	Hyd ,4474
84	ईसा जी,	200/130,	Hyd , 4272
85	उदय राम दक्खनी,	3000/2000,	लाहौरी II,724
86	मन्कू जी बनालकर,	3000/1500,	लाहौरी II,724
87	रविराय दक्खनी,	2000/1000,	लाहौरी II,728

88	जादोराव दक्खनी का		
	भाई गयबा,	1500/600,	लाहौरी II,731
89	कृष्णा जी भास्कर,	100/20,	S D S ,166
90	कृष्णा जी भास्कर का		
	भाई दत्ता जी,	100/5,	S D S ,169
91	सालू जी का पुत्र		
	अन्कू जी,	500/400,	Hyd ,2806/5
92	हनुमन्त राव मोहिते,	500/400,	Hyd ,2806/5
93	पारसनाथ राव का		
	पुत्र इन्दू जी,	500/200,	Hyd ,2806/5
94	सम्भा जी का भाई		
	चेत सिंह,	200/100,	Hyd ,2806/7
95	ऊदाजीराम का पुत्र		
	नन्दराव,	200/60,	Hyd ,2806/7
96	राबा जी,	100/20,	Hyd ,2806/12

97	बालनाथ का पुत्र		
	बेतू जी,	100/20,	Hyd ,2806/13
98	समान्कर का पुत्र		
	रतन जी,	100/20,	Hyd ,2806/13
99	सारू जी दिनकर,	500/200,	Hyd ,2806/31
100	प्रचण्ड राव,	500/200,	Hyd ,2806/31
101	मालू जी वीर,	400/180,	Hyd ,2806/31
102	मालू जी का पुत्र		
	लहरू जी,	150/30,	Hyd ,2806/32
103	दाता जी का पुत्र हमीर		
	राव,	100/25,	Hyd ,2806/33
104	मालू जी का पुत्र		
	निर्मल राय,	1000/600,	Hyd , 4473
105	नीता जी,	200/100,	Hyd ,4521
106	मालू जी,	500/800,	Hyd ,4521
107	अल्या जी,	200/130,	Hyd , 4521

108	मालू जी का पुत्र		
	सीता जी,	200/100,	Hyd , 4472
109	राहू जी,	100/50,	Hyd , 3838
110	सूजी,	20/20,	Hyd ,3838
111	बेतू जी,	100/20,	Hyd ,4079
112	सकू जी,	400/80	Hyd ,4199
113	दाता जी,	3000/1000,	वारिश 261(a) से
114	अबा जी देवैया,	2000/800,	वारिश, 262 (b)
115	रायबा,	1500/600,	वारिश, 263 (b)
116	मालूजी का पुत्र		
	जीऊ राजी,	600/400,	वारिश, 269 (a)
117	रम्भा जी,	500/500,	वारिश, 269 (b)
118	दाना जी,	500/500,	वारिश, 269 (b)
119	बीरा जी के पुत्र		
	इन्दर जी,	500/150,	वारिश, 270 (b)

120	गगा जी राम होल्कर		
	के पुत्र नागू जी,	300/100,	Hyd ,4229
121	यशवन्त राव का पुत्र		
	नारू जी,	1500/1500,	Hyd ,4233
122	नारू जी का पुत्र		
	माना जी,	300/150,	Hyd , 4233
123	सोहन राव	80 जात,	Hyd , 4233
124	सामजी भोंसले का पुत्र		
	मान जी,	600/600	Hyd , 4258
125	भुजराज दक्खनी,	1000/500,	सालेह III, 467
126	मालू जी दक्खनी का		
	भाई जीवाजी,	600/400,	सालेह III, 479

परिशिष्ट संख्या (3-अ)

1000 जात व उससे अधिक के मनसबदारों की सूची।

"औरंगजेब कालीन मराठा अमीर-वर्ग"।

(1658-1678) (प्रथमचरण) :

क्र स	मराठा मनसबदारों का नाम	मनसब	सेवा में पिता या निकटतम अन्य सम्बन्धी	स्रोत
1	शम्भा जी	6000/6000	-	मा0 आ0 142, जामी अल इसा, 76अ।
2	मालो जी दक्खनी	5000/5000	-	आ0 427, मा0 उ0 III, 520-24।
3	नेतो जी (मुहम्मद कुली खाँ, जब इस्लाम स्वीकार कर लिया),	5000	-	आ0 971, मा0 उ0 III, 577-80, मीरात-उल्-आलम, 205अ

4	जादौंराय दक्खनी	4000/2500	पितामह	आ0 161 ।
5	दामा जी	4000/1300	-	आ0 47 ।
6	परसो जी दक्खनी	3000/3000	भाई	आ0 140,231 242, मा0 उ0 III, 520-24 ।
7	दाता जी दक्खनी	3000/2000,	पिता	आ0 625, मा0 उ0 I, 522 ।
8	अन्ता जी खँडकला	3000/2000	-	से0 डा0 औ0 13 ।
9	जगजीवन, ऊदाजीराम	3000/2000	पिता	मा0 उ0,I 144 ।
10	बाबा जी भोंसले	2500/1500	-	आ0 24
11	मानाजी भोंसले	2500/1500	-	से0 डा0 औ0 7, आ0 128, हातिम खा,16अ
12	रुस्तम राव	2500/1200	-	आ0 47
13	त्रयम्बक जी भोंसले	2500/1000	-	आ0 48, दफ्तर-ए-दीवानी, 19, जिलहिज्ज, 6वाँ रा वर्ष ।

14	नारु जी दक्खनी	2000/1600	-	अख0 13 रमजान, 13वाँ रा वर्ष।
15	ब्यासराव या (बियास्स राव)	2000/1200	-	आ0 48।
16	दादाजी	2000/1000	-	आ0 48।
17	तानू जी	2000/1000	-	आ0 47।
18	बागूजी दक्खनी	1500/1500	-	अख0 22 शाबान, चौथा रा वर्ष।
19	रम्भा जी दक्खनी	1500/1200	-	आ0 293।
20	दाकूजी	1500/1000	-	आ0 48।
21	रघूजी पुत्र मानाजी भोंसले	1500/1000,	पिता,	से0 डा0 औ0 7।
22.	शरजाराव कावा	1500/900	-	से0 डा0 औ0 7।
23	चतरु जी दक्खनी	1000/1000	-	आ0 206।

24	माना जी पुत्र वनेरथ जी	1000/700	-	दफ्तर-ए-दीवानी,
				सख्या 2986 ।
25	गरखू जी पुत्र दान्कर राव	1000/600	-	दफ्तर-ए-दीवानी,
				सख्या 2986 ।
26	रघुजी घोरपडे,	1000/500	-	से0 डा0 औ0 107 ।
27	पहला विजाई	1000/300	-	अख0 13 रमजान,
				13वा रा वर्ष ।

परिशिष्ट संख्या (3-ब)

"द्वितीय चरण"

(ब) वर्ष : 1679-1707 के वे मनसबदार जो 1,000 जात और उससे अधिक के मनसब पर पहुँचे।

क्र स	मराठा मनसबदारों का नाम	मनसब	सेवा में दिन या निकटतम अन्य सम्बन्धी	स्रोत
1	राजा शाहू (साहू)	7000/7000	-	से0 डा0 औ0 215, मा0 आ0 332, रकायम-ए-करायम 23ब, अ0 मा0 तै0 121 ब, कामवार 281 ब, मा0 उ0 II, 342-58।

2	कान्हू जी शिर्के	6000/5000	-	दफ्तर-ए-दीवानी सख्या 2980, मा0 आ0 220, 495, कामवार 271 अ, अ0 मा0 तै0 122अ।
3	सतवाद दफल्या	6000/5000	-	मा0 आ0 395।
4	मानसिंह, पुत्र सम्भा जी	6000/1000	-	कामवार 281 ब, से0 डा0 औ0 216।
5	रायभान,	6000/-	-	दिलकुशा 145 ब।
6	अचला जी निम्बाल्कर	5000/5000	-	अख0 26, रजब, 37 रा0 वर्ष, मा0 आ0 271, कामवार 276 ब, अ0 मा0 तै0 122 ब।
7	माल्रू जी	5000/5000	-	से0 डा0 औ0 187, 206

8	नागो जी माने, या नाको जी	5000/4000	-	अख0 8 मुहर्रम 44 वाँ रा0 वर्ष, दिल्कुशा 122अ।
9	बहरा जी पाधरे	5000/3000 (500x 2-3 अस्पा)	-	अख0 1 जमादि-उस-सानी, 38वाँ रा0 वर्ष।
10	सुमेशकर	5000/3000	-	ईस्सरदास 165ब, मामूरी 206 अ, खाफी खा II, 532।
11	परसुराम	5000/3000	-	मामूरी 156 ब।
12	खेव जी	5000/2500	-	वाकिया पेपर्स जयपुर, 17 जिकदा 47 वा रा0 वर्ष।
13	सुजान राव, या शिवभान राव	5000/2000	-	मा0 आ0 421, कामवार 291 अ, अ0 म0 तै0 123 अ।

14	राजा जी जर्नादन्	5000/2000	-	दफ्तर-ए-दीवानी सख्या 2978।
15	जनकू जी	1500/1200	-	अख 26 रजब, 37 अ।
16	नाथू जी दक्खनी	5000/-	-	अ0 मा0 नै0 123 अ
17	यशवन्त राव या बसन्तराव दक्खनी	4000/4000	-	मा0 आ0 219, कामवार 271अ, अ0 मा0 नै0 123 ब।
18	बाजी चव्हान डफले,	4000/-	पिता,	अखबारात, जे एन सरकार द्वारा (उद्धिरत), हिस्ट्री आफ औरगजेब, पुत्र सत्वा जी डफले भाग 5,209।

19	सिया जी	4000/-	-	से0 डा0 औ0 128, शर्मा द रिलिजस पॉलिसी ऑफ द मुगल एम्परर्स 178
20	जकिया देशमुख	3500/2000	-	मम्मूरा 200 अ, मा0 आ0 513 कामवार 302 अ।
21	तरसू जी या परसू जी	3500/-	-	अ0 मा0 नै0 125 ब।
22	ताकू जी	3000/3000	-	अख0 10 जिकदा, 38 वाँ रा0 वर्ष (1694 में मुगल नौकरी छोड दी)।
23	नेता जी पुत्र जानराव	3000/3000	-	से0 डा0 औ0 175।
24	धौलू जी पुत्र शम्भा जी	3000/3000	-	से0 डा0 औ0 176।
25	आनन्द राव	3000/3000	-	अख0 10 जिकदा, 38वाँ रा0 वर्ष।

26	भान पुरोहित	3000/2500	-	से0 डा0 औ0 187, (सम्पादक ने गलती से इस नाम को से0 डा0 औ0 187 मे मिंया पर्वत पढा है)।
27	किश्ना जी	3000/2000	-	ईसरदास 117 अ-ब।
28	पतग राव	3000/2000	-	वाकिया पेपर्स जयपुर 13 जिल हिज्ज, 25वॉं रा0 वर्ष, डा0 सतीश चन्द्र द्वारा दिया गया सन्दर्भ।
29	जद्रावत	3000/2000	-	दफ्तर-ए-दीवानी, सख्या 2980, औरगज़ेब का 31 वॉं रा0 वर्ष।
30	जीवा जी पंडित	3000/2000	-	ईसरदास 161 अ-ब।

31	बदर जी या पादा जी	3000-1500	-	मा0 आ0 480, अ0 मा0 तै0 125ब।
32	बाजीराव	3000/1000	-	अख0 38वाँ रा0 वर्ष, शर्मा, द रिलिजस पॉलिसी ऑफ मुगल एम्परर्स 179
33	जादोंराव दक्खनी	3000/-	-	दिलकुशा 79ब, आ0 मा0 तै 125 ब।
34	जगतराय(देशमुख नुसरताबाद का)	3000/-	-	अ0 मा0 तै0 125 ब।
35	मनकू जी दक्खनी पुत्र तनका जी	2500/2000	-	से0 डा0 औ0 179, मा0 आ0 297।
36	महान जी पुत्र मनकू जी	2500/2000	पिता,	से0 डा0 औ0 134।
37	सम्भा जी बँधारा पुत्र लाजी बँधरा।	2500/2000	-	से0 डा0 औ0 179।
38	साधू जी पुत्र नागो जी	2500/2000	पिता	से0 डा0 औ0 179

39	भालीराव पुत्र, करलोजी बधारा	2500/2000	-	से0 डा0 औ0 179।
40	नारो जी राघव	2500/2000	-	दफ्तर-ए-दीवानी, सख्या 2981।
41	महद जी माने	2500/1500	-	अख0 11 रजब 39वाँ रा0 वर्ष।
42	रघू जी	2500/1500	-	अख0 5 जिल्ल हिज्ज, 38वा रा0 वर्ष।
43	कोन्डा जी	2500/1000	-	अख0 4 जमादि-उल-अव्वल, 43वाँ रा0 वर्ष; मा0 उ0 III, पृ0 580
44	रामचन्द, (कहतानून का, जमीदार व थानेदार)	2000/3000	-	मा0 आ0 423; अ0 मा0 तै0 127 ब।
45	महमन जी	2000/2000 (500x2-3 अस्पा)	-	से0 डा0 औ0 209।

46	मानाजी (माया जी) पुत्र अन्कू जी	2000/2000	-	अख0 जमादि-उल-अव्वल, 44वाँ रा0 वर्ष।
47	राव देना जी (बेना जी) सालवी	2000/2000	-	दफ्तर-ए-दीवानी, सख्या 2980।
48	तीमा जी	2000/1000 (100x2-3 अस्पा)	-	से0 डा0 औ0 209।
49	ईसू जी दक्खनी	2000/1000	-	कामवार 279 अ, सईद अहमद, 'उमरा-ए-हुनूँद', 373।
50	अरजू जी पुत्र शम्भा जी	2000/1000	-	मा0 आ0 258।
51	माकू जी	2000/1000	-	अख0 20 रमजान, 40वाँ रा0 वर्ष।
52	राव जी	2000/500	-	अख0 25 जमादि-उस-सानी, 44वाँ रा0 वर्ष।

53	दाऊ जी (1694 में मुगलों की नौकरी छोड दी)	2000/500,	-	अख0 10 जिकदा, 38वाँ रा0 वर्ष।
54	जाऊ जी	2000/500	-	अख0 20 रमजान, 40 वाँ रा0 वर्ष।
55	माधो जी नरायन	2000/-	-	अखबरात, जे0 एन0 सरकार, ने ' हिस्ट्री आफ औरगजेब, भाग V, पृ0-211 पर
56	शिव जी, पुत्र मारुजी	1500/1500	-	से0 डा0 औ0 177।
57	दौंदी राव, या, बनबीर राव	1500/1000,	-	मा0 उ0 I, 498, मा0 औ0 382, अ0 मा0 तै0 131 अ।
58	कनराव (या किशनराव), पुत्र काकू जी	1500/1000	-	से0 डा0 औ0 177, अख0 जमादि-उस-सानी, 44वाँ रा0 वर्ष

59	राणा जी	1500/1000	-	अख0 5 जिकदा, 38 वा रा0 वर्ष।
60	साधु जी, पुत्र शिवजी नेल्कर,	1500/1000,	पिता,	से0 डा0 औ0 177।
61	तकू जी, पुत्र बहर जी,	1500/700,	भाई,	से0 डा0 औ0 176।
62.	औछी औहलराव, पुत्र, फरनकू जी	1500/700	-	से0 डा0 औ0 183।
63	जालू जी, पुत्र सरुजी	1500/500	-	से0 डा0 औ0 174।
64	आकू जी, पुत्र मालू जी	1500/500	पिता,	से0 डा0 औ0 206।
65	भालीराव, पुत्र सरु जी	1200/1200,	भाई,	से0 डा0 औ0 175।
66	मालू जी, पुत्र सरु जी	1000/1000	-	से0 डा0 औ0 175।
67	विजय, पुत्र जानराव	1000/1000	-	से0 डा0 औ0 175।
68	सिव जी, पुत्र सारु जी	1000/1000,	भाई,	से0 डा0 औ0 175।
69	यस जी, पुत्र बहार जी	1000/1000,	-	से0 डा0 औ0 175।
70	दलू जी, पुत्र बहार जी	1000/1000,	-	से0 डा0 औ0 175।
71	अम्बा जी	1000/1000	-	से0 डा0 औ0 177।

72	नाब जी, पुत्र लाहू जी	1000/1000	-	से0 डा0 औ0 178।
73	माना जी, पुत्र सम्भा जी	1000/1000	पिता	से0 डा0 औ0 179।
74	अन्बा जी, पुत्र मका जी	1000/500 (300x2-3 अस्पा)	-	से0 डा0 औ0 209।
75	रामराव, पुत्र गनपत राव	1000/400, (300x2-3 अस्पा)	-	से0 डा0 औ0 204।
76	माना जी पुत्र नागू जी	1000/700,	पिता,	से0 डा0 औ0 179।
77	खाडू जी, पुत्र जाव जी	1000/700	-	से0 डा0 औ0 178।
78	देव जी, पुत्र मनकू जी	1000/700,	पिता,	से0 डा0 औ0 178।
79	मालो जी	1000/700	-	कामवार 277 ब, से0 डा0 औ0 176।
80	सिव जी, पुत्र सम्भा जी	1000/700,	पिता,	से0 डा0 औ0 177।
81	बहर जी	1000/500	-	अख0 20 रमजान, 40वाँ रा0 वर्ष।
82	बीर भान	1000/500	-	से0 डा0 औ0 205।
83	नेत जी, पुत्र खाडू राव	1000/450	-	से0 डा0 औ0 210।

84	बया जी,	1000/500,	-	से0 डा0 औ0 187, अख0 जमादि-उल-अव्वल, 44 वाँ रा0 वर्ष।
85	चन्दू जी	1000/1000	-	अख0 शाबान, 45वाँ रा0 वर्ष।
86	राव जोगहट	1000/500	-	अख0 शाबान, 45 वाँ रा0 वर्ष।
87	बिरमू जी,	1000/500	-	अख0 शाबान, 45 वाँ रा0 वर्ष।
88	राव मानसिंह, पुत्र जादोंराय	1000/900 (300x 2-3 अस्पा)	पिता	मा0 उ0 I, पृ0 522, अख0 जमादि-उल-अव्वल, 44वाँ रा0 वर्ष।

89	व्यकट,	1000/-	-	जे एन सरकार, हिस्ट्री आफ औरगजेब, खण्ड V, 208।
90	जगदेव राय, पुत्र दाता जी,	उच्च मनसब,	पिता,	मा0 उ0 I, 522, दिलकुशा 79ब, ईसरदास 138, जे0 एन0 सरकार, खण्ड V, 212।
91	देव जी,	उच्च मनसब,	भाई,	वाकिया पेपर्स जयपुर, 17 जिक्दा, 47वॉं रा0 वर्ष, (डा0 सतीश चन्द्र द्वारा दिया गया सन्दर्भ)।

92	मदन सिंह, पुत्र सम्भाजी,	उच्च मनसब,	-	ईसरदास, 154 ब-155 अ, मा0 आ0 473।
93	खेलू जी, सम्भा जी का सेनापति	उच्च मनसब,	-	ईसरदास 155 अ।
94	रामा जी, सम्भा जी का, सेनापति	उच्च मनसब,	-	ईसरदास 155 अ।
95	जनु जी, सम्भा जी का सेनापति	उच्च मनसब,	-	ईसरदास 155 अ।
96	मल्हार राव,	उच्च मनसब,	-	रकायम-ए-करायम 29 अ।

परिशिष्ट

1 जादोराय दक्खनी -

सिंधखेड के जाधव बिठ्ठो जी का पुत्र लक्खोजी जो जादोराय नाम से सुज्ञात हुआ। निजामशाही राज्य की दक्षिणी सेना के इस सुप्रतिष्ठित सरदार ने जहाँगीर के शासनकाल के 16वें वर्ष (1622 ई0) में दक्षिण में शाहजादा खुर्रम के पास उपस्थित हो शाही सेवा स्वीकार कर ली थी। परन्तु 1630 ई0 में जब वह शाही सेवा छोडकर पुन निजाम की सेवा में उपस्थित हुआ तब दौलताबाद में अपने दो पुत्र और एक पौत्र सहित वह धोखे से मारा गया।

देखें- (हिस्टोरिकल पृ0-47, मा0 उ0 (हि0),1, पृ0 176, देवी शाह0, 1 पृ0-11 से)

2 खिलोजी भोंसला - विठ्ठोजी भोंसला का पुत्र एव मालोजी भोंसला का भाई, शाहजहाँ के शासनकाल के प्रथम वर्ष में निजाम का यह दक्षिणी सरदार महाबत खाँ खानख़ाना के पुत्र खानेजमा की सहायता से शाही मनसबदार बन गया था, परन्तु सन् 1633 ई0 में दौलताबाद के युद्ध के समय शाही सेवा छोडकर वह पु निजाम के साथ जा मिला।

स्रोत देवी0 शाह, 1,पृ0- 17,99, मा0 उ0 (हि0),1,पृ0- 304-305, शिवचरित्र, पृ0- 107,153 से।

3 शाहजी भोंसला-

सतारा राजघराने के पूर्वज बाबाजी राव भोंसला के पुत्र मालोजी भोंसला का ज्येष्ठ पुत्र और सुप्रसिद्ध छात्रपति शिवाजी का पिता। वह निजाम की हिन्दू सेना का सेनानायक था। अपने श्वसुर जाधोंराव के मारे जाने पर उसने निजाम की सेवा छोड दी और आजम खाँ की सहायता से सन् 1630 में उसे पाच हजारी मनसब के शाही मनसबदार के साथ ही जुनेर और सगमनेर की जागीरी भी दी गयी, जो पहले फतेह खा के अधिकार में था। मई,

1632 ई0 में यह जागीरी पुन फतेह खा को दे दी जाने पर नाराज हो गये वह शाही सेवा छोडकर आदिलखा के पास चला गया और तब निरन्तर मुगलों के विरुद्ध सघर्ष करता रहा।

स्रोत - देवी0 शाह1, पृ0-41,42,71,44-95, 106-108,117-118,177-178, हिरन्टारिकल0, पृ0-110, शिवाजी पृ0-31-32 से अवतरित है।

4 मीनाजी भोंसला- शहाजी भोंसला के साथ उसने भी सन् 1630 ई0 में शाही सेवा स्वीकार की थी, सभवत वह विठ्ठोजी भोंसले के पुत्र मकोजी हो।

स्रोत देवी0 शाह0,1,पृ0-41-42, शिवाजी, पृ0-31, हिस्टारिकल0, पृ0-110 से।

5 शभाजी भोंसला-

सतारा राजघराने के पूर्वज शहाजी भोंसला का बडा पुत्र जो अपने पिता के साथ ही सन् 1630 में शाही मनसबदार बना था।

स्रोत देवी0 शाह0,1,पृ0-42, हिस्टारिकल, पृ0-110 में।

6 ताना जी दक्खनी- वह सोमवार, नवम्बर, 1635 ई0 को शाही मनसबदार बना। उसके बारे में और विशेष जानकारी प्राप्त नहीं है।

7 यशवतराय दक्खनी- शाहजहाँ के सिंहासनारुढ होने के समय उसका मनसब 2000/1000 का था। मार्च, 30, 1631 ई0 को उसे अहूदियों की बख्शीगिरी दी गयी थी। साथ ही उसने कई युद्धों में भाग लिया था।

स्रोत देवी0 शाह0,1,पृ0-11,50,96 में।

क्रमानुसार व्यक्तिगत नामावली-लेखक

(दक्खनी हिन्दू अमीर-वर्ग,मनोहर सिंह राणावत, एम0 ए0।

8 ऊदाजी राम दक्खनी - दक्षिणी ब्राह्मण, पहले अहमदनगर राज्य की सेवा में था। देखे- मा0 उ0 (हि0),1,पृ0-81-83 पर।

9 ऊदाजी राम पिता ऊदाजीराम दक्खनी-

ऊदाजी राम का दत्तक पुत्र पूर्वनाम जगजीवन। महावत खाँ द्वारा दिये गये नाम 'ऊदाजी राम' से तदन्तर सुज्ञात- मा0 उ0, (हि0),1,पृ0- 83-84

10 जगदेवराय- भाई जादोंराय दक्खनी-

सिन्धखेड के जादव विठ्ठोजी का पुत्र और जादोंराय प्रथम (लखोजी) का भाई- स्रोत मा0 उ0 (हि0) 1, पृ0-177-178, हिस्टारिकल, पृ0- 47।

11 जादोंराय दक्खनी-

सिंहखेड के जादव विठ्ठोजी के पुत्र जादोंराय के संभावित उत्तराधिकारी पौत्र स्व0 यशवन्तराव का छोटा भाई। पूर्व नाम पतगराव, शाहजहाँ ने उसे जादोंराम की पदवी दी। धरमत के युद्ध में वह औरगजेब की ओर से लडा था। इस दूसरे जादोंराम के पिता के नाम के बारे में कोई प्रामाणिक (पतगराव) उल्लेख नहीं मिलता है।

-स्रोत मा0 उ0, (हि0),1 पृ0-178, आ0 ना0, पृ0-63 पर।

12 जीवाजी - भतीजा मालूजी दक्खनी का-

विठ्ठोजी के पुत्र मालूजी का भतीजा। कम्बू0 (3 पृ0- 479) में भ्रमबश ही जीवाजी को मालूजी का भाई लिखा है। यह 'जीवाजी' मालूजी के किस भाई का पुत्र था इस बारे में निर्णय कर सकने के लिए कोई निश्चित जानकारी नही है। परसूजी भोंसले के ज्येष्ठ पुत्र 'समाजी' को सन् 1652 ई0 में बराबर सूबे का माहुरी परगना दिया गया था। उसके अन्य

दो पुत्रों के नाम जयसिंह जी और सरीफजी थे। स्रोत राजवाडे0, 26, पृ0-2-7।

13 दत्ताजी- पिता बहादुर जी दक्खनी-

सिंदखेड के (जादव) जादोंराय प्रथम (लखोजी) के छोटे लडके बहादुर जी का पुत्र।

स्रोत मा0 उ0 (हि0), 1,पृ0- 178; हिस्टारिकल0, पृ0- 46।

14 धन्नाजी- लगभग 1650 ई0 के बाद नियुक्त कोई निम्न श्रेणी शाही मनसबदार जिसके वश एव स्थान के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुआ है।

15 परसू जी दक्खनी -

विठ्ठोजी भोंसले का पुत्र और मालूजी का छोटा भाई।

स्रोत मा0 उ0 (हि0),1,पृ0- 304-307।

16 पीथूजी- पिता अचला जी दक्खनी-

सिंदखेड के जादव विठ्ठोजी के पुत्र जादोराम (लखोजी) का पोत्र और अचलाजी का लडका। उसे बरार और खानदेश की जागीरी मिली थी; लौहौरी वारिस0, और कम्बू0 ने इसका सही नाम 'पीथूजी' लिखा है। परन्तु इसका सही नाम 'बीठ्ठोजी' था।

स्रोत मा0 उ0 (हि0),1,पृ0-177-178; देवी0 शाह0,1, पृ0-36-62 पर।

17 बहादुर जी दक्खनी- पिता जादोंराय- सिंदखेड के जादव विठ्ठोजी के पुत्र जादोंराय का छोटा लडका। दौलताबाद के युद्ध के समय जादोंराय अपने भाई बेटों के साथ बादशाही सेवा छोडकर निज़ाम से जा मिला था। तदन्तर जादोंराय के मारे जाने पर उसके भाई-पुत्र पौत्रादि दौलताबाद से भागकर जालना के पास जादोंराय के बनवाये किले में जा छिपे और बादशाह से क्षमा प्रार्थना कर अन्य तो शीघ्र ही पुन: शाही मनसबदार बन गये,

परन्तु बहादुर जी लगभग कोई डेढ वर्ष बाद ही पुन शाही मनसबदार बना।

स्रोत मा0 उ0 (हि0), 1, पृ0-178, हिस्टारिकल, पृ0-47, देवी0 शाह 1,पृ0-35, 61-62, 65 पर देखें।

18 भोजराज दक्खनी-

अहमदनगर शासन द्वारा नियुक्त औसा का किलेदार, जो अक्टूबर 1636 में आत्मसमर्पण कर शाही मनसबदार बन गया। यदुनाथ सरकार ने (औरंग0 1,पृ0-39) इसका नाम 'भोजबल' दिया है और इसे राजपूत जाति का लिखा है। किन्तु यह ठीक नही है, क्योंकि भोजवल घोडप का किलेदार था और भोजराज से कोई 4 माह पूर्व 1636 ई0 में ही उसे मनसब 1500 जात/800 सवार का शाही मनसब मिल गया था। नामों में साम्य होने के कारण यदुनाथ सरकार को यह भ्रान्ति हुई है।

स्रोत पा0 ना0, 1-ब,पृ0- 220, देवी0, शाह01, पृ0-189,195, शिवचरित्र, पृ0-180- औसा- (18^0 15 30, 76^0 33^0 पू0) उदगिर के सुज्ञात किले से 43 मील पश्चिम दक्षिण-पश्चिम में।

19 मंगूजी दक्खनी-

मगूजी (माराकोजी) निंबालकर, दक्षिण में में सन् 1636 ई0 की मुगल चढाइयों में उसने सक्रिय भाग लि या था। (शिवचरित्र 178) यह मराकोजी निंबालकर घराने के किस शाखा का था इसकी जानकारी नही है।

20 मगूजी दक्खनी-

उसका उल्लेख पा0 ना0, 2, में भी नहीं है। सम्भवत कोई निम्न श्रेणी का मनसबदार रहा होगा जो सन् 1637 ई0 के लगभग शाही सेवा छोडकर चला गया। उसके बारे में कोई निश्चित जानकारी मिलनी सम्भव नही जान पडती है।

21 मालूजी दक्खनी - भाई खीलू जी-

विठ्ठोजी भोंसल का पुत्र एव खिलोजी और परसू जी का भाई। दक्षिण सेना का सेनानायक पहले निज़ामशाही सेवा में था। शाहजहाँ के काल में शाही मनसबदार बना।

स्रोत मा0 उ0 (हि0), पृ0-304-308 पर।

22 रंमाजी- सन् 1647 के बाद नियुक्त निम्नश्रेणी का मनसबदार सभवत- औरगजेब के समय 1500 जात, 1200 सवार का मनसब का मराठा मनसबदार (आ0 ना0, पृ0-293), रभाजी दक्ख़नी यही है। परन्तु वह कहा का था ? किस कुल का था यह जानकारी नहीं मिलती।

23 रबीराय दक्खनी-

अहमदनगर के निजामशाही सुल्तानों का सुप्रतिष्ठित सरदार नावजी शिंदे 'रबीराय दक्खनी' नाम से मुगल दरबार में सुज्ञात हुआ। नसीरी खा ने उसे मुगल मनसब दिलवाया था। (रविवार, 5 सित0 1630 ई0), शिवचरित्र, पृ0-127 फारसी के अपूर्ण लिपि के कारण ही 'सिंदे' अथवा सिंधिया को 'साढे' अथवा साठिया पढ लिया गया है। पा0 ना0 2, (1637-1647ई0) की ही सूची में उसका नाम है, अन्यत्र कहीं न तो उसका नाम मिलता है और न अन्य कोइ जानकारी ही। शिवचरित्र पृ0- 133, देवी शाह0 2, नामावली पृ0-43।

24 रायबा भाई - रावत दक्खनी-

सभवत शाही मराठा सेनानायक रावतराय धनगर का भाई। कम्बू0 (3,पृ0- 483) में भ्रमबस और असवाधानी के कारण ही 'रायबा' की स्थान पर 'राना' लिखा है।

25 रायबा-भाई जादोराय दक्खनी-

सभवत सिदखेड के जाधव विठ्ठोजी का प्रपौत्र और जादोराय (लक्खोजी) के पौत्र जादोंराय (पतगराव) का भाई। अथवा वह रायबा जादोंराय (लक्खोजी) का पुत्र (भाई नहीं) रामाजी हो सकता है, जो जीजाबाई का सगा भाई था, और जिसके पुत्र खडोजी के वशज ने जाधवों की भुइज शाखा की स्थापना की थी। हिस्टारिकल, पृ0-46।

मा0 उ0 पा0 ना0, में उक्त भाई या पुत्र को मनसब दिये जाने का कोई उल्लेख नही होने के कारण इस बारे में निश्चयात्मक रुप से कुछ भी कह सकना सम्भव नही है।

26 रावतराय धनगर, दक्खनी-

सन् 1630 ई0 और 1633 ई0 की मुगल चढाइयों के समय यह रावतराय सुविख्यात मुगल सेनानायक शाइस्ताखाँ की सेना में था।

पर्णालाख्यान (अध्याय 5, श्लोक, 95, 99, 102) में जिस दीपाजी रावतराय की वीरता का विवरण है सभवत वह इसी रावतराय का पुत्र है। तत्कालीन इतिहास सम्बधी मराठी या अन्य इतिहास ग्रथों में धनगर कुल के रावतराय नामक इस उच्चस्तरीय शाही मनसबदार सबधी कोई जानकारी कहीं भी नहीं मिलती है। शिव चरित्र पृ0-123, 176।

27 हमीरराय-

इसका उल्लेख न तो पा0 ना0 में है और न ही वारिश में और किसी भी प्रकार की कोई जानकारी कहीं भी प्राप्त नही है। मनसब में साम्य होने के कारण एक अनुमान यह होता है कि सभवत वारिस में 'भीमराय' के उल्लेख का ही यह विकृत स्वरुप हो।

28 हमीरराय दक्खनी-

हबीरराय- मराठों में चव्हाण वशीय मोहिते घराने के प्रमुख उपाधि जो सभवत उन्हें निजामशाही सुल्तानों से प्राप्त हुई थी। पा0 ना0 (1,पृ0 297) का यह हमीरराय नही हो

सकता है। जो 'भाटवाडी के युद्ध' में शाहजी की ओर से लडा था। इसी दृणगोजी मोहिते एव हमीरराय की पुत्री 'तुकाबाई' का विवाह शाहजी भोंसले के साथ हुआ था। दौलताबाद के किले के घेरे के समय ही हमीरराय मोहिते मुग़लों से जा मिला और मुगल मनसबदार बन गया। परन्तु उसके बाद अधिक समय तक वह जीवित नही रहा और सन् 1636 में उसकी मृत्यु हो गई। मलिक अम्बर, पृ0- 119, शिवभारत, सर्ग 4, श्लोक-13, शिवचरित्र पृ0-158।

29 हाबाजी (देउरिया अथवा पूरिया)

सही नाम 'बाबाजी भोंसले' शाहजहाँ के शासन काल में दक्षिण में सन् 1630 ई0 के बाद ही मुगल सेना की विभिन्न चढाइयों में उसने समय समय पर सक्रिय भाग लिया था। धरमत के युद्ध में वह औरंगज़ेब के साथ था। शिवचरित पृ0-126, 176, आ0 ना0, पृ0-45, 63, 54।

यह बाबाजी भोंसले उक्त घराने की किस शाखा विशेष का था, इसकी कोई जानकारी प्राप्त नही है।

सम्पादक -

स्रोत डॉ0 मनोहर सिंह राणावत, "शाहजहाँ कालीन हिन्दू मनसबदार" द्वारा उपरोक्त तथ्य अवतरित हैं।

संदर्भ - ग्रंथ

संदर्भ ग्रंथों की सूची

फारसी ग्रंथ

अब्दुल हमीद लाहौरी, बादशाहनामा, सम्पा0 मौलवी कबीरुद्दीन एव मौलवी अब्दुल रहीम, कलकत्ता, 1867-68

अबुल फज़ल, अकबरनामा भाग 3, (अनु0) वेवरिज, दिल्ली, 1973।

अब्दुल कादिर बदायूँनी, मुन्तखब-उत-तवारीख (अनु0) भाग 2, लोवे, पटना, 1973।

अखबारात-ए-दरबारे मुअल्ला, जयपुर सीरीज (सीतामऊ-मालवा)

आकिल खाँ राज़ी, वाक्यात-ए-आलमगीरी, (सम्पा0-जाफर हुसैन, अलीगढ 1946)

इनायतुल्ला खाँ, शाहजहाँनामा (अनु0 बेगले दिल्ली, 1990)

ईश्वरदास नागर, फुतुहात-ए-आलमगीरी (अनु0 तस्नीम अहमद नई दिल्ली, 1978)

खाफी खाँ, मुन्तखब-अल-लुबाब, (प्रकाशक के0 डी0 अहमद कलकत्ता, 1860-74)

जहाँगीर, तुजुक-ए-जहाँगीरी (अनु0 रोगर्स तथा वेवरिज, दिल्ली 1968)

फरिश्ता, तारीख-ए-फरिश्ता (अनु0 वृक्कस भाग 3-4, लन्दन, 1829)

भीम सेन, तारीख-ए-दिलकुशा एव नुस्खा-ए-दिलकुशा (अनु0 सर जदुनाथ सरकार, सम्पा0 बी0 जी0 खोबरेकर, बम्बई 1972)

मुहम्मद काजिम शिराजी, आलमगीरनामा (प्रकाशन, कलकत्ता 1865-73)

मुहम्मद साकी मुस्तइद्दखाँ, मासीर-ए-आलमगीरी (अनु0-सर जदुनाथ सरकार, कलकत्ता 1947)

मोहम्मद वारिस, बादशाहनामा, (पाण्डुलिपि-इ0 वि0 वि0)

मोहम्मद अमीन कज़विनी, बादशाहनामा (पाण्डु0 इ0 वि0 वि0)

मोहम्मद सालेह काम्बू, अमल-ए-सालेह (सम्पादक जी0 यजदानी, कलकत्ता 1923-46)

मुतमदखाँ, इकबालनामा-ए-जहाँगीरी (सम्पादन, नवल किशोर प्रेस, 1870)

मुशी उदयराज इलियास तालियार खाँ, हफ्तअजुमन (अनु0-जगदीश नारायण सरकार, द मिलिट्री डिस्पैचेज् आफ ए सेवेंटीथ सेन्चुरी, इण्डियन जर्नल, कलकत्ता 1969)

शाहनवाज खाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0- वेवरिज, भाग 1, 2, 3, वेनीप्रसाद भाग 1, 2, कलकत्ता 1911-41)

सैय्यद अली तबातबाई, बुरहान-ए-मासीर, हैदराबाद 1936

अंग्रेजी ग्रन्थ

आगा मेंहदी हसन, द राइज एण्ढ फाल आफ मोहम्मद-बिन-तुगलक, दिल्ली 1972,

- तुगलक डाइनेस्टी, कलकत्ता, 1933

अब्दुल अजीज, द मनसबदारी सिस्टम एण्ड द मुगल आर्मी, दिल्ली, 1972

अनीस जहाँ सईद कृत- औरगजेब इन मुन्तखब-अल-लुबाब, बम्बई 1977

बालकृष्ण, शिवाजी द ग्रेट, दिल्ली 1985

बाबा साहब देशपाण्डेय, द डिलिवरेन्स आफ द स्केप आफ शिवाजी द ग्रेट फ्राम आगरा पूना- 1929

बृजकिशोर, ताराबाई एण्ड हर टाइम्स, बम्बई 1963

बेनी प्रसाद, हिस्ट्री आफ जहाँगीर (इ0 वि0 वि0-1922)

बनारसी प्रसाद सक्सेना, हिस्ट्री आफ शाहजहाँ आफ दिल्ली, इलाहाबाद, 1976

डी0 एफ कारका, शिवाजी, बम्बई 1969

डी सी. वर्मा, हिस्ट्री आफ बीजापुर, नई दिल्ली, 1974

इंगलिश फैक्ट्रीज इन इण्डिया, न्यू सीरीज, (सम्पादक, सर चार्ल्स फौसेट, ऑक्सफोर्ड, 1936)

इगलिश रेकार्ड आन शिवाजी, शिवा चरित्र कार्यालय, पूना 1931

फ्रैंको0 वर्नियर, ट्रेवल्स इन मुग़ल इम्पायर (1956-1668 ई0) अनु0, ए कान्सटेबुल, सम्पा0 स्मिथ।

जी0 एस0 सरदेसाई, न्यू हिस्ट्री आफ मराठाज़ भाग 1, बम्बई, 1946

ग्राण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठा भाग 1, जयपुर 1863

एच0 के0 शेरवानी, कुतुबशाही डाईनेस्टी, नई दिल्ली 1974 , महमूदगवाँ (इलाहाबाद), द बहमनीज आफ डेकन, (हैदराबाद)

एच0 के0 शेरवानी तथा पी0 एम0 जोशी, हिस्ट्री आफ मेडिवल डेकन भाग 1 (1295-1724), हैदराबाद 1973

एच0 एन0 सिन्हा, द राइज आफ पेशवाज़ (इलाहाबाद 1970)

एच0 एम0 इलियट एण्ड जॉन डाऊसन, हिस्ट्री आफ इण्डिया- एज टोल्ड बाई ओन हिस्टोरियन्स भाग 6 (लन्दन 1875), भाग 7 (नई दिल्ली, 1964)

हबीब तथा निजामी - ए कम्प्रीहेंसिव हिस्ट्री आफ इण्डिया, भाग 5, नई दिल्ली 1970

एच0 सी0 फान्शावे, शाहजहाँज देलही पास्ट एण्ड प्रजेंट इलस्ट्रेटेड, दिल्ली 1902

इर्फान हवीव, द अग्रेरियन सिस्टम आफ मुग़ल इण्डिया, (1556-1707), बम्बई, 1963।

जादुनाथ सरकार, शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स, (कलकत्ता 1948), हिस्ट्री आफ औरगजेब, भाग 1-5 तक (कलकत्ता, 1912, 16, 25,30), हाऊस आफ शिवाजी, कलकत्ता 1960, स्टडीज इन औरगजेब्स रेन, कलकत्ता 1933, हिस्ट्री आफ जयपुर, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, कलकत्ता 1920

जमशेद एच0 बिलमोरिया, रुक्कात-ए-आलमगीरी अथवा लेटर्स आफ औरंगजेब, दिल्ली 1972

जे0 एफ0 रिचर्डस्, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन इन गोलकुण्डा, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1975

किशोरी शरण लाल, हिस्ट्री आफ खिल्जी, नई दिल्ली, 1980

लइक अहमद, प्राइमिनिस्टरर्स आफ औरगजेब, इलाहाबाद 1976

लेनपुल, औरगजेब, दिल्ली 1987

एम0 जी0 रानाडे, राइज आफ द मराठा पावर, बम्बई 1900 ई0

मुहम्मद नईम, एक्सटर्नल रिलेशन आफ बीजापुर किंगडम, (1489-1686) हैदराबाद, 1974

मुगल आरकाइब्स शाहजहाँ, हैदराबाद

एम0 अतहर अली, द अप्रेटस आफ इम्पायर (सम्पा0) आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली 1985

एम0 अतहर अली, द मुगल नोबिलिटी अण्डर औरंगजेब, एशिया पब्लिकेशन, 1968

मुन्नीलाल, औरंगजेब, नई दिल्ली 1988

एम0 फारुकी, औरगज़ेब एण्ड हिज टाइम्स, बम्बई 1935

एन0 एस0 ताकाखेव भाग 2, दिल्ली 1985

निकोलाओ मनूची, स्टोरिया डो मोगोर अनु0 इर्विन, (इण्डियन टेलेक्स सीरीज, भारत सरकार) लन्दन 1907-8,

पी0 सरन, द प्रोवेन्शियल गर्वनमेंट आफ मुगल्स, (1526-1658), इलाहाबाद 1941

राजकुमार पॉल, आर्मीज, आफ द ग्रेट मुगल्स, नई दिल्ली 1978

रामप्रसाद खोसला, मुगल किंगशिप एण्ड नोबिलिटी, दिल्ली- 1976

आर0 पी0 पटवर्द्धन एवं एच0 जी0 राविल्सन, (भूमिका के साथ) पी0 एम0 जोशी, ए0 आर0 कुलकर्णी, सोर्स बुक आफ मराठा हिस्ट्री, कलकत्ता 1928-78

राधेश्याम, द किंगडम आफ अहमदनगर, दिल्ली-1966,

लाइफ एण्ड टाइम्स आफ मलिक अम्बर, दिल्ली 1967,

द किंगडम आफ खानदेश, दिल्ली 1981

सुरेन्द्र नाथ सेन, शिवा छत्रपति, कलकत्ता 1920, मिलिट्री सिस्टम्स् आफ द मराठाज़, कलकत्ता 1928

एस0 आर0 शर्मा, द रिलिजस पॉलिसी आफ द मुगल इम्परर्स, आक्सफोर्ड 1940

शालिनी वी0 पाटिल, महारानी ताराबाई आफ कोल्हापुर (1672-1761), नई दिल्ली

1987

विलियन इर्विन, द आर्मी आफ द इण्डियन मुगल्स, लन्दन, 1903

वोल्जले हेग, द कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग 3, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, लदन 1928

डब्लू0 एच0 मोरलैण्ड, इण्डिया एट द डेथ आफ अकबर, लन्दन 1920, अग्रेरियन सिस्टम्स आफ मुस्लिम्स इण्डिया, कैम्ब्रिज 1929, अकबर टू औरगजेब, लन्दन, 1923

यूसुफ हुसैन कृत - सेलेक्टेड डॉक्यूमेंट्स् आफ शाहजहाँन रेन, दफ्तर-ए-दीवानी, हैदराबाद, 1950

यूसुफ हुसैन कृत - सेलेक्टेड डॉक्यूमेंट्स आफ औरगजेब्स् रेन, हैदराबाद, 1959

यूसुफ हुसैन कृत - सेलेक्टेड वाकया आफ डेकन (1660-71) हैदराबाद, 1953

हिन्दी ग्रंथ

गोविन्द सखाराम सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास भाग 1, (1600-1707), आगरा, 1981

गाण्ट डफ, हिस्ट्री आफ द मराठाज् भाग 1,2,3 (अनु0 कमलाकर तिवारी, सम्पूर्ण तीन भाग एक जिल्द में)- मराठों का इतिहास, इलाहाबाद, 1965

जादुनाथ सरकार, हाऊस आफ शिवाजी (अनु0) विजय नारायण चौबे, शिवाजी का राजवश, आगरा, 1973

निर्मल चन्द्र राय, महाराजा जसवन्त सिंह का जीवन व समय, जयपुर, 1973

बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, जयपुर, 1974

ब्रजरतनदास, जहाँगीरनामा (अनु0),जहाँगीर का आत्मचरित्र।

मनोहर सिंह राणावत, शाहजहाँ के हिन्दू मनसबदार, (सीतामऊ-मालवा, प्रीत)

महादेव गोविन्द रानाडे, मराठा शक्ति का उदय, दिल्ली 1984

मुशी देवी प्रसाद, शाहजहाँनामा, जयपुर प्रति-सीतामऊ (मालवा)

मुशी देवी प्रसाद,शाहजहाँनामा, सम्पादक, मनोहर सिंह राणावत, रघुबीर सिंह, शाहजहाँनामा, दिल्ली, 1975

एम0 अतहर अली, औरगजेब कालीन मुगल अमीर-वर्ग, अनु0 राधेश्याम, दिल्ली, 1977

मुशी देवी प्रसाद, जहागीरनामा (हस्तलिखित) डा0 रघुबीर सिंह (सीतामऊ-मालवा)

शाहनवाजखाँ, मासीर-उल-उमरा (अनु0) व्रजरतनदास-भाग 1-5 तक (प्रका0 काशी नागरी प्रचारिणी सभा सवत् 1988 (1931 ई0) क्रमश

श्यामलदास, वीरविनोद, (उदयपुर)

संस्कृत ग्रंथ

केशव पुरोहित, राजारामचरितम्

परमानन्द, शिवा भारत (अनु0) राविल्सन, ए सोर्स बुक आफ मराठा हिस्ट्री।

मराठी ग्रंथ

कृष्णा जी अनन्त जी सभासद, सभासद बखर।

डी0 पी0 आप्टे एवं एस0 एन0 दिवेकर, (सम्पा0 शिवा-चरित-प्रादीप।

पाण्डुरग केशव शिरालकर, शिवचरित्र निबन्धावली।

बी0 पी0 मोदक, कोल्हापुरच्या अर्वाचीन इतिहास, मल्हारराव चिटनिस, चिटनिस बखर।

(इत्यादि)

अप्रकाशित शोधग्रंथ

डॉ० चन्द्रभूषण त्रिपाठी, मिर्जा राजा जयसिंह तथा उनका जीवनकाल (इ० वि० वि० 1953)

डॉ० नूपुर सिन्हा, लाइफ एण्ड टाइम्स आफ शाइस्ताखाँ (इ० वि० वि०)

शोध पत्रिकाएँ, जर्नलस्

जदुनाथ सरकार, 91 कालमी बाखर (मार्डन रिब्यू, 1907)

-सीज आफ सतारा बाई औरंगजेब (इस्लामिक कल्चर 1922)

एम० अतहर अली, द रिलिजस इशू इन द वार आफ सक्सेशन (1658-59) (सेलेक्टेड आर्टिकल्स्, 1960 ई०)

प्रो० राधेश्याम, द रोल आफ मराठाज् इन द निजामशाही पॉलिटिक्स, द जर्नल आफ हिस्टॉरिकल क्वाटरली, (रॉची)

डॉ० श्रीराम शर्मा, मराठा मनसबदार अण्डर औरगजेब, (अप्रकाशित) मराठा हिस्ट्री सेमिनार (पूना)